॥ श्री ॥

प्रश्नोत्तरपुष्पमाला.

श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वर शिष्य पंडित
श्रीलक्ष्मीविजयजी, तच्छिष्य मुनिराज
श्रीहंसविजयजीनिरचित, २०९
प्रश्नोत्तरसंग्रह

अनेक भव्य जीवोना हितार्थे
छपावी प्रसिद्ध करनार
श्रीजैन आत्मानंद सभा,
भावनगर

मुंबई—निर्णयसागर प्रेस

वीर संवत् २४३७ आत्म संवत् १६ विक्रम संवत् १९६७

Printed by B. R. Ghanekar, at the Nirnaya-sagar Press,
23, Kolbhat Lane, Bombay, and Published by
Vallabhdas Tribhuvandas for Shri
Jain Atmanand Sabha,
BHAVNAGAR.

अर्पणपत्रिका

स्वर्गवासी शेठ [illegible] कपुरचद [illegible]

आप व्यावहारिक तेमज [illegible] उच्च प्रवृत्तिवाळा हता आपनु हृदय भद्रिक, शात, दयाळु, परोपकारी अने साधर्मी बंधुओने सहाय करवानी भावनाथी वासित हतु जीवदया, ज्ञानोद्धार अने एवा अनेक कार्योमा, मळेली लक्ष्मीनो सद्व्यय करी आपना उत्तम जीवनने उज्ज्वल कर्यु हतु एवा आपना परलोकवासी सद्गुणालकृत आत्माने भावमय शाति आपनारो, अने भव्यात्माने आनद आपनारो आ प्रश्नोत्तरपुष्पमाला ग्रथ आपना स्मरणीय हृदयमा आरोपित करी, तेनी प्रेरणा करनार आपना वडिल प्रिय पुत्र फकीरभाइना पुत्रकर्तव्यने अभिनदन आपी अमे अति आनदित थइए छीए

ली०

श्रीजैन आत्मानंद सभा,

भावनगर.

प्रस्तावना.



निरंतर परोपकारमांज परायण एवा मुनिमहाराज के जेमणे पोतानी जींदगी अन्य जीवोना हितार्थे गाळवानोज निरधार करेलो छे तेओ पोताने मळता अवकाशनो उपयोग एवा सुकार्योमां करे छे के जेथी स्वपर हित थाय छे बीजां बधा कार्यो करतां ज्ञानाभ्यास करीने तेनो अन्य भव्य जीवोने लाभ आपवो ए कार्य एटलुं बधुं लाभकारक छे के तेना लाभनी श्रेणि दीर्घ काळ पर्यंत चालती होवाथी तेनुं प्रमाण करी शकातुं नथी आवा अपरिमित लाभने माटेज पूर्वपुरुषो अनेक ग्रंथो रची गया छे के जेनो लाभ अत्यारे चतुर्विध संघ पोतपोताना क्षयोपशमना प्रमाणमां ले छे अवसर्पिणी काळना प्रभावथी बुद्धिनी मंदता थवाने लीधे पूर्वाचार्यप्रणीत अनेक शास्त्रो अत्यारे वांची के समजी शकाता नथी, एवा कुघट समयमां दीपकनी जेम अल्प बुद्धिमान जीवो पण लाभ मेळवी शके तेवा विचारथी श्रीमद्विजयानंद सूरीश्वर प्रसिद्ध-नाम मुनिराज श्रीआत्मारामजी महाराजना शिष्य पंडित श्रीलक्ष्मीविजयजीना शिष्य मुनिराज श्रीहं-सविजयजीए कोड कोड सुबोध श्रावकनी पृच्छाथी तेमज स्वमतिकल्पनाथी १०४ प्रश्नो उत्पन्न करीने

तेना उत्तरो शास्त्राधार साथे लखी काढी तेने एक लघु ग्रंथनुं रूप आप्युं छे.

आ ग्रंथ वाल जीवोनेज नहि, पण सामान्य बुद्धिमान जीवोने पण घणो उपकारक छे, तेनुं खास कारण ए छे के दरेक उत्तर शास्त्राधारपूर्वक आपवामां आव्या छे. एकंदर जूदां जूदां ७० शास्त्रोना आधार आपवामां आव्या छे. जेनी अंदर सूत्र, टीका, चूर्णि, भाष्य तथा अनेक ग्रंथोना आधारो छे. ते दरेकनां नामोनुं लीस्ट आ साथे सामेल राखवामां आव्युं छे. तेमां कुवलयमाला, लोकप्रकाश, सेनप्रश्न तथा हीरप्रश्नना आधारो घणा प्रश्नोना संबंधमां आपवामां आव्या छे.

आ ग्रंथनी अंदर आवेला २०५ प्रश्नोनी अनुक्रमणिका आ साथे आपवामां आवेली छे, जे वांचवाथी आ ग्रंथनुं उपयोगीपणुं स्वतः सिद्ध थइ शके तेम छे, जेथी ते संबंधी अहीं विशेष लखवानी आवश्यकता नथी. तोपण खास लक्ष खेंचवा लायक बाबतो नीचे प्रमाणे छे.

प्रारंभमां पंचपरमेष्ठीना गुणो संबंधी प्रश्नो छे. त्यारबाद श्रावकना सामायिकादि करणीनां उपकरणोनी सिद्धता करी छे. ४८ मा प्रश्नना उत्तरमां स्त्रीकेलवणीने खास पुष्टि आपी छे. ५९ ने ६० मा प्रश्नमां श्राद्ध करवानो निषेध केटलीक रमुजी

कथाओ तथा सवालो लखीने दृढ कर्यो छे ६५ मा प्रश्नना उत्तरमा पक्षीओनी अरजी आपेली छे ते खास वाचवा लायक छे तेमा तथा त्यार पछीना त्रण प्रश्नोना उत्तरोमा खास शिकारनो निषेध प्रमाणपूर्वक सिद्ध कर्यो छे ए भाग साद्यत वाचवा लायक छे प्रश्न १२७ तथा १४२ ना उत्तरोवडे उपधान तथा योगनी आवश्यकता सिद्ध करी छे १६०-१६९ने १७१ आ त्रण प्रश्नोना उत्तरमा कच्छ मोटी खाखर, भुज तथा भद्रेश्वरना जिनालयमाहेना शिलालेखोना भाषांतर तथा सारांश घणा विस्तारथी आपेला छे मोटी खाखरना शिलालेखनी तो आखी नकल पण आपी छे न्यायना विषयने पण छोडी दीधो नथी केमके १९८ तथा १९९ प्रश्नोत्तरमा शब्द आकाशनो गुण नथी ए हकीकत तथा गुरुलघु अने अगुरुलघु स्वरूप बहु सारी रीते बतावी आप्युं छे, अने तेने माटे श्रीमलयगिरिजी महाराजनी करेली आवश्यकवृत्तिनी पाठ साथे साखी आपी छे प्रथम ढुंढक तरीके ओळखाता अने हालमा स्थानकवासी अथवा साधुमार्गी तरीके ओळखाताने डरता जनभाइओने पण भूली गया नथी तेने पण वे चार प्रश्नोमा याद कर्या छे २९ मा प्रश्नना उत्तरमा पंजाबमा नाभानी सरकारे करेलो फेंसलो अक्षरश

आप्यो छे, अने प्रश्न १११–११२ ना उत्तरमां तेने समजाववा माटेज असझायनुं स्वरूप प्रगट कर्युं छे. मृत्यु पाछल करवामां आवता जमणवारनी कनिष्ठता शास्त्राधार साथे प्रश्न ९९ ना उत्तरमां वतावी आपी छे. मुनिराजने विहार करवा संबंधी केटलोएक विवेक प्रश्न १७७ थी १९२ सुधीमां प्रदर्शित कर्यो छे. आ सिवाय पण केटलीक बीना खास ध्यान खेंचवा लायक छे. परंतु ते दरेकनुं वर्णन अहीं करवा जतां प्रस्तावना वधी पडे छे, तेथी तेने माटे अनुक्रमणिकाज साद्यंत वांची जवानी भलामण करवी योग्य लागे छे.

आ ग्रंथ वहोले भागे कच्छ देशना विहार प्रसंगेज लखायो छे, पूर्ण पण त्यां करवामां आव्यो छे, तेथीज आ ग्रंथमां कच्छ देशमां आवेला उपयोगी शिलालेखोनो समावेश थइ शक्यो छे.

ग्रंथना प्रारंभमां मूकेला त्रण श्लोको पैकी त्रीजो श्लोक पद्यछंद छे तेना पहेला पदमां 'प्रश्नोत्तर मणीवकमाला' कहेवा वडे ग्रंथनुं नाम सूचव्युं छे. मणीवक शब्द पुष्पवाची होवाथी 'प्रश्नोत्तर पुष्पमाला' एवो शब्दार्थ नीकले छे.

विवेकी पाठक गणो! आ अपूर्व ग्रंथनी आ बीजी आवृत्ति छे. आ ग्रंथ जैनसमाजमां एटलो बधो उपयोगी थइ पड्यो छे, अने तेनी उपयो-

गिता अने महत्वता एटली वधी जणायेली छे के तेनो वहोला प्रमाणमा लाभ लेवाता, थोडी मुदतमा ते खपी जता अने वारवार तेनी मागणी थता मुनिराज श्रीहंसविजयजी महाराज अने पन्यासजी सपतविजयजी महाराजनी आज्ञानुसार आ सभा तरफथी आ तेनी बीजी आवृत्ति प्रकट करवामा आवी छे प्रथम आवृत्ति श्रीजैन धर्म प्रसारक सभा तरफथी प्रकट करवामा आवी हती वधारे सरलताथी लाभ जैनबधुओ ले, तेवा खास हेतुथी उक्त महात्माओनी आज्ञा मुजब प्रथमनी आवृति करता आ बीजी आवृत्तिना कद टाईप विगेरेमा घटतो फेरफार करेलो छे, अने प्रथममा २०१ प्रश्नोत्तर हता तेने बदले आमा २०५ प्रश्नोत्तरनो समावेश करवामा आवेलो छे

आवा उपयोगी ग्रथ अमारी सभा तरफथी बहार पडे तेमा अमोने मोटु मान छे, जेथी आ अत्युत्तम ग्रथ प्रगट करवानी आज्ञा आपनार उक्त मुनिमहाराजाओना अमे सपूर्ण आभारी छीए

सदरहु ग्रथना उत्तजेनार्थे रु० ५१ शा रायचद फुलचजी कालीयावाडीवाला, रु० ५१ शा भनु पीताम्बरदास नवसारीवाला तेमज रु० ५० शा लल्लुभाइ जीवणजी नवसारीवाला तरफथी मली

रु० १५२ अमोने मल्या छे, तेथी तेओए करेली मदद माटे अमो उपकार मानीए छीए.

आ ग्रंथ निर्णयसागर प्रेसमां छपावेलो होवाथी तेमज तेना प्रुफ विगेरे बहु संभालपूर्वक तपासेल होवाथी तेमां भूल रहेवानो संभव बहु ओछो छे. छतां दृष्टिदोषादि कारणथी रही गयेल थोडीक भूलोनुं शुद्धिपत्र साथे आपेलुं छे, ते प्रमाणे सुधारीने वांचवा भलामण करीए छीए.

ग्रंथना उपयोगिपणा विगेरेना संबंधमां वधारे भलामण करवा करतां आ ग्रंथज साद्यंत वांची जवानी विनंति करीए छीए. जेथी लेखक, प्रकट करनार अने वांचनार बंधुओनो प्रयास फलीभूत थशे, एम अमोने संपूर्ण आशा छे.

आत्मानंद भुवन
आत्म संवत् १६
अशाड वदी ७
बुधवार.

श्रीजैन आत्मानंद सभा,
भावनगर.

अनुक्रमणिका.



आ ग्रंथमां जे जे अन्य ग्रंथो अने सूत्रादिनी साक्षीओ आपेली छे तेनां नाम.

प्रवचन सारोध्धार.	उत्तराध्ययननी कमल-संयमी टीका
निगम प्रवचन	तीर्थ कल्प
योगशास्त्र	कुरियरय समीर वृत्ति
कुवलयमाला	पर्वतिथि विचार
आचार दिनकर	सौभाग्य पंचमी कथा
अनुयोगद्वार चूर्णि	श्रीकल्प सूत्र
विवाह चूलिया	जीवविचार वृत्ति (क्षमा कल्याण)
व्यवहार चूर्णि	जीवविचार बृहद्वृत्ति (रत्नाकर पाठक)
मुहपत्ति प्रकरण	हैमलघुप्रक्रियावृत्ति
अनुयोगद्वारवृत्ति	अनुयोगद्वार सूत्र
दशवैकालिक सूत्र	श्राद्धविधि
अंगचूलिया	दशवैकालिक बृहद्वृत्ति.
आचारांग सूत्र	श्राद्धगुण विवरण
आवश्यक सूत्र.	मुद्रित कुमुदचंद्र नाटक.
ओघनिर्युक्ति	श्राद्धनी आवश्यकता (नानी बुक)
श्रीउत्तराध्ययन सूत्र	हिंसादि अष्टक
उत्तराध्ययन दीपिका	
पद्मपुराण	
वंदिता सूत्रनी अर्थदीपिका टीका	

तिलकमंजरीनीप्रस्तावना
दशवैकालिक चूर्णि.
लोकप्रकाश.
उपदेशचिंतामणि.
श्रीपालचरित्र(नयविमल)
मेघमाला.
समवसरणप्रकरण.
सिंदूर प्रकर.
सेनप्रश्न.
हीरसौभाग्य महाकाव्य.
भगवती सूत्र वृत्ति.
सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र.
सूर्यप्रज्ञप्ति टीका.
स्थानांग सूत्र टीका.
स्थानांग सूत्र.
लोकतत्त्व निर्णय.
जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति.
हीरप्रश्न.

मध्याह्न व्याख्या.
शुद्धोपयोग विचार.
प्रमाणमीमांसा.
संवेगद्रुमकंदली.
धर्मलाभाष्टक.
वृहद् भाष्य.
कथाकोष.
निशीथ भाष्य.
वृंदारू वृत्ति.
अध्यात्म कल्पद्रुम.
महाभारत.
तत्त्वतरंगिणी.
व्यवहारसूत्रवृत्ति.
गच्छाचार सूत्र.
गच्छाचार टीका.
आवश्यकवृत्ति (मलय-
गिरि.)
श्राद्धविधि विनिश्चय.

॥ श्री ॥

प्रश्नोत्तरपुष्पमाला.

आद्यांतिमौ जिनौ नत्वा, जितमारौ रणांगणे ॥ तया धर्मधुराधारौ, गणेशौ चादिमांतिमौ ॥ १ ॥

विजयानंदसूरींद्रं, देवसूरिसमप्रनम् ॥ श्रीलक्ष्मीविजयाभिख्यं, तथैव गुरुपुंगवम् ॥ २ ॥

प्रश्नोत्तरमणीवक माला, मालामिव श्रियाम् ॥ कुर्वे हसाभिधानोद्द, स्वान्योपकृतिहेतवे ॥ ३ ॥

प्रश्न १ श्रीदेवाधिदेवना बार गुण[1] दर्शावो.

उत्तर अशोकवृक्ष सुरपुष्पवृष्टि-
दिव्यध्वनिश्चामरमासन च ॥

---

१ पद्यच्छंद छे

भामंडलं दुंदुभिरातपत्रं
सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ १ ॥

ए काव्यमां प्रदर्शित आठ महाप्रातिहार्य अने चार मूल अतिशय मळी श्रीअरिहंत भगवंतना बार गुण थाय छे ते आ प्रमाणे.

१ अशोकवृक्ष.
२ देवोनी पुष्पवृष्टि.
३ दिव्य ध्वनि.
४ चामर.
५ सिंहासन.
६ भामंडल.
७ देवदुंदुभि.
८ त्रण छत्र.
९ अपायापगमातिशय.
१० ज्ञानातिशय.
११ पूजातिशय.
१२ वचनातिशय.

प्रश्न. २ उपर दर्शावेला अष्ट महाप्रातिहार्यने सत्प्रातिहार्य कहेवानुं शुं प्रयोजन छे ?

उत्तर. श्रीतीर्थंकर भगवान्ने केव-

---

१ परिहार देवोनां कृत्यने प्रातिहार्य कहेवामां आवे छे.

ळज्ञान थया वाद कोई जग्याए समवसरण न थाय, तोपण पूर्वोक्त आठ तो देशनासमये साथे सतत विद्यमान रहे ठे वास्ते तेउं सत्प्रातिहार्य तरीके उंलखाय ठे

प्रश्न ३ श्रीसिद्ध परमात्माना आठ गुणनु वर्णन करो

उत्तर. १ केवलज्ञान. ५अक्षय स्थिति
२ केवलदर्शन ६ अरूपी
३ अव्यावाध सुख ७ अगुरुलघु
४ क्षायिक सम्यक्त्व यथाख्यात चारित्र ८ अनंत वल.

ज्ञानावर्णादि अष्ट कर्मनो क्षय थवाथी अनुक्रमे उक्त आठ गुणो सिद्ध परमात्मामां प्रगट थाय ठे

प्रश्न ४ श्रीआचार्य महाराजना ठत्रीश गुणनु दिग्दर्शन करावो

उत्तर पचिंदिअ सूत्रपाठमां प्रसिद्ध ठे ते श्रीआचार्य महाराजना ठत्रीश गुण जाणवा वीजा पण अनेक प्रकारे ठत्रीश

गुणो निवेदन कर्या छे. ते मांहेलो एक प्रकार दर्शावीए छीए.

॥ यदुक्तं प्रवचनसारोद्धारे ॥

अठविहा गणिसंपइ, चउग्गुणा नवरि हुंति बत्तिसं ॥ विणओअ चउभेओ, छत्तीसगुणा इमे गुरुणो॥१॥

आ गाथानो सारांश एवो छे के अष्टविधगणि संपदाना चार चार भेद करतां बत्रीश थाय छे. तेनी साथे विनयना चार भेद मेलवतां गुरुना छत्रीश (३६) गुण थाय छे. ते अष्ट गणि संपदा अने चार प्रकारना विनयनां नाम आ प्रकारे छे.

१ आचारसंपत्.	४	७ प्रयोगसंपत्.	४
२ श्रुतसंपत्.	४	८ संग्रहपरिज्ञासंपत्.	४
३ शरीरसंपत्.	४		३२
४ वचनसंपत्.	४	१ आचारविनय.	
५ वाचनासंपत्.	४	२ श्रुतविनय.	
६ मतिसंपत्.	४	३ विक्षेपणविनय.	

४ दोपपरिघातविनय ३६

ए छत्रीश गुणनो विस्तार प्रवचनसारोद्धारथी जाणवो

प्रश्न ५ श्रीउपाध्यायजी महाराजना पच्चीश गुण कया ?

उत्तर. अगीयार अंग तथा वार उपागनु पठन पाठन करे अने चरणसित्तरी १ तथा करणसित्तरी १ पाले ए सर्व मली पच्चीश गुण थाय छे

प्रश्न ६ अगीयार अग तथा वार उपागनां नाम कहो

उत्तर क्रमथी अगीयार अग तथा वार उपांगना नाम नीचे मुजव जाणवा

॥ अगीयार अग यथा ॥	वार उपाग यथा ॥
१ आचाराग सूत्र	१ उववाइ सूत्र
३ सूयगडांग सूत्र	२ रायप्पसेणी सूत्र
३ ठाणाग सूत्र	३ जीवाभिगम सूत्र.
४ समवायाग सूत्र.	४ पन्नवणा सूत्र.

५ विवाहपन्नत्ति अपर नाम भगवती सूत्र.	५ जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र.
६ *ज्ञाताधर्मकथा सूत्र.	६ चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र. ७ सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र. निरयावलिया सुयखंध.
७ उपासकदशा सूत्र.	८ कप्पिया.
८ अंतगडदशा सूत्र.	९ कप्पवडंसिया.
९ अणुत्तरोववाइ सूत्र.	१० पुप्फिया.
१० प्रश्नव्याकरण सूत्र.	११ पुप्फचूलिया.
११ विपाक सूत्र.	१२ वन्हिदशा.

प्रश्न. ७ चरणसित्तरीना ७० भेद कया ?

उत्तर. ५ पंच महाव्रत.

१० दश प्रकारनो श्रमणधर्म.

१७ सत्तर प्रकारे संयम.

१० दश प्रकारे वैयावृत्य.

९ नव प्रकारे ब्रह्मचर्यगुप्ति.

---

* छण अंगनां बे उपांग छे.

हण. ३ *गुप्ति. ४ चार प्रकारना अभि-
ग्रह एटले नियम विशेष.

उक्त ७० ज्ञेदने करणसित्तरी कहे-
वामां आवे छे.

॥ यदुक्तम् ॥

पिंडविसोही ४ समिई ५, ज्ञावन
१२ पडिमा १२ य इंदिअनिरोहो
५ ॥ पडिलेहण २५ गुत्तीउं, अभि-
ग्गहो ४ चेव करणं तु ॥ १ ॥

प्रश्न. ए मुनिराजना २७ गुणो कया ?

उत्तर. ६ पंच महाव्रत अने छठुं रा-
त्रिज्ञोजन विरमण ए छ व्रतनुं पालन करवुं.
६ छ कायना जीवोनी रक्षा करवी.
६ पांच इंद्रियो अने लोज्ञनो निग्रह करवो.
१ क्षमा करवी.
१ ज्ञावविशुद्धि करवी.

---

* पच्चीश उपगरणनी पडिलेहण श्रीप्रवचन-
सारोद्धारमां कहेली छे.

१ पडिलेहणादि करवामां विशुद्धि राखवी
१ संयमयोग एटले सयमव्यापार युक्त थवुं
३ अकल्याणमां वर्त्ततां मन, वचन, कायानु राकवु
१ शीत आदिकनी पीकार्जने सहन करवी.
१ मरणांत उपसर्ग सहन करवा तत्पर रहेवु
ए साधु महाराजना सत्तावीश गुण जाणवा.

॥ यदुक्तम् ॥

ठव्वय ठकायरक्का, पचिंदियलोहनिग्गहो खंती ॥ भावविसुद्धी पम्लिेहणाइ करणे विसुद्धीय ॥ १ ॥ संजमजोएजुत्तय, अकुसलमणवयणकायसरोहो ॥ सीयाइपीडसहणं, मरणउवसग्गसहणं च ॥

प्रश्न १० चारित्रना कोइ अधिष्टायक देवदेवी ठे के केम ?

उत्तर. ब्राह्मी, सुंदरी, विजया, जयंती अने योगकला ए पांच देवीउं छे.

॥ यडुक्तं श्रीनिगमप्रवचने नयसारोद्धारे श्रीमच्छाशनीनगुणानंदचूडामणौ चतुर्थाध्याये ॥

ब्राह्मीसुंदरीविजयाजयंतीयोगकलेति नाम्न्यो विशुद्धपंचमहाव्रताधिष्ठात्र्य इति ॥

प्रश्न. ११ जीवन्मुक्त कोण ?

उत्तर. जीवन्मुक्त केवली नगवान्.

यडुक्तं निगमप्रवचने तृतीयाध्याये ॥

जीवन्मुक्ताः केवलिनो विदेहमुक्ताः सिद्धाश्चेति ॥

प्रश्न. १२ केटलाएक लोको एम कहे छे के व्याघ्रादिक हिंसक प्राणीउंने मारवा जोइए, कारणके एक हिंसक प्राणीने मारवाथी घणा जीवोनी रक्षा थाय छे ते योग्य छे के केम ?

उत्तर- पूर्वोक्त कहेवु अयुक्त छे, कारणके प्राणीमात्रथी कांइने काइ हिंसा तो थइ जाय छे, तेथी ते सर्वने मारवा जोइशे अने तेम करवा जतां तो लाजने वदले मूल हानि थवानी

॥ यदुक्तम् श्रीयोगशास्त्रात-
रश्लोकसंग्रहे ॥

केचिद् वदति हतव्याः, प्राणिनः प्राणघातिन ॥हिंस्रस्यैकस्य घाते स्याद्, रक्षणं भूयसा किल ॥१॥ तदयुक्तमशेषाणां, हिंस्रत्वात्प्राणिनामिह ॥ हंतव्यता स्यात्तल्लाजमिछोर्मूलक्षति· स्फुटम् ॥ २ ॥

प्रश्न १३ कोइ एम कहे छे के दुःखी जीवोने मारी नाखवा जोइए, कारणके तेमने मारवाथी तेमना दुःखनो अवश्य विनाश थाय छे· आ कथन दुरस्त छे के नहीं ?

उत्तर. ए कथन डुरस्त नथी, कारणके एम करवाथी तो बाल, वृद्ध अने ग्लान प्रमुख तमाम डुःखीने मारवानो प्रसंग आवे, अने ते अल्प डुःखी जीवो मरीने नरकमां जाय तो तेमने त्यां अनंतुं डुःख सहन करवुं पडे.

॥ यदुक्तम् श्रीयोगशास्त्रे ॥

संसारमोचकास्त्वाहुर्डुःखिनां वध इष्यते ॥ विनाशे डुःखिनां डुःखविनाशो जायते किल ॥ १ ॥ तदप्यसांप्रतं ते हि, हता नरकगामिनः ॥ अनंतेषु नियोज्यंते, डुःखेषु स्वल्पडुःखकाः ॥ २ ॥

प्रश्न. १४ सम्यग्दृष्टि जीव तिर्यंचनुं आयुष्य बांधे के नहीं ?

उत्तर. सम्यग्दृष्टि जीव तिर्यग् आयु अनुभवे (जोगवे) पण बांधे नहीं, कार-

एके प्रथम आयुष्य बधायु होय तो ते सम्यक्त्वी जीव तिर्यग्गतिमां पण जाय छे.

यदुक्तम् श्रीपरमानंदसूरिशिष्य श्रीरत्नप्रभसूरिविरचित कुवलयमालायाम् ॥

सम्यग्दृष्टिर्जीवस्तिर्यगायुरनुभवति न पुनर्बध्नाति ॥ यतः ॥

भवेद्वैमानिकोवश्यं, जंतुः सम्यक्त्ववासित ॥ यदि नोद्धातसम्यक्त्वो, बद्धायुर्न पुराथवा ॥ १ ॥

प्रश्न. १५ पंच महाव्रतधारी यतिजीने नाणुं अपाय के नहीं ?

उत्तर यतिर्ओने भोजन, वस्त्र, पात्र, औषध अने पुस्तक आपी शकाय पण द्रव्य आपी शकाय नहीं, कारणके ते द्रव्य लेनार ने देनार बने नरकगामी कहेला छे

॥ यदुक्तं श्रीआचारदिनकरे ॥

यतिभ्यो भोजनं वस्त्रं, पात्रमौष-

धपुस्तके ॥ दातव्यं द्रव्यदानेन, तौ द्वौ नरकगामिनौ ॥ १ ॥

प्रश्न. १६ देव गुरुने वंदन कर्या विना पाणी पीवुं कल्पे के केम ?

उत्तर. ज्यांसुधी विधिपूर्वक चैत्यवंदन अने साधुवंदन न कर्युं होय त्यांसुधी प्रथम प्रहरे पाणी पण पीवुं कल्पतुं नथी.

॥ यदुक्तमाचारदिनकरे ॥

तत्थ तुमे पुव्वाद्दे, पाणंपि न चेव ताव पायव्वं॥ नो जाव चेइयाइं, साहू-वि य वंदियाविहिणो ॥ १ ॥

प्रश्न १७. कोइने सामायिक तथा प्रत्याख्यान लेवानो पाठ न आवडतो होय अने कोइ उच्चरावनार पण न होय तो सामायिक तथा पच्चक्खाण करवुं के नहीं ?

उत्तर. कदापि कोइने बुद्धिनी मंदताने लीधे सामायिक पच्चक्खाण मुख-

पाठे न आवडतुं होय, तो तेणे पण मानसिक अभिग्रहथी सामायिक पच्चख्खाण करवुं परंतु एटलु विशेष छे के दंडक उच्चारपूर्वक अंगिकार करेलुं सामायिक पच्चख्खाणना आगार उच्चारणना सबबे अतिचारना आगमनथी भग्न थतु नथी, पण मनथी आदरेलु तो अतिचारथी भग्न थाय छे तेने माटे प्रायश्चित्त ग्रहण करवु.

॥ यदुक्तं श्रीआचारदिनकरे ॥

कदाचित्कस्यचित्प्रज्ञामंदेन सामायिकप्रत्याख्यानदंडक मुखपाठे नायाति तेन चित्ताभिग्रहेनैव सामायिकप्रत्याख्याने करणीये परं चायं विशेष यथा दंडकोच्चारणेनादृतं सामायिकं प्रत्याख्यानं च अतिचारागमनैरभग्नं भवति तन्मध्याकारोच्चारण-

वशात् मनसाद्दते तु दंडकोच्चारणव-
र्ज्जिते सामायिकप्रत्याख्याने भग्ने
भवतः तद्भग्ने प्रायश्चित्तविधिप्रक्रमोक्तं
प्रायश्चित्तमाचरणीयम् ॥

प्रश्न. १७ श्रावकने सामायिकमां तथा पोसहमां स्थापनाचार्य अने चरवलो मुहपत्ति राखवानुं कोइ सिद्धांतमां कह्युं छे के केम ?

उत्तर. श्रीअनुयोगद्वार सूत्रनी चूर्णिमां सामायिक करनारने चार उपगरण राखवानुं फरमान छे तेमां कह्युं छे.

॥ तत्पाठो यथा ॥

सामाइयकडस्स समणोवासगस्स चउविहे धम्मोवगरणेपन्नत्ते तंजहा- ठवणायरिअत्ति मुहपत्तीअत्ति जव- मालियत्ति दंडपाउपुछणगंचत्ति ॥

॥ तेमज व्यवहार सूत्रनी चूर्णिमां जगवान् श्रीमहावीर स्वामी फरमावे ठे के हे गोतम ! मुहपत्तिनु पमिलेहण कर्या विना जे कोइ वंदना दे तेने गुरुप्रायश्चित्त आवे आ उपरथी सिद्ध थाय ठे के सामायिक प्रतिक्रमणमां मुहपत्ति अवश्य राखवी जोइए, कारणके प्रतिक्रमणमां वारंवार गुरुवंदन करवुं पडे ठे

॥ तथाच तत्पाठः ॥

जो मुहपत्तीयं अपडिलेहित्ता वंदणं देई गोयमा तस्स गुरुअ पायच्छित हविज्जा ॥

तथा सिहश्रावके पोपधशालामा जइ स्थापनाचार्यनुं स्थापन करवापूर्वक मुहपत्तिनी पडिलेहण करी पोसह ग्रहण कर्यो एवो पाठ श्रीविवाहचूलियामा ठे ते आ प्रमाणे.

॥ तथाच तत्पाठः ॥

गंतु पोसहसालाए, ठवित्तु ठव-
णायरियं ॥ मुहपत्तिअं पमज्जंतो,
सीहो गिएहइ पोसहं ॥ १ ॥

प्रश्न. १ए केटलाएक एम कहे छे के मुहपत्ति तो साधुनुं उपगरण छे, वास्ते श्रावकोए उत्तरासंगना छेडाथी सामायिक पोसहादि करवुं तेनुं केम?

उत्तर. मुखवस्त्रिकास्थापन प्रकरणमां आ बाबतनो एवो खुलासो कर्यो छे के यतिनुं उपगरण होवाथी मुहपत्ति मूकी देवामां आवती होय तो श्रावकोए वस्त्र पण पहेरवुं न जाइए, केमके ते पण साधुनुं उपगरण छे. अने उत्तरीय वस्त्र मूकवानो विधि तो श्रीआवश्यकचूर्णि प्रमुख अनेक शास्त्रमां बतावेलो छे, तेथी कया वस्त्रांचलथी सामायिकादिक धार्मिक

क्रिया करवी? उतरासण विना तो ते बनी शके तेम नथी जुओ आवश्यकचूर्णिमां आटली वस्तुओ मूकवानु फरमान छे

॥ तद्यथा ॥

सामाइअं करंतो, सहो कुंडल किरीड मणि वर्ज्जं ॥ तंबोल पुप्फ पंगुरण–माइ वोसिरइ सव्वंपि ॥ १ ॥

तथा ओढवानु वस्त्र मूकी दइ अने मुहपत्ति ग्रहण करी पोसह प्रमुख करवानुं श्रीव्यवहारचूर्णिमां पण कह्युं छे

॥ तत्पाठो यथा ॥

पावरणं मुत्तूण, गिण्हीता मुहपत्तिअं ॥ वज्जकाय विसुद्धीए, करेइ पोसहाइयं ॥ १ ॥

तथा कुण्कोलिय श्रावके उत्तरिय वस्त्र मूकीने पोसह कर्यो एवो पाठ सातमा श्रीउपासकदशांग सूत्रमां छे ते पूर्वोक्त

प्रकरणग्रंथमां गाथारूपे आ प्रमाणे निवे-
दन करेल छे.

॥ तद्यथा ॥

सुवइअ सत्तमंगे, उवासगदसासु
कुंडकोलिअओ ॥ मुत्तूण उत्तरिज्जं,
पडिवन्नो पोसहवयंपि ॥ १ ॥

प्रश्न. २० 'पुत्तस्स अंतएणं' एवो पाठ कोइ जगोए आवे छे तेनो शुं अर्थ छे ?

उत्तर. मुहपत्ति प्रकरणमां ' पुत्तस्स अंतेणं ' ए पाठनो अर्थ मुहपत्तिनो छेडो करेलो छे.

॥ तथाहि ॥

पुत्तस्सअंतेणंति तर्हिपिअ पुत्तं
मुहपत्तिआनेआ ॥

प्रश्न. २१ उक्त प्रकरणकारे उपरना प्रश्नोत्तरमां आपेलो अर्थ मनकल्पित कर्यो छे के कोइ शास्त्राधारथी कर्यो छे ?

उत्तर प्रकरणकर्त्ताए उपर बतावेलो अर्थ मनकल्पित नथी कर्यो, किंतु आवश्यकचूर्णिना लेखने अनुसरतो कर्यो छे

॥ तथाहि ॥

इअआवस्सगगाहा मज्जेपढिअस्सपुत्तसहस्स मुहपत्तिअस्सअहो चुन्नीए वन्नीओ जम्हा ॥ १ ॥

प्रश्न. २२ श्रावक तथा श्राविका बन्नेए चरवलो मुहपत्ति राखवाना चोखा अक्षरो कोइ शास्त्रमा छे ?

उत्तर श्रीअनुयोगद्वार सूत्रनी वृत्तिमां साधु, साध्वी अने श्रावक, श्राविकाने मुखवस्त्रिका तथा रजोहरण राखवाना स्पष्ट अक्षरो छे

॥ तथाहि तत्सूत्रम् ॥

सेकिंत लोउत्तरिय भावावस्सयं ज त समणोवा समणीवा सावओवा

सावियावा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तज्झवसाणे तदठोवउत्ते तदप्पिअकरणे अन्नछ कछइ मणं अकुव्वमाणे उन्नओकालं आवस्सयं करिंति ॥

॥ एतद् वृत्त्येकदेशो यथा ॥

तदर्प्पितकरणः करणानि तत्साधकतमानि देहरजोहरणमुखवस्त्रिकादीनि तस्मिन्नावश्यके यथोचितव्यापारनियोगेनार्प्पितानि नियुक्तानि येन स तथा सम्यग् यथास्थानन्यस्तोपकरण इत्यर्थः ॥

प्रश्न- २२ केटलाएक ढुंढक अने तेरापंथीओ एम कहे छे के मुहपत्ति दोराथी मुख उपर निरंतर बांधी राखवी जोइए. ते योग्य छे के केम ?

उत्तर मुहपत्ति हमेश मुख उपर दोराथी बांधी राखवी ते कुलिंग छे तथा वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध छे वास्ते तेम करवु योग्य नथी

प्रश्न २४ कोइ सूत्रमां मुहपत्ति हाथमां राखवानो पाठ छे ?

उत्तर नीचे आपेला सूत्रपाठोथी मुहपत्ति हाथमां राखवी सिद्ध थाय छे जुओ श्रीदशवैकालिक सूत्रना पांचमा अध्ययनना प्रथम उद्देशानी ८३ मी गाथामां (हथ्थग) एटले मुहपत्ति एवो प्रकट पाठ छे, पण मुखग एवो पाठ नथी

॥ तद्यथा ॥

अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिछन्नंमि संवुडे ॥ हत्थगं संपमज्जित्ता, तत्थ भुंजिज्ज संजए ॥ ८३ ॥

॥ अवचूरिः ॥

अनुज्ञाप्य तत्स्वामिनं मेधावी साधुः प्रतिछन्ने कोष्टकादौ संवृत उपयुक्तः साधुरिर्याप्रतिक्रमणं कृत्वा तदनुहस्तकं मुखवस्त्रिकारूपमादायेति वाक्यशेषः ॥ संप्रमृज्य विधिना तेन कायं तत्र भुञ्जीत संयतः ॥ ८३ ॥

तथा श्रीअंगचूलिया सूत्रमां दीक्षासमये मुहपत्ति हाथमां आपवानो पाठ छे.

॥ तद्यथा ॥

तओ सूरी दंतीदंतुन्नएहिं पिट्ठोवरिकुप्परसंठिएहिं करेहिं रयहरणांगविता वामकरानामिआए मुहपत्तिं लंबंतिं धरितुसम्मं उवओगपरोसीसं अद्धावणयकायं इक्कि-

क्वय नमुक्कारपुव्व तिन्निवारे उच्च-
रावेइ ॥

तथा श्रीआचारांग सूत्रना वीजा श्रुतस्कंधमां वीजा अध्ययनना त्रीजा उद्देशामां खासी तथा वगासुं प्रमुख आवे तो हाथथी मुख ढाकवु कहेलुं छे वास्ते ढुंढक भाइओए पक्षपात मूकी अने दृष्टि निमीलन करी जरा विचार करवो जोइए के मुख वांधवानी आज्ञा होय तो सूत्रकार मोढे हाथ राखवानु फरमान केम करे ? माटे मध्यस्थताथी नीचे आपेलो ते पाठ तपासवो

॥ तद्यथा ॥

से भिक्खुवा भिक्खुणीवा ऊसासमाणेवा निसासमाणेवा कासमाणेवा छीयमाणेवा जम्भायमाणेवा

उड्डोएवा वायणिसग्गेवा करेमा-
णेवा पुव्वामेव आसयंवा पोसयंवा
पाणिणा परिपेहित्ता ततो संज-
यामेव ओसासेज्जा जाववायणिस-
ग्गेवा करेज्जा ॥

तथा श्रीआवश्यक सूत्र अने श्री-
ओघनिर्युक्तिमां कायोत्सर्ग करतां ज-
मणा हाथमां मुहपत्ति राखवानो
विधि छे.

॥ तथाहि ॥

मुहपोत्तीयंउज्जुहहे ॥

तथा अर्थापत्तिथी पण मुखव-
स्त्रिका हाथमां राखवी सिद्ध थाय छे,
कारणके श्रीउत्तराध्ययन सूत्रना १२ मा
अध्ययनमां एवो लेख छे के हरिकेश-
वल मुनिने आवता जोइ ब्राह्मणो आ
प्रमाणे बोलवा लाग्या के आ बीभत्स

रूप धारण करनारो कालो विकराल अर्थात् लांबा दतोष्ठवालो कोण आवे छे ? आ लेखथी सावीत थाय छे के मुहपत्ति बांधी होत तो तेमना दांत अने होठ शी रीते मालूम पडत ? वास्ते तेमना हाथमां मुहपत्ति होवी जोइए एवु अजाण बालको पण समजी शके तेम छे परतु ढुढक तेरापथीउं समजी शकता नथी ते तेमनां कर्मनो दोष छे तेमना हितने माटे पाठ देखाडवो ए अमारी फरज छे, माटे उपकार बुद्धिथी श्रीउत्तराध्ययन सूत्रना वारमा अध्ययननी गाथा लखीए छीए.

॥ तद्यथा ॥

कयरे आगछइ दित्तरूवे, काले विकराले पोक्कनासे ॥ ओमचेलए पसुपिशायभूए, संकर दूसं परिहरिय कंठे ॥ ६ ॥

॥ एतद्दीपिका यथा ॥

कतरः कोयं आगच्छति अतिशयेन कः इति कतरः एकारः प्राकृतत्वात् परमयं कीदृशः दीप्तरूपो बीभत्सरूपो दीप्तवचनं बीभत्सार्थवाचकं पुनः कीदृशः कालः कालवर्णः पुनः कीदृग् विकरालो विकृतांगोपांगधरः लंबोष्ठदंतुरत्वादिविकारयुक्तः पुनः कीदृशः पोक्कनासः पोक्का अग्रे स्थूलोन्नता मध्ये निम्ना चिप्पटा नासा यस्य स पोक्कनासः पुनः कीदृग् अवमचेल अवमानि असाराणि चेलानि वस्त्राणि यस्य स अवमचेलः मलाविलत्वेन जीर्णत्वेन त्याज्यप्रायवस्त्रधारीत्यर्थः पुनः कीदृशः पांशुपिशाचभूतः पांशुना

रजसा पिशाचनूतः पांशुपिशाचनूतः धूल्यावगुंठितशरीरत्वेन मलिनवस्त्रत्वेन नूततुल्य इत्यर्थ एतादृश. कोयं शंकरदूष्यकंठे परिधृत्य अत्रागच्छति समीपे आगतं दृष्ट्वा एव ऊचुरित्यर्थ शंकर उत्करटकस्तत्रस्थं दूष्य वस्त्रं शंकरदूष्यं यद्यपि तस्य साधोर्वस्त्रं उत्करटकस्य नास्ति तथापि तेषां अत्यंतघृणोत्पादकत्वेन तैरुक्त कोय उत्करटकस्य वस्त्रं कंठे परिधृत्य पिशाचसदृशो भ्रमन्नत्रागच्छति स हि हरिकेशीसाधुः कुत्रापि आत्मीय उपकरण न मुंचति सर्वे वस्त्रोपधिउपकरणादिक गृहीत्वैव भिक्षार्थं भ्रमतीति नाव ॥

प्रश्न २५ कोइ राजसचा अथवा पक्ति-

तोनी सन्नामां शास्त्रार्थथी मुखवस्त्रिका हाथमां राखवी सिद्ध थयेल छे के ?

उत्तर. घणी जगोए मध्यस्थ पंडितो समक्ष आ वावतनो निर्णय थयेलो छे. तेनो ताजो दाखलो नान्ना राजसन्नानो छे. पंजावमां नान्नानरेश समक्ष थयेल चर्चाना फेंसलाथी पण मुखवस्त्रिका हाथमां राखवी सिद्ध थइ चुकी छे. ते फेंसलानी नकल पांच पंडितोनी सही साथे इहां रजु करीए छीए.

॥ फैसला शास्त्रार्थनाभा ॥

श्रीमान् मुनिवर वल्लनविजयजी. पंमितश्रेणि सरकार नान्ना इस लेखद्वारा आपको विदित करते है. गत संवत्सरमें आपने हमारे यहां श्री १०८ श्रीमान्महाराजाधिराज नान्नानरेशजीके हजूरमें छे (६) प्रश्न निवेदन करके कहा था कि " यद्यपि जैनमत और

जैनशास्त्रभी सर्वथा एक है, परंच कालांतरसें हमारे और ढुंढियोंमे परस्पर विवाद चला आता है बलकि कईएक जगापर शास्त्रार्थभी हुए है, परंतु यह बात निश्चय नही हुई कि अमुक पक्ष साधु है। श्रीमहाराजकी न्यायशीलता और दयालुता देशांतरोंमे विख्यात है इससे हमें आशा है कि हमारेभी परस्पर विवादका मूल आपके न्याय प्रभावसे दूर होजावेगा भगवदिछासें इन दिनोंमे ढुंढियोंके महंत सोहनलालजी यहां आये हुये है उनके सन्मुखही हमें इन ठै ६ प्रश्नोंका उत्तर जैनमतके शास्त्रानुसार उनसे दिलाया जावे"

आपके कथनानुसार उक्त महंतजीको इस विषयकी इत्तला दी गई आपने इत्तला पाकर साधु उदयचंदजीको अपने स्थानापन्नका अधिकार देकर उ-

नके हानिलाभको अपना स्वीकार करके शास्त्रार्थ करना मान लियाथा ॥

तदनंतर श्री १०८ श्रीमन्महाराजाधिराजजीकी आज्ञानुसार हमलोगोंको शास्त्रार्थके मध्यस्थ नियत किया गया. तिस पिछे कई दिनतक हमारे सामने आपका और उदयचंदजीका शास्त्रार्थ होता रहा। शास्त्रार्थके समयपर जो प्रमाण आपने दिखलाये सो शास्त्रविहित थे। आपकी उक्ति और युक्तियेंभी निःशंकनीय और प्रमाण्य थी। प्रायः करके श्लाघनीय हैं ॥

उक्त शास्त्रार्थके समययर और इस डेढ वर्षके अंतरमेंभी जो इस विषयको विचारा है उससें यह बात सिद्ध नहीं हुई कि जैनमतके साधुउंको वार्त्तालापके सिवाय अहोरात्र अखंड मुखबंधन और सर्व काल मुखपोतिकाके मुखपर

रखनेकी विधि है। केवल भ्रांति है। केवल वार्त्तालापके समयही मुखवस्त्रको मुखपर रखनेकी आवश्यकता है। हमारे बुद्धिवलकी दृष्टिद्वारा यह बात प्रकाशित होती है कि आपका पक्ष ढुंढियोंसे बलवान् है॥

यद्यपि आपका और ढुंढियोंका मत एक है और शास्त्रभी एक है। इसमेंभी सदेह नहीं साधु उदयचदजी, महात्मा और शातिमान् है, परच आपने जैनमतके शास्त्रोंमें अतीव परिश्रम किया है और आप उनके परम रहस्य और गूढार्थको प्राप्त हुए हैं। सत्य वोही होता है जो शास्त्रानुसार हो और जिसमें उसके कायदोंसे स्वमत और परमतानुयायिओंको शका ना हो शास्त्रके विरुद्ध अधपरपराका स्वीकार करना केवल हठधर्म है॥

पूर्व विचारानुसार जब आपका शास्त्र और धर्म एक है और उनके कर्त्ता आचार्यजी एक है फिर आश्चर्यकी बात है कि कहा जाता है कि हमारे आचार्योंका यह मत नहीं है और ना इन ग्रंथोंके वोह कर्त्ता है। आप देखते है कि हमारे भगवान् कलकी अवतारकी बाबत जहां आप देखोगे एकही वृत्त पावेगा ऐसेही आपके भी जरूरत है ॥

आपके प्रतिवादीके हठके कारण और उनके कथनानुसार हमें शिवपुराण अवलोकनकी इछा हुई। वैसे इस विषयमें उसके देखनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी। इश्वरेछासे उसके लेखसें भी यहीं बात प्रकट हुई कि वस्त्रवाले हाथको सदा मुखपर फैंकता है इससे भी प्रतीत होता है कि सर्व काल मुखवस्त्रके मुखपर बांध रखनेकी आव-

श्यकता नहीं है, किंतु वार्त्तालापके समयपर वस्त्रका मुखपर होना जरूरी है ॥

आपके शास्त्रार्थमे एक हमे बडा जारी लाभ हुआ है कि हमे मालूम होगया कि जैनमतमे भी सूतक पातकको ग्रहण किया है और जैनी साधुओको उनके घरोके आहारादिके लेनेकी विधि नही है

व्यतीत संवत्सरके आठ जेठ ज्येष्ठ सुदि पचमी सवत् १९६१ को जो शास्त्रार्थ मध्यमे ठोका गया उसमें यह आशय था कि ढुढियोंकी ओरसे सदा मुखवधनकी विधिका कोई प्रमाण मिले, सो आजदिनतक कोई उत्तर उनकी तरफसें प्रकट नहीं हुआ, अत उनकी मूकता आपके शास्त्रार्थके विजयकी सूचिका है ॥

बस–इस विषयमें हमारी समति है और हम व्यवस्था याने फैसला देते

हैं कि आपका पक्ष उनकी अपेक्षासें बलवान् है। आपकी विद्याकी स्फूर्त्ति और शुद्ध धर्माचारकी नेष्टा अतीव श्रेष्ठतर है प्रायः करके जैनशास्त्र विहित प्रतीत होता है और है। इत्यलं १७ पोह. सं. १ए६२ मु. रियासत नाभा ॥

हस्ताक्षर पंडितोंके.
पंडित. भैरवदत्त.
पंडित. श्रीधर राज्य-पंडित नाभा.
पंडित. डुर्गादत्त.
पंडित. वासुदेव.
पंडित. वनमालिदत्त ज्योतिषी.

प्रश्न. २६ कोई अन्यमतना शास्त्रमां जैन मुनिना वेष विगेरेनुं वर्णन छे के नहीं ?

उत्तर. पद्मपुराणमां महादेव पार्व-

तीनो संवाद छे. तेमा पार्वतीए महादेव पासे सवाल कर्यो के 'हे महादेवजी ! जैन मुनिओ केवा होय, केवो आहार करे, केवु कर्त्तव्य करे अने तेमनो अवतार शामाटे थयेलो छे ? ते निवेदन करो ' आ प्रमाणे पार्वतीनो सवाल थता महादेव बोल्या के ' हे देवि ! दंडकवस्त्र सहित, ऊनना रजोहरणवाला, शुद्ध आहारना लेवावाला, अने शास्त्रानुसार चालवावाला, तुंबी अर्थात् तरपणी हाथमां राखवावाला, भिक्षाभोजन करनारा अने श्वेत[१] वस्त्र छे जेमना एवा जैन मुनिओ कदापि क्रोध करता नथी, अने जीवो उपर हमेश दया करे छे तेमनो अवतार, प्रति युगमा में मुक्ति कारण धर्मनो फेलावो करवा अने पापनु निकंदन करवा करेलो छे

---

१ हालना पीत वस्त्र कारणिक छे.

॥ तदुक्तं पद्मपुराणे ॥

ते कीदृशा किमाहाराः कर्म्म कुर्वंति कीदृशं ॥ अवतारः कथं तेषां, महादेव निगद्यतां ॥ १ ॥ दंरुकंबलसंयुक्ता, अजलोमप्रमार्जनाः ॥ गृह्णंति शुद्धमाहारं, शास्त्रदृष्ट्या चरंति च ॥ २ ॥ तुंबीफलकरा भिक्षा – भोजिनः श्वेतवाससः ॥ न कुर्वंति कदा कोपं, दयां कुर्वंति जंतुषु ॥ ३ ॥ मुक्तिकारणधर्माय, पापनिःकंदनाय च ॥ अवतारः कृतोमीषां, मया देवि युगे युगे ॥ ४ ॥

प्रश्न. २७ सुपात्रदानना विषयमां उत्तम, मध्यम अने जघन्य पात्र कोण ?

उत्तर. उत्तम पात्र साधु, मध्यम पात्र सुश्रावक अने जघन्य पात्र अविरति श्रद्धालु श्रावक जाणवा.

॥ तथाहि ॥

उत्तमपत्तं साहु, मऊमपत्तं सुसावगा त्नणिया ॥ अविरयसम्मदिठी, जहन्नपत्तं मुणेयव्व ॥ १ ॥

प्रश्न २ठ महाश्रावक केवा होय ?

उत्तर दीन डुःखीआमां दयावडे करीने, तथा साधु साध्वी, श्रावक श्राविका, जिनालय, जिनप्रतिमा, जिनागमादि पुस्तकरूप सात क्षेत्रमां नक्तिथी धन वावरतो अने व्रतमां रहेलो महाश्रावक कहेवाय ठे

॥ यदुक्तम् ॥

एवं व्रतस्थितो न्नक्त्या, सप्तक्षेत्र्यां धनं वपन् ॥ दयया चातिदीनेषु, महाश्रावक उच्यते ॥

प्रश्न २ए साधर्मी वात्सल्य करवाथी शो लान्न ?

उत्तर. जे मनुष्य भावथी पोताना स्वधर्मी भाइउनुं अन्न वस्त्रादिकथी वात्सल्य करे छे एटलुंज नहीं बल्के आदि शब्दथी कष्टमां पडेलाने धनादि सर्व प्रकारनी मदद आपी सुखी करे छे, अने तेमनां बालक बालिकाने विद्याध्ययननां सर्व साधनो मेलवी आपे छे तेनो जन्म सफल थाय छे; कारणके एक तरफ साधर्मी वात्सल्य अने एक तरफ सर्व प्रकारना धर्म ए बंने बुद्धितुलामां बराबर उतरे छे; वास्ते दुष्कालपीडित स्वधर्मीनुं साधर्मी वात्सल्य तो अवश्य करवुं जोइए, केमके पुत्रजन्म अने विवाहादि मंगलो तो घर घरमां थाय छे; परंतु संघार्चनादि मंगल तो कोइ भाग्यवान्ना घरमांज थाय छे.

॥ तथाहि ॥

साधर्मिकाणां वात्सल्यं, भोज-

नाछादनादिभि· ॥ यस्तनोति नरो भावात्, तज्जन्म सफलं भवेत् ॥१॥ एगत्र सव्वधम्मा, साहम्मियवछलं तु एगत्र ॥ वुध्दितुलाए तुलिया, दो-विभ्र तुलाई तुलियाइं ॥ २ ॥ पुत्र-जन्मविवाहादि, मंगलानि गृहे गृहे ॥ पर भाग्यवतां पुसां, श्रीसंघार्चादि मंगलम् ॥ ३ ॥

प्रश्न ३० श्रीजिनपतिनु ध्यान न करे तेनी केवी हालत थाय छे ?

उत्तर जे दुर्बुद्धि मनुष्ये उत्तम भक्तिवडे करीने निश्चित इछित फल आपनार जिनपतिनुं ध्यान नथी कर्युं ते महाव्याधिग्रस्त, सडेलां वस्त्रवालो, दीनवदन, भूखे मरतो, वांछाथी सैंकभ्रो घर तरफ जोनारो, आ लोकमां दु खार्त्त थइ ससारने विपे परिभ्रमण करे छे ॥

॥ तथाहि ॥

मद्दाव्याधिग्रस्तः, शटितवसनो दी-
नवदनो, बुभुक्षाक्षामात्मा, परगृहशा-
तप्रेक्षणपरः ॥ स दुःखार्त्तो लोके, भ्र-
मति हि भवे येन कुधिया; न सङ्ग-
त्या ध्यातो, ननु जिनपतिश्चिंतित-
फलः ॥ १ ॥

प्रश्न. ३१ जिनालये दर्शन करवा जनारने शुं लाभ थाय छे ?

उत्तर. हुं जिनभुवने दर्शन करवा जइश एवुं ध्यान करनारो एक उपवासनुं फल हांसल करे छे. उभो थाय त्यारे बे उपवासनुं, जवानी तैयारी करे त्यारे त्रण उपवासनुं, श्रद्धावंत रस्ते जवा मांडे त्यारे चार उपवासनुं, जिनघरने बारणे पहोंचे त्यारे पांच उपवासनुं, मध्य संरूपमां पंदर उपवासनुं अने जिनरा-

जनां साक्षात् दर्शन थये एक महिनाना उपवासनु फल पामे छे

॥ यदुक्तम् ॥

यास्याम्यायतनं जिनस्य लभते ध्यायंश्चतुर्थं फल षष्ठ चोठित उद्य-तोऽष्टममयो गतु प्रवृत्तोध्वनि ॥ श्र-ध्दालुर्दशमं बहिर्जिनगृहात्प्राप्तस्ततो द्वादशं, मध्ये पाक्षिकमीक्षिते जिन-पतौ, मासोपवासं फलम् ॥ १ ॥

प्रश्न ३१ चक्रवर्ती केटला थया छे ?

उत्तर राजा महाराजाओमा शार्दूल समान बार चक्रवर्ती थया छे तेमनां नाम नीचे मुजब—

१ भरत.	४ सनत्कुमार.
२ सगर.	५ श्रीशांतिनाथ.
३ मघवा	६ श्रीकुंथुनाथ.

७ श्रीअरनाथ. १० हरिषेण.
८ सुभूम. . ११ जय.
९ महापद्म. १२ ब्रह्मदत्त.

॥ तथैव प्रोक्तं प्रवचनसारोद्धारे ॥

भरहो १ सगरो २ मघवं ३ सणंकुमारोय रायसहूलो ४ ॥ संती ५ कुंथूअ ६ अरो ७ हवइ सुभूमोय कोरवो ८ ॥ १ ॥ नवमोय महापउमो ९ हरीषेणो चेव रायसहूलो १० जयनामोय नरवई ११ बारसमो बंभदत्तोय १२ ॥ २ ॥

प्रश्न. ३३ कन्याविक्रयनी जैनोमां बूट छे के केम ?

उत्तर. कन्याविक्रय जैन धर्मथी तद्दन विरुद्ध छे. जेओ कन्याविक्रय करे छे, तेमने जैन धर्मना फरमाननी माहिती न होवी जोइए, अगर माहिती होय

तो ते श्रद्धाभ्रष्ट होवा जोइए, अथवा तेमने दुर्गतिनो भय नथी एम होवुं जोइए जो भय होय तो तेओ आवु अघटित कार्य केम करे ? गाय बकरीनी पेठे पोतानी अंगजाने वेचवी ते लोकविरुद्ध अने धर्मविरुद्ध छे, तेमा काइ पण शक नथी. आ कन्याविक्रयना घोर कृत्ये केटलांएक कुटुंबोने पायमाल करी नाखेलां छे ग्राहकोनां मावाप अने बालबच्चां रखडतां थइ गयां छे वास्ते आ रीवाजने एकदम अटकाववानी खास जरूर छे, कारणके कन्याना लोभमां आवेला मनुष्यो कन्या बरोबर बल्के तेथी अधिक धन आपी जेम शाकभाजी तोली ले तेम कन्या खरीद करे छे, पण अफसोस छे के ते पामरो पोताने भीख मागवानो वखत आवशे ते तरफ जरा पण दरकार राखता नथी, अने पाछलथी

सारी उमर पश्चात्ताप करे छे. वास्ते अन्यायनो वेपार कोइए पण करवो योग्य नथी; कारणके श्रावकने न्यायसंपन्न विभववाला कहेला छे. ते छतां जेउ कन्याविक्रय करे छे तेओ नरकनो रस्तो खुल्लो करे छे. जैनशास्त्र साफ फरमावे छे के कन्याविक्रय, रसविक्रय अने विषविक्रय करनारा नरकगामी जाणवा. जुउ वंदिता सूत्रनी अर्थदीपिका नामनी टीका.

॥ तथैवाह ॥

कन्याविक्रयिणश्चैव, रसविक्रयिणस्तथा ॥ विषविक्रयिणश्चैव,नरा नरकगामिनः ॥ १ ॥

प्रश्न ३४. वृद्धावस्थामां केवी हालत थाय छे ?

उत्तर. वृद्धावस्थामां गात्र संकोच पामे छे, गति मंद थइ जाय छे, दांत

पडी जाय छे, आंखो जमी जाय छे, रूप दूषित थाय छे, मुखमांथी लाळ झरे छे, बांधवो वचन मानता नथी अनें नार्या सेवा करवानी चाहना राखती नथी अफसोसनी वार्ता छे के जराथी पराजव पामेलो पुरुष पुत्रोथी पण अवज्ञा पामे छे

॥ तथाहि ॥

गात्रं संकुचित गतिर्विगलिता दंताश्च नाश गता दृष्टिर्भ्राम्यति रूपमेव ह्रुषित वक्रं च लालायते ॥ वाक्य नैव करोति बाधवजनो न्नार्या न शुश्रूषते हा कष्ट जरयाजिन्नूतपुरुष. पुत्रैरवज्ञायते ॥ २ ॥

प्रश्न ३५ वृद्धपणामां पूर्वोक्त प्रश्नोत्तरमां जणावेली हालत थाय छे, छतां तेवी अवस्थामां केटलाएक बूढा बावा शामाटे लग्न करता हशे ?

उत्तर. मोटी उमरमां परणवानुं कारण तो पुत्रादिकनी आशा अने विषयतृष्णानुं विषमपणुं समजाय छे. यद्यपि तेओ एम जाणे छे के पुत्र थशे तो अमने बाप कहेशे अने अमारुं नाम राखशे. परंतु तेओ जरा पण ख्याल करता नथी के 'मीयां घोर जोगा अने बीबी वर जोगा' एम कही लोको पछी उडावशे, तथा बूढा बाबाने गले वलगेली ते पत्नी पुत्रीनी शंका उत्पन्न कराववा साथे संसारसमुद्रमां डुबाववाने एक अद्वितीय शिलारूप थइ पडशे; अने पुत्रइच्छा तो बर आवशे के नहीं ते तो दैवाधीन छे. कुदरतनी कोइने खबर पडती नथी. कदापि पुत्र थयो तो ते वृद्धि पामशे के नानी उमरमांज आ फानी दुनिया छोडी जशे, तेनी पण कांइ माहिती होती नथी. कदापि मोटो थयो तो

नाम काढशे के नाम डुबावशे, ते पण कोण जाणी शके ? एवा अनेक दाखला मोजुद छे के अनेक मुसीवतो वेठी मा-बापे कीटथी कुंजर जेवो वनावेलो मोटो दीकरो पोताना मातापिताने महा विप-दामा उतारे छे, अने तेनां दुःखथी तेओ आर्त्त ध्यानमां पडी दुर्गतिनां पात्र थाय छे वळी नाम तो कोइनुं अमर रह्युं नथी अने रहेवानुं नथी. वास्ते पुत्रथी नाम राखवानी इच्छावाला बूढा बावाओ नानी कोमळ बालाओने न फसावतां जिना-लय, जीर्णोद्धार, जैनशाला, धर्मशाला अने ज्ञानमंदिरादि धर्मालयो बनावी तेनी साथे पोतानुं नाम जोडी जाय तो ते पुत्रथी पण अधिक काल सूधी टकी रहे, ए निःसशय वात छे एटला कारण-थीज वस्तुपाल अने तेजपाल जेवा महा-शयो दुनियानी सपाटीपर आवी आवु-

राजनां अप्रतिम देवलो बंधावी गया छे, जेनी कीर्त्ति हजारो कोश उपर रहेला पाश्चात्य विद्वानो पण गाया करे छे. हवे जेउ विषयवासनामां अंजाइ जइ नानी नाजुक कन्या खरीदी लावे छे, अने खरी महेनतना पैसानुं पाणी करे छे, ते कन्या पण तेमनी न थतां प्राये पराइ थाय छे, अने कुलमां कलंक लगाडी कालुं करे छे; एटलुंज नहीं बल्के बूढानुं काटलुं पण काढी नाखे छे, अने बूढानी लक्ष्मीथी चेन उडावे छे; त्यारे बूढो आर्त्त ध्यानथी मरी दुर्गतिनो पराणो थाय छे. माटे वृद्धविवाहनी रसम अटकाववानी खास आवश्यकता छे. कन्याविक्रयना दुष्ट रिवाजमां पण आवो वृद्धविवाहज निमित्तभूत छे, कारणके अंग गली गयुं छे, मुंड पलित थयुं छे एटले मस्तके धोला केश आवेला छे, तुंड अ-

र्थात् मुख दांत विनानु बोखुं थयु छे अने दन्ड पकडी चालवु पडे छे, छतां आशा वृत्ती नथी एवा वृद्धो ज्यारे हजारोनी थेलीउ आपी नाना प्रकारनी आशाथी पाणिग्रहण करवा लाग्या, त्यारे लोभीष्टो कन्याविक्रय करवा ललचाया, केमके निरुद्यमी हरामनुं खानारा तो एवा रस्ता खोळताज होय छे तेमने आवी रीते अनायासे बूढा बावा लखपति बनावी दे त्यारे ते निर्विवेकी लोको ललचाय, ए स्वाभाविक छे वास्ते आ बूढाउनी आशाज अनर्थनुं मूल छे एक कविए कह्यु पण छे

॥ तद्यथा ॥

अगं गलित पलित मुंडं
दशनविहीन जात तुंडं ॥
वृध्धो याति गृहीत्वा दंडं

तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥१॥

प्रश्न. ३६ आ दुनियामां विना प्रयोजन वैरी कोण ?

उत्तर. मृगना वैरी शिकार करनारा शिकारीओ, मछना वैरी जाल नाखनारा धीवरो अने सज्जनोना वैरी चाडीया निंदाखोरो छे. यद्यपि हरणो तृण खाइ निर्वाह करे छे. माछलीओ जलथी निर्वाह करे छे. सज्जनो संतोषवृत्तिवाला होय छे. कोइनुं कांइ पण नुकशान करता नथी. तथापि आ दुनियामां उपर दर्शावेला तेमना निष्कारण वैरी होय छे.

॥ यदुक्तम् ॥

मृगमीनसज्जनानां
तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनाम् ॥
लुब्धकधीवरपिशुना
निष्कारणवैरिणो जगति ॥ १ ॥

प्रश्न ३७ लिपि अने गणथी निर्दोष शब्द कया ?

उत्तर देवतावाचक अने भद्रादिवाचक जे शब्दो छे ते सर्वे लिपि अने गणथी निर्दोष गणाय छे

॥ यदुक्तम् ॥

देवतावाचका शब्दा, ये च भद्रादिवाचका ॥ ते सर्वे नैव निंद्याः स्युर्लिपितो गणतोपि च ॥ १ ॥

प्रश्न ३८ कोइ जैनशास्त्रमां शकुन जोवानो लेख छे के नहीं ?

उत्तर शकुनशास्त्रादि अनेक ग्रंथोमां शकुन जोवानी बाबत छे, तथापि इहां श्रीउत्तराध्ययननी टीकानो एक दाखलो आपीए छीए ते सूत्रनी कमलसंयमोपाध्यायकृत टीकामा एवो लेख छे के १रुपा-

---

१ एक जातनी काली चकली

रेले, सारस, कागडो, घुवड, मोर, गधेडो, शियालणी, शियाल अने बलद, ए जनावरो प्रस्थान वखते डाबी तरफ होय तो कार्यसिद्धि करनारां सूचवेलां छे.

सामा सारस वायस, कोसिय सयवत्त गसद सिवाउ ॥ जंबु वसहा वामा, पछाने कज्जसिद्धकरा ॥१॥

प्रश्न. ३ए कोइ महाशये शकुन वास्ते शासनदेवतानी प्रार्थना करी छे के केम?

उत्तर. कुवलयमालामां कुवलयचंद्र कुमारे शकुन माटे शासनदेवतानी प्रार्थना करी छे, ते आ प्रकारे एकदा अनुकूल पवन थयो छे जेने, सांभव्यो छे वामे पासे खरनो शब्द जेणे, सव्य तरफ तर्यो छे एक रंगनो कूतरो जेने अने जेनी चारे तरफ सुंदर वचननो उच्चार थयो छे एवो कुवलयचंद्र कुमार कुवलयमाला साथे चालतो आ प्रकारे वि-

चार करतो हतो के, हे प्रवचनदेवि ! हु तातने निरोग देखु, राज्य पामुं, मारु सम्यक्त्व वृद्धि पामे अने हु कुवलयमाला साथे प्रव्रज्या ग्रहण करु, तेवु दिव्य ज्ञानथी जोइ उत्तम शकुन आप के जेथी मने शांति थाय ए प्रकारे चिंतवन करे छे तेटलामां मातीनी झालरवालु मणिसुवर्णनु छत्र तेनी आगल भेट करी काइए कह्यु के हे कुमार ! तमारा समीप रहेला आ राजाना मोटा भाइ जेउं जयतिपुरीना पति छे ते जयंत राजाए तमारे वास्ते आ देवताअधिष्ठित छत्र मोकल्यु छे ते जोइ कुमारे चिंतवन कर्युं के शासनदेवतानो प्रभाव आश्चर्यकारी छे तेथी आ प्रथमज प्रधान शकुन थयु

॥ तथाच तद्ग्रंथे ॥

अन्यदिने कुमारः कुवलयमालया

समं प्रचलितः जातानुकूलपवनः श्रु-
तवामखरस्वरः सव्यसमुत्तीर्णैकवर्णऽ-
शुनकः सर्वत्र समुच्चारितचारुवचनो
व्यचिंतयदिति भगवति प्रवचनदेवते
यदि तातं निरामयं पश्यामि राज्यं प्रा-
प्नोमि परिवर्द्धते सम्यक्त्वं कुवलयमाल-
या समं प्रव्रज्यामाश्रयामि तद्दिव्यज्ञा-
नेन परिज्ञाय तादृशमुत्तमं शकुनं देहि
येन मे निर्वृतिःस्यादिति यावच्चिंतयन्न-
स्ति तावत्पुरस्तस्य मणिकनकनिर्मितं
प्रलंबितमुक्तावचूलमातपत्रं केनाप्यु-
पनीय विज्ञप्तं देवास्य नृपस्य जयंती-
पुरीपति ज्येष्ठो भ्राता जयंताभिधा व-
सुधाधवस्तेन त्वद्धेतवे देवताकृताधि-
ष्ठानं छत्ररत्नं प्रेषितमिति कुमारेण

चिंतितं अहो प्रवचनदेव्या· प्रभाव· येन प्रथममेव प्रधानं शकुनमिति ॥

प्रश्न ४० कोइ प्रधान पुरुषे गुरुजनना पत्रने प्रणाम कर्यो छे के नहीं ?

उत्तर श्री कुवलयचंद्र कुमारे पोताना पिताना पत्रने प्रणाम करेलो छे तेनी वीना एवी छे के दृढवर्म्म राजानो लेखवाहक उक्त कुमारना छडीदारनी रजाथी कुमारना मुकाममा प्रवेश करी प्रणामपूर्वक समीपे लेख मूकी विनंति करवा लाग्यो के 'हे देव! आपने तातपूज्ये तेडाव्या छे ' तेवारे कुमर प्रथम पिताना पत्रने प्रणाम करी तदनंतर तेने फोडीने पोतेज वांचवा लाग्यो

॥ तदुक्तं कुवलयमालायाम् ॥

श्री दृढवर्म्मणो नृपतेर्लेखवाहः प्रतीहारनिवेदितः प्रविश्य कुमारं

प्रणिपत्य लेखं पुरो विमुच्य विज्ञप-यामासेति देव श्रीतातपादा भवंतमा-कारयंति ततः कुमारः पूर्वं लेखं प्र-णम्योन्मुद्य च स्वयं वाचयामास ॥

उपरना लेखथी शिक्षण लेवानुं मली आवे छे के ज्यारे आवा महान् राजकु-मारो पोताना वडीलोना लेखने नम-स्कार करे छे, त्यारे सामान्य स्थितिनां बालको मातापिताने टुंकारा हुंकारा अने गाळो आपी अपमान करे छे. ते-मज केटलाएक भणेल विद्यार्थीओ अने शिष्यो अध्यापकनुं अने गुरुमहाराजनुं अपमान करवा चूकता नथी. तेमणे खास ख्याल राखवानी अने विचार क-रवानी आवश्यकता छे के ज्यारे आवा राजकुमारो परोक्षमां रहेला पोताना पिताना माननी खातर तेमना पत्रने नमस्कार करे छे, तो प्रत्यक्षमां तेओ

केटलो वधो विनय करता हशे ते सहज समजी शकाय छे त्यारे आपणा उपर शु वडीलोना विनय करवानी फरज नथी ? अवश्य छेज केमके सांसारिक अने धार्मिक केलवणीमां विनय गुणनीज मुख्यता छे एटला वास्ते आपणा सिद्धांतकारोए पण श्रीउत्तराध्ययन सूत्रमां प्रथम विनय अध्ययन प्ररुपेलु छे, अने दशवैकालिक सूत्रना विनयसमाधि नामे नवमा अध्ययनना चार उद्देशा बनावेला छे. जुओ, श्रीउत्तराध्ययन सूत्रनी प्रथम गाथामा सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने अने तेमना उद्देशथी बीजा शिष्योने पण कहे छे के 'हे शिष्यो ! हु अनुक्रमे मधुकरवृत्तिथी आहार ग्रहण करी शरीर धारण करनार साधुनो विनय प्रकट करीश ते प्रगट करता तमे मारु वाक्य श्रवण करो, कारणके जिनशास-

नतुं मूल विनयधर्मज ठे.' श्रीदश-
वैकालिकमां पण कह्युं ठे के ' विनयथी
ज्ञान अने ज्ञानथी दर्शन थाय ठे.' इत्या-
दिक घणुं निवेदन कर्युं ठे.

॥ तथाच श्रीउत्तराध्ययन सूत्र गाथा ॥

संयोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स
भिरकुणो ॥ विणयं पाउ करिस्सामि,
अणुपुविं सुणह मे ॥ १ ॥

॥ व्याख्या ॥

श्रीसुधर्म्मास्वामी जंबूस्वामिनं
वक्ति जंबूस्वामिनमुद्दिश्य अन्यानपि
शिष्यान् वदति भो शिष्याः अहं
आनुपूर्व्या अनुक्रमेण भिक्षोर्भि-
क्षया मधुकरवृत्त्याहारं गृहीत्वा शरी-
रधारकस्य साधोर्विनयं प्राडःकरि-

ष्यामि मे मम विनयं प्रकटीकरिष्यतो यूयं वाक्यं शृणुत यतो जिनशासनस्य मूलं विनयधर्म एव ॥ उक्त च श्रीदशवैकालिके विनयाओ नाण नाणाओ दसणमित्यादि ॥

'विनयेन विद्या ग्राह्या' इत्यादि वाक्यवडे विद्या संपादन करवानो पण शास्त्रकार एज रस्तो बतावे छे, कारणके अविनितपणाथी सपादन करेली विद्या सफल थती नथी वास्ते विनयगुणनी खास जरूर छे

प्रश्न ४१ आ पंचम काळमां देवतानुं दर्शन तथा विद्यामंत्रनो प्रभाव अने अवधिज्ञान तथा जातिस्मरणादि भाव होय के नहीं ?

उत्तर श्रीतीर्थंकल्पमां कह्युं छे के बे हजार वर्षनी स्थितिवाला भस्मराशी ग्रहनी पीडा निवर्त्त थशे त्यारे देवताउं दर्शन

आपशे. विद्यामंत्र पण अल्प जापथी प्रभाव देखाडशे. अवधिज्ञान अने जातिस्मरणादि भाव पण किंचित् प्रगट थशे.

॥ तथाहि ॥

दो वास सहस्सठिइणो भासरासि गहस्स पीडाए नियत्ताए य देवावि दंसणं दाहिंति विज्जा मंताय अप्पेणवि जावेण पहावं दंसिसंति ओहिनाण जाईसरणाइ भावाय किंचि पयट्ट संति ॥

प्रश्न. ४२ दीवाली उपर मेराइयानुं प्रवर्त्तन शा कारणथी शरु थयुं ?

उत्तर. भस्मराशी ग्रहनी पीडानो प्रतिघात करवा लोकोए देवादिकनी आरती करी, तेथी मेराइयानुं प्रवर्त्तन थयुं.

॥ तदुक्तं श्रीतीर्थकल्पे ॥

भासरासीपिडापडिघायथ्थं देव-

माणुसगवाइणं नीराजणा जणेहि क-
या तेण किर मेराइयाणं पवत्ती जाया॥

प्रश्न ४३ जुहारनु प्रवर्त्तन केम थयु ?

उत्तर विष्णुकुमारे लाख योजननुं रूप कर्युं त्यारे पृथ्वी उपर मोटो उत्पात थयो हतो, अने लोको घणा जयभ्रांत थया हता तेथी तेमणे शांतिना अवसरे पोतानो नवो अवतार मानी जुहारादिनु प्रवर्त्तन कर्युं आ वनाव श्रीमुनिसुव्रत स्वामीना शिष्य सुव्रताचार्यना समयमा वन्यो ते अवसरे पण चोमासानो चोथो महिनो हतो, तेथी दीवाली उपर आ वधी धामधूम थाय छे एतदपि श्रीतीर्थकल्पे प्रोक्तमस्ति ॥

प्रश्न ४४ श्रीमहावीर स्वामीना कानमांथी कये स्थले कर्णशिलाका काढवामां आवी ?

उत्तर श्रीतीर्थंकल्पमा एवो लेख छे

के पावापुरीमां खरक वैद्ये श्रीमहावीर भगवान्ना कानमांथी कर्णशिलाका काढी; त्यां प्रभुना अवाजथी पर्वत पण फाटी गयो हतो. तथा डुरियरय वृत्तिमां पण आ बाबतनो खुलासो नीचे मूजब आपेलो छे.

॥ तद्यथा ॥

एकदा भगवान् विहरन् मध्यपापायां गतः तत्र सिद्धार्थो नाम एको वणिग् वर्त्तते तस्य गृहे भगवान् गतः। तस्य सिद्धार्थवणिजः खरकनाम वैद्यो मित्रं वर्त्तते तौ द्वावपि सिद्धार्थगृहे तिष्ठतः स्वामी भिक्षार्थं प्रविष्टः सिद्धार्थो वंदते स्तवति च वैद्यस्तीर्थकरं दृष्ट्वा भणति अहो भगवान् सर्व लक्षणसंपूर्णः परं सशल्यो दृश्यते ततः सिद्धार्थः संभ्रांतः सन् भणति

विलोक्य कुत्र शल्यमस्ति तेन दृष्ट कर्णयो ततः उद्याने गत्वा कायोत्सर्गे स्थित· तत्र औषधानि गृहीत्वा सिद्धार्थवैद्यौ गतौ भगवत्समीपे ततो भगवान् तैलद्रोण्या स्थापितो मर्षितश्च ततो बहुनिर्मनुष्यैर्यंत्रित आक्रांतश्च पश्चात्संडासकेन गृहीत्वा शल्योध्दारकृतो भगवता राटि मुक्ता ॥

प्रश्न ४५ कोइ सुशील माताए पोतानी पुत्रीने सतीमार्गनु शिक्षण आप्यु छे के केम ?

उत्तर कुवलयमालाने तेनी माताए सतीमार्गनु शिक्षण आप्युं छे के 'हे वत्से ! जो तु गुणश्रेणिने संपादन करवा चाहती होय तो पतिमंदिरे पहोंचे त्यारे हमेश नि संशयपणे प्रिय वचन बोलती रहेजे, सासु प्रमुख गौरव योग्यनुं गौरव

करजे, सपत्नीओ साथे पण निरंतर अनुकूल वर्त्तजे अने तेमनां बच्चांने पोतानां बालबच्चां माफक जोजे. आश्रित दासदासी उपर कृपा राखजे, सर्वथी उलटो वर्तावनार गर्व कोइ जगापर करती नहि, भर्तारना भोजन कर्या बाद भोजन करवुं अने तेमना सुइ रह्या पछी शयन करवुं. मुख आडुं कपडुं राखी नीची दृष्टिथी रहेवुं, पतिना दुःखे दुःखी अने तेमना सुखे सुखी थवुं, ते क्रोध करे तोपण कदापि क्रोध न करवो अने कोइ दिवसे पण पतिनां चरणकमल जोया विना रहेवुं नहीं. ए सर्व सतीओनो अद्भुत मार्ग छे.

॥ तदुक्तं कुवलयमालायाम् ॥

वत्से चेत् त्वं गुणश्रेणिमीहसे स्वस्य सर्वदा ॥ तद्भर्तृमंदिरं प्राप्ता, ब्रूयेः प्रियमसंशयम् ॥ १ ॥ कार्यं श्वश्रूप्रभृतिषु, गौरवार्हेषु गोरवम् ॥

त्वयानुकूलया भाव्यं, सपत्नीष्वपि सततम् ॥ २ ॥ तदपत्यानि दृश्यानि, निजानीवाश्रितेषु च॥ कृपा कार्या न तु क्वापि, गर्वः सर्वप्रतीपक॰ ॥ ३ ॥ भुक्ते भर्तरि भोक्तव्यं, स्वप्य च शयिते सति ॥ नीचैर्लोचनया स्थेयं, नीरगी स्थगितास्यया ॥ ४ ॥ दुःखे दुःखिता पत्यौ, सुखिते सुखिता भवेः ॥ कोपवस्यपि मा कोप,विदधीत कदाचन॥५॥ कदापि पतिपादारविंदद्वयविलोकनम् ॥ न हेय सर्वदा सर्वसतीमार्गोयमद्भुत ॥ ६ ॥

प्रश्न ४६ कोइ पिताए पुत्रीने बोध कर्यो छे ?

उत्तर पण्डित दयावर्धनकृत पर्वतिथिविचार ग्रथमां जयसिंह राजाए पोतानी पुत्री रत्नवतीने सासरे वळावता आ प्रकारे

बोध कर्यो छे के ' हे पुत्रि ! हवेथी तुं पोताना पुण्यने पिता तरिके गणजे, कारणके तेज तारुं रक्षण करनार छे. क्षमाने निरापद मानजे, केमके क्षमाशीलने आपदा संपदारूप थाय छे. संतोषने खरुं धन समजजे, कारणके ' संतोषी सदा सुखी ' एवुं हरकोइ कहे छे. बीजी बधी तरेहथी भरणपोषण करनार आ रत्नशेखर राजानेज समजजे. हवेथी हे वत्से ! हुं कोइ रीते तारो नथी एम मानजे. आ प्रकारनो बोध आपी पुत्रीवियोगथी दुःखी थयेला राजाए अश्रुपात सहित पोतानी पुत्रीने विदाय करी.

॥ तथाहि ॥

पितात्मनः पुण्यमनापदः क्षमा
धनं मनस्तुष्टिरथाखिलं नृपः ॥
अतः परं पुत्रि न कोपितेऽहमि-
त्युदश्रुरेष व्यसृजन्निजौरसीं ॥ १ ॥

उपरना लेखथी स्त्रीकेलवणीनी केटली बधी आवश्यकता छे, तथा तेमने शिक्षण आपवा मातापिताए केटली बधी कालजी राखवी जोइए,अने स्त्रीओए पति विगेरे साथे केवी रीते वर्त्तवु जोइए ए बधु स्पष्ट थाय छे माटे बाल्यावस्थाथीज कन्याओने सारु शिक्षण आपवा चुकवु नहीं तेनी प्राथमिक शिक्षणशाला तो पोतपोतानी माताओज छे बीजी अनेक स्कूलोमा वर्षोतक शिक्षण ले, परतु माता तरफना शिक्षणनी जे असर थाय छे ते कदापि बीजी शालाओथी थवानी नथी, कारणके बीजी शालाउमा परिश्रम उठाववाथी ज्ञान मले छे,त्यारे आ प्राथमिक शालाथी अनायासे ज्ञान प्राप्त थाय छे जेवु सदसद्र वर्तन माताओ करे छे तेवुज तेमना बचाओना कुमला हृदयरूप आदर्शमा पतिबिंबरूपे पडे छे, अने

તેની એવી મજબૂત છાપ પડે છે કે તે સારી ઉમર સુધી ભુંસાતી નથી. જો માતા ગુણ ગ્રહણ કરનારી હોય તો બાલક પણ ગુણ-ગ્રાહક થાય છે. માતાને ગાળો દેવાનો અભ્યાસ હોય તો બાલક પણ ગાળો દેવા શિખે છે. માતાને દેવ ગુરુના દર્શન કર-વાનો રિવાજ હોય તો બાલકો પ્રભાત-થીજ તે તરફ લાંબો હાથ કરી પોતાને ત્યાં લઇ જવા સૂચના કરે છે. માટે પ્રથમ તો માતાઓએજ સદ્વર્તન રાખવું યોગ્ય છે. જ્યાં સદ્વર્તન હોતું નથી અને દંપ-તીની આપસમાં ખટપટ ચાલ્યા કરે છે, જેમ કોઇ પતિ સ્ત્રીને કહે કે 'હે સુંદરિ! તું શું આ સુંદર કરે છે? ના એ સારું કરતી નથી?' ત્યારે સ્ત્રી કહે કે 'તું પોતે કેમ સારું કરતો નથી?' પતિ કહે 'અરે પાપણી! તું સામું બોલે છે.' પત્ની કહે

'તારો બાપ પાપી, મને શામાટે પાપણી કહે છે?' પતિ કહે 'રે ક્રોધમુખી! તને ધિક્કાર હો?' પત્ની કહે 'રે જૂઠા વાચાલ! તારાથી વળી કોણ ક્રોધી છે?' આવી રીતનો જે સ્ત્રીભર્તારનો નિરંતર દંતકલહ ચાલતો હોય તેવા ક્લેશપિડિતને શુ સુખ હોય? અર્થાત્ કોઇ તરેહનુ સુખ સમજવું નહીં

॥तदुक्तं सौभाग्यपंचमीकथायाम्॥

आः किं सुंदरि सुदर न कुरुषे किं नो करोषि स्वयं, आ पापे प्रतिजल्पसि प्रतिपदं पापस्त्वदीय· पिता ॥ धिक्त्वा क्रोधमुखीमलीकमुखर त्वत्तोपि क कोपनो, दंपत्योरिति नित्यदंतकलहक्लेशार्त्तयोः किं सुखम् ॥ १ ॥

ઉપર દર્શાવેલા ક્લેશનું નિકંદન

छ महिने चैत्र आसो मासनी शाश्वती अठाइओमां अर्थात् आंबेलनी ओलीओमां श्रीपाल चरित्र वांचतां तेना सद्वर्तननुं व्याख्यान आपे छे. वळी परम प्रभाते जे बावन सतीओनां नाम लेवामां आवे छे, तेमां चौद पूर्वधर श्रीस्थूलभद्र स्वामीनी सात भगिनीओनां नाम मोजुद छे. तेमणे बाल्यावस्थामां नंदराजानी सभा समक्ष प्रज्ञता, दक्षता अने विद्वत्ताथी १०० महा-काव्योनो विचारपूर्वक उच्चार करी आखी राजसभाने आश्चर्यमां गरकाव करी हती. तेनुं परिणाम एवुं आव्युं के प्रख्यात वरस-चि विद्वान्ने राजसभामांथी पलायन करवुं पड्युं हतुं. ते साते बहेनोनुं बुद्धिबल एवुं तो अजायबी उपजावनारुं हतुं के शतावधानी अने सहस्रावधानी विद्वानोनी माफक एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ, सातवार सांभळेलां काव्योने ते क्रमथी उच्चार

करी शकती हती एटले पहेलीनी मगजशक्ति एवी तो खीलेली हती के ते एकजवार जेटलु श्रवण करे ते याद राखी शकती हती बीजी बेवार, अने त्रीजी त्रणवार, एवी रीते सातमी सातवार श्रवण करेलु धारण करी राखती हती तेमना नाम श्रीकल्प सूत्रमां आ प्रमाणे आपेलां छे

॥ तद्यथा ॥

जरकाय जरकदिन्ना, नूआ तहचेव नूअदिन्नाय॥ सेणा वेणा रेणा, नइणीउ थूलिनद्दस्स ॥ १ ॥

तथा नोजराजानी राजसनाना शृगार अने वूटथी ठटादार वोलनार धनपाल पडिते पण पोतानी पुत्रीने वालपणाथी सारु शिक्षण आपी तेनी मगजशक्ति एवी खीलवी हती के तेणी तेने एक अद्वितीय मददगार थइ पडी हती तेनी

वहार पाड्यो छे. ते ग्रंथनुं कवित्व अने विद्वत्तात्तरेलुं लखाण जोवा अमे विद्वा-नूवर्गने खास जलामण करीए छीए. महाशय वाचकवर्ग ! आवी रीते केलवा-येली कुलबालिकाओ ज्जय कुलरूपी कूलं-कषाना[1] किनाराने कमनीय[2] करवा कल-कंठी[3] समान नीवडे छे एटलुंज नहीं वल्के 'वावे ते लणे' ए कहेवत प्रमाणे तेमने शिक्षण आपनारा पण सारां फलनो आस्वाद लेवा ज्ञाग्यशाली वने छे. अल-बत ए तो निर्विवाद छे के केलवायेली कणक ज्यारे केलवनारने पुरी, कचोरी, पुरणपोली अने रोटली रोटलारूप थइ संपूर्ण तृप्त करे छे, त्यारे केलवायेली कुल-बालिकाओ कुल दीपावी सांसारिक, सामा-जिक अने धार्मिक कार्योमां मददगार थइ माता, पिता, ग्राम, नगर अने जन-

---

१ नदी. २ शोज्ञाववा. ३ हंसणी.

पद्वासीउने मददगार थाय तेमा शुं आश्चर्य छे। अत एव मातापिताए पोतानी बालिकाने अने परोपकारथी पराङ बालाउने बालपणाथीज तन मन धननो जोग आपी केलववी योग्य छे इत्यल विस्तरेण

प्रश्न ४७ घनोदधि शुं चीज छे? तेनुं प्रमाण केवडुं अने ते क्यां आगल छे?

उत्तर घनोदधि ए असख्यात योजन प्रमाणनो जलपिंड छे, अने ते विमान तथा पृथिव्यादिना आधारजूत छे

॥ तदुक्तं क्षमाकल्याणविरचित श्री-जीवविचारवृत्तौ ॥

घनोदधिर्विमानपृथिव्याद्याधार-जूताऽसख्येययोजनप्रमाणपयःपिंड-रूप ॥

प्रश्न ४८ घनवात, तनुवात केवा होय? अने ते कये ठेकाणे छे?

उत्तर घनवा अने तनुवा ए बन्ने घनो-

दधिनी माफक रत्नप्रभादि पृथ्वी अने सौधर्मादि विमानना आधारभूत छे. तेमां घनवा ठरेला घी जेवो अने तनुवा तपावेला घृत सदृश पातळो छे.

॥ तथाहि जीवविचारवृत्तौ ॥

घनवाततनुवातौ घनोदधिवद्रत्नप्रभादीनां सौधर्मादीनां चाधारभूतौ तयोराद्यः स्त्यानघृतसदृशोऽन्यस्तु तापितघृतवद्दृढस्वरूपः ॥

प्रश्न ४९. छपन्न अंतरद्वीपना मनुष्यो केवा होय ? तथा तेमनुं आयुष्य केटलुं ? अने त्यां संमूर्छिम मनुष्यो होय के केम ?

उत्तर. छपन्न अंतरद्वीपना युगलिक मनुष्यो ९०० धनुष्य उंचा शरीरवाला तथा पल्योपमना असंख्येय भाग प्रमाण वर्षना आयुष्यवंत होय छे, अने त्यां संमूर्छिम मनुष्योनी उत्पत्ति पण छे.

॥ तदुक्तं जीवविचारवृत्तौ ॥

तद्द्वीपवासिनो युगलिनो मनुष्याः पल्योपमाऽसंख्येयभागवर्षायुषोऽष्टशतधनुरुच्छ्रिताश्च संति । एते सर्वे त्रिविधापि मनुष्या गर्भजाः सम्मूर्छिमाश्चेति द्विधा बोध्याः ॥

प्रश्न ५० संमूर्छिम तेइन्द्रिय चोइन्द्रिय जीवोनु उत्पत्तिस्थान कोइ शास्त्रमा बतावेलु छे ?

उत्तर श्रीरत्नाकरपाठक विरचित जीवविचारवृत्तिमा एवो लेख छे के तेइंद्रिय जीवो पोतानी जातिना जीवोनी विष्टा प्रमुखमा उत्पन्न थाय छे, अने चोइंद्रिय जीवो तो स्वजातिनी लाला तथा मल प्रमुखथी पण पेदा थाय छे

॥ तथाहि जीवविचारबृहद्वृत्तौ ॥

त्रींद्रियास्तु स्वजातिपुरीषादिपूत्प-

द्यंते चतुरिंद्रियास्तु स्वजातिलालाम-लस्पर्शादिन्य उत्पद्यंते ॥

प्रश्न ५१. नव ग्रैवेयक अने अनुत्तर विमानना देवो उत्तर वैक्रिय शरीर करे छे के नहीं ?

उत्तर. ग्रैवेयक अने अनुत्तर विमानना देवो उत्तर वैक्रिय करता नथी. त्यांना देवताउंमां शक्ति विद्यमान छे, छतां प्रयोजनना अन्नावे उत्तर वैक्रिय शरीर करता नथी.

॥ तदुक्तं जीवविचारवृहद्वृत्तौ ॥

ग्रैवेयकेष्वनुत्तरेषूत्तरवैक्रियं नास्ति तत्सत्यामपि शक्तौ प्रयोजनाऽन्नावे तदऽकरणादिति संटंकः ॥

प्रश्न ५२. केटला वर्षे एक पूर्व थाय ?

उत्तर. सीतेर लाख क्रोड अने छपन्न हजार क्रोड वर्षे एक पूर्व थाय.

॥ तदुक्तं जीवविचारवृहद्वृत्तौ ॥

पुव्वस्सय परिमाणं, सयरिं खलु वासकोमिलरकाउं छप्पन्न च सहस्सा, वोधव्वा वासकोडीणमिति ॥ १ ॥

प्रश्न ५३ समूर्छिम पचेंद्रिय स्थलचर खेचर, उरग अने भुजगनी उत्कृष्ट आयु-स्थिति केटली होय ?

उत्तर संमूर्छिम पचेंद्रिय स्थलचरादिनी नीचे मूजब उत्कृष्ट आयुष्यस्थिति जाणवी

१ गाय प्रमुखनी ७४००० हजार वर्ष
२ बगला प्रमुखनी ७२००० हजार वर्ष
३ सर्पादिकनी ५३००० हजार वर्ष
४ घो गिरोली नोलीयादिकनी ४२००० हजार वर्ष

॥ तदुक्तं जीवविचारवृहद्वृत्तौ ॥

संमूर्छिमपचेंद्रिया ये स्थलचरा ग-

वादयः १ खचराः पक्षिणो बककादयः २ उरगाः सर्प्पादयः ३ जुजगा गृहगोधादयः ४ क्रमात्तेषां जेष्टास्थितिः चतुरशीतिः १ द्वासप्ततिः २ त्रिपंचाशत् ३ द्विचत्वारिंशच्च वर्षसहस्र इत्यर्थः ॥

प्रश्न ५४. श्रीजीवविचारनी ४१ मी गाथामां (सत्तठ नवा पणिंदि तिरि मणुआ) एवो पाठ छे. तेमां सात आठ नव कहेवानुं शुं प्रयोजन छे ?

उत्तर. उपर बतावेली कायस्थितिने सूचवनारी गाथामां सात आठ नव कहेवानुं प्रयोजन एवुं छे के कोइ कोइ पर्याप्ता संज्ञि पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्यो निरंतर तेवा सात आठ नव करी शके छे. तेमां सात नव तो संख्याता वर्षना आयुष्यवाला अने आठमो नव असं-

ख्यात वर्षना आयुष्यनो करे ठे ते कारणथी सात आठ जव कह्या ठे एटले पर्याप्तसंज्ञि मनुष्यो अथवा पर्याप्तसंज्ञि पंचेंड्रिय तिर्यंचो निरंतर यथाक्रमथी सात जव मनुष्यना के तिर्यंचना करी जो आठमे जवे पण तेमांज उत्पन्न थाय तो नियमथी असख्य वर्ष आयुष्यवाला युगलीयामाज उत्पन्न थइ शके अने त्यांथी मरी देवतामां उत्पन्न थाय तेवार पठी नवमो पण नरजव अथवा तिर्यंचजव थाय, परंतु निरंतर न थाय

॥ तदुक्तं जीवविचारवृहद्वृत्तौ ॥

संज्ञिनः पर्याप्ता पंचेंड्रियतिर्यग्मनुष्या· सप्ताष्टौ जवा जवेरन् तत्र सप्तजवास्संख्येयवर्षायुषोऽष्टमस्त्वऽसख्यातवर्षायुरेव तथाहि पर्याप्तसंज्ञिमनुष्या· पर्याप्तसंज्ञिपचेंड्रियतिर्यं-

चो वा निरंतरं यथासंख्यं सप्त नर-
भवांस्तिर्यग्भवांश्चानुभूय यद्यऽष्टमे
भूयस्तेष्वोत्पद्यंते ततो नियमादऽसं-
ख्यातवर्षायुष्केष्वेवोत्पद्यंते असं-
ख्यातायुष्कश्च मृत्वा सुरेष्वे वोत्पद्यंते
ततो नवमोपि नरभवस्तिर्यग्भवो वा
परं निरंतरं न लभ्यते ॥

प्रश्न५५.व्याकरण भणवाथी शुं लाभ थाय?

उत्तर. व्याकरणथी पद सिद्ध थाय छे, पदसिद्धिथी अर्थनो निर्णय थाय छे, अर्थनिर्णयथी तत्त्वज्ञान थाय छे अने तत्त्वज्ञानथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे.तदुक्तं स्वोपज्ञहैमलघुप्रक्रियाख्यव्याकरणवृत्तौ महोपाध्यायश्रीकीर्तिविजयगणिशिष्योपाध्यायश्रीनयविजयगणिना—

॥ तथाहि ॥

व्याकरणात्पदसिद्धिः

पदसिद्धेरर्थनिर्णयो भवति
अर्थात्तत्त्वज्ञान
तत्त्वज्ञानात्परं श्रेयः ॥ १ ॥

प्रश्न ५६ व्याकरण जाणवाथी उपर दर्शावेलुं अजवालुं थाय छे अने अमूल्य लाभ मेळववामां आवे छे, छतां धर्मने बहाने धोखो देनारा ढुंढको व्याकरणने व्याधिकरण केम कहे छे ?

उत्तर ढुढक भाइओ व्याकरणने व्याधिकरण कहे छे, तेनुं प्रयोजन तो ए समजाय छे के (प्रथमतो पठनं कठनं कृतं) ए वाक्यानुसार पढेलु तो जाणवुज कठन, तेमा वली व्याकरणनु तो कहेवुज शु ! तेनाथी नासीपास थाय तेमा नवाइ नथी तेना अध्ययनमां तो जे हिंमतना हीमायती छे तेज आगल वधे जाय छे, अने जेओ कायर छे ते तो तेमां चक्कर मार्याज करे छे, वास्ते

एक तो मोटो परिश्रम उठाववो पडे छे अने वीजुं कारण एवुं छे के व्याकरणना अध्ययनथी सत्यार्थनो प्रकाश पडे छे, त्यारे तेमनो मनघटित अर्थ टकी शकतो नथी. तेथी तेउ ते मतने खोटो छे एवो निर्णय करी, पासलामां फसायेलो मृग जेम वागुरा तुटवाथी पलायन करी जाय, तेम ते मनकल्पित मतनो त्याग करी शुद्ध सनातन जैनधर्ममां सामेल थइ जाय छे. दाखला तरीके पंजाबमां श्रीआत्मारामजी महाराज अने श्रीविसनचंदजी महाराज विगेरे साधुमंडल अने तेमना प्रतिबोधेला हजारो श्रावको जैन श्वेतांबर सनातन धर्ममां सामेल थया, जेउ श्रीविजयानंद सूरीश्वरना नामथी अने पंडित श्रीमल्लक्ष्मीविजयजी महाराजादिना नामथी प्रख्याती पामेला छे. तेमज कच्छ देशमां रतसी स्वामी तथा रायचंदजी स्वामी विगेरे; जेउ हाल श्रीरत-

विजयजी अने पद्मविजयादिना नामे ऊंलखाय छे एवी रीते गुजरात, मारवाड, मालवा तथा पूर्व बगालादि अनेक स्थले एवा दाखला बन्या छे के संख्याबंध साधु साध्वी अने श्रावक श्राविकाए ते मतनो त्याग कर्यो छे तेथी तेऊं व्याकरणने व्याधिकरण कहे छे, परतु ते कांइ व्याधिकरण नथी गधेडाने साकर, कागने डाख अने घुवडने प्रकाश सारो न लागे माटे ते खराब छे एवुं कोइ पण बुद्धिमान् कबुल करशे नहीं अलबत तेऊं तो (वाणी व्याकरणेन) ए महावाक्यानुसार व्याकरणने एक वाचा खीलवनार तरीकेज गणशे

प्रश्न ५७ ढुढको कहे छे के अमेतो ३२ सूत्र मानीए छीए, तेमा व्याकरणनो विषय होय तो बतावो

उत्तर श्रीप्रश्न व्याकरणादि अनेक सूत्रोमां व्याकरणनो विषय छे, अने तेनुं

जाणपणुं कर्या विना सूत्र वांचनारा महा मृषावादी छे, तथा तेमने सूत्र वांचवानो पण अधिकार नथी इत्यादि सारी रीते व्यान करेलुं छे. तेना सूत्रपाठ श्रीविजयानंद सूरीश्वर उर्फे श्रीआत्मारामजी महाराज विरचित सम्यक्त्वसल्योद्धारादि ग्रंथमां मोजुद छे. वास्ते ते पाठ न लखतां श्रीअनुयोगद्धारनो मूल पाठ टीकार्थ सहित दर्शावीए छीए. तेमां सामासिक तद्धितज, धातुज अने निर्युक्तिक, ए चार प्रकारे भावप्रमाण सूत्रकारे बुलंद अवाजे बतावेला छे. ते दरमियान सामासिक प्रमाण दर्शावतां द्वंद्व, बहुव्रीहि, कर्मधारय, द्विगु, तत्पुरुष, अव्ययीभाव अने एकशेष, ए सात प्रकारे समास बतावेला छे. ए सात प्रकारना समासनुं स्वरूप, व्याकरणनुं ज्ञान मेलव्या सिवाय कोइ प्रकारे बंधबेसतुं आवी शके तेम नथी. वास्ते ढुंढको व्याकरणनो अभ्यास

कर्या विना सूत्रो वांची महामृषावादी बने छे, ते खरेखर खेदनो विषय छे अमे आशा राखीए छीए के ढुंढक नाइर्ज नीचे आपेलो श्रीअनुयोगद्वारनो मूल पाठ तथा टीकार्थ जोइ तेने अनुसरतुं वर्तन चलावशे अने पोतानो तथा अनुयायी-ऊनो शुद्ध शास्त्रार्थथी उद्धार करशे

॥ तत्सूत्रपाठो यथा ॥

सेकिंत नावप्पमाणे २ चउव्विहे पणत्ते तंजहा । समासिए, तद्धितए, धाउए, निरुत्तिए । सेकिंतं समासिए २ सत्त समासा नवंति । तंजहा । दंदेअ, बहुव्वीही, कम्मधारए, दिग्गूअ, तप्पुरिसे अवईनावे, एकसेसेअ

॥ तट्टीका यथा ॥

सेकिंत नावप्पमाणे इत्यादि नावो युक्तार्थत्वादिको गुण स एव तद्द्वारेण

वस्तुना परिच्छिद्यमानत्वात्प्रमाणं तेन निष्पन्नं तदाश्रयेण निर्वृत्तं नामसामासिकादिचतुर्विधं जवतीत्यत्र परमार्थः तत्र सेकिंतं समासिए इत्यादि ऊयोर्बहूनां वापदानां समसनं संमीलनं समासस्तन्निर्वृत्तं सामासिकं समासाश्च द्वंद्वादयः सप्त ॥ इत्यादि बहुविस्तरेण प्रोक्तमस्ति ॥

प्रश्न ५ए. सांसारिक कार्य प्रसंगे धार्मिक क्रिया करवी ते जैनशास्त्राधारे उचित गणाय के नहीं ?

उत्तर. श्रीश्राद्धविधि ग्रंथमां आवेली शुकराजनी कथामां सांसारिक कृत्य करनार विवेकी मनुष्ये ते प्रसंगमां धर्मकार्यो पण यथोचित रीते अवश्य करवां जोइए एवी बाबतने सूचवनारो एक श्लोक आपेलो छे ते आ प्रमाणे—

॥ श्लोक ॥

तत्सांसारिककृत्यानि, कुर्वाणेन विवेकिना । तदंतर्धर्मकार्याणि, कार्याण्येव यथोचितम् ॥ १ ॥

आ श्रावकोना तमाम विधि बतावनार शास्त्राधारे दरेक श्रावके पोतपाताने त्यां पुत्रादिना जन्म विवाहादि शुभ प्रसगे स्वस्वशक्ति अनुसारे अठ्ठाइ महोत्सव, उद्यापन महोत्सव, समवसरण महोत्सव, विद्यार्थीउने उत्तेजन, इनामना मेलावमा अने डुष्कालपीमितादि स्वधर्मीउनु वात्सल्य करवु उचित ठे

प्रश्न ५ए सांसारिक कृत्यो पैकी मरण पाठल वरो करवो अने तेमां लखलुट खरच करवो ते योग्य ठे के केम ?

उत्तर बाल, तरुण के वृद्धमांथी कोइना पण मरण पाठल जमण करवु व्याजवी नथी, कारणके ते निर्दयता, नि.शूकता,

निर्लज्जता, निर्धनता अने निंद्यता अर्पण करवा उपरांत सिद्धांतविरुद्ध छे.

निर्दयता एटला वास्ते छे के केटलाएक जोजनजट्टो तेवां मरणनी राह जुवे छे, अने दैवजोगे तेम बनवाथी घणा खुशी थाय छे, एटलुंज नहि बल्के तेवो बनाव कोइ महिनामां न बने तो "आ मास तो केवल खाली गयो, कांइ पण मालपाणी उडाववा मल्यां नहीं" एम विचारे छे.

निःशूकता एटला वास्ते छे के देवपूजादि धर्मकृत्यनो त्याग करी सूतकमां सूतकी बनी जोजन करवामां डुगंछा करता नथी.

निर्लज्जता एटला कारणथी के तेना घरमां रो, पीट अने हाहाकार वर्त्ततो होय तोपण जमनारा लजवाता नथी.

निर्धनता तो प्रसिद्धज छे. न्यातिना

अग्रगण्य शेठीआउंनी वेदरकारीने लीधे ज्यांसुधी ते रिवाजनें देशवटो आपवामां आवतो नथी त्यांसुधी गरीब अने तवंगरने माथे आ फरज ठे, एम जाणी निर्धन लोको पण तवंगरनी देखादेखी इज्जत राखवा घरघरेणादि वेचीने पण वरो करवा पठात परुता नथी. जलेने वेराठेकरा रखरुता थइ जाय, अने लेणदार पोताना कपरुां खेचे, ठेवटे रकम आपवा न मले तो कारागारनी मुसाफरी करवा जवुं पडे आवी रीतनी पायमाली नजरे जोतां ठतां गुजरात, बंगाल, पंजाब, मुलतान, मालवा, मेवारु अने कछादि देशोमा ते रिवाज हजु चालु रहेलो ठे एटलेथी न अटकता मारवारुी जाइउं तो ते काममा एटला बधा आगल वध्या ठे के मरनार मावापनी पाठल वरो करी दूर दूर देशना सेवकब्राह्मणोने तेरुावी जमण

आपवा उपरांत दक्षणा आपी लाखो रुपी-आनो धूमाडो करे छे. आवी रकम धर्मादामां के निराश्रित धर्मबांधवोना उद्धार माटे खरचवामां आवे तो केटलो वधो फायदो थाय ?

निंद्यता तो हरकोइ जाणे छे के कोन्फरन्सोमां, मंडलोमां, सजाउमां मोटा मोटा विद्वानो जाषणो आपी अने मुनिराजो व्याख्यानो आपी आ घोर कृत्यने मेघनादथी तिरस्कार करे छे, एटलुंज नहीं बल्के हानिकारक रिवाज गणी तेने एके अवाजे अटकाववाना ठराव करे छे.

सिद्धांत शैलीविरुद्ध तो एटला हेतुथी छे के सिद्धांतकार श्रीसंय्यजवसूरीश्वरजी महाराज सिंहनादनी गर्जनाथी श्रीदशवैकालिक सूत्रमां साधुउने केवी जाषा बोलवी तेनुं ज्ञान कराववा ते सूत्रना सातमा अध्ययननी ३६ मी गाथामां आ प्रकारे फरमावे छे—

॥ तथाहि ॥

तद्देव संखडिं नच्चा किच्चं कज्जति नो वए

आ सूत्रनी बृहद्वृत्तिमां १४४४ ग्रंथना कर्त्ता श्रीहरिजद्रसूरि महाराज उक्त पाठनो एवो खुलासो करे ढे के जे प्रकरणक्रियामा प्राणीउनां आयुष्य खंडित थाय तेने संखडि अर्थात् जमणवार कहीए तेने जाणीने साधुउंए 'पितादिकना निमित्ते आवा जमणवार करवा योग्य ढे' एवी जाषा न बोलवी, कारणके तेथी मिथ्यात्व वृद्धिनो दोष लागे ढे

॥ तद्वृत्ति यथा ॥

वाग्विधिप्रतिषेधाधिकारेऽनुवर्त्तमान इदमपरमाह । तद्देवत्तिसूत्रम् । तथैव संखडिं ज्ञात्वा । संखड्यन्ते प्रा-

णिनामायुंषि यस्यां प्रकरणक्रियायां सा संखडी तां ज्ञात्वा करणीयेति पित्रादिनिमित्तं कृत्यैवेषेति नो वदेत्। मिथ्यात्वोपबृंहणदोषात् ॥

आ वृत्तिमां आदि शब्द आपेलो छे तेथी बाल, तरुण अने वृद्धनुं पण ग्रहण थइ शके छे; तेथी पुत्र, पुत्री, प्रपौत्र, माता, भ्राता, दादा, दादी इत्यादि कोइना पण मृत्यु पाछल आवा सांवत्सरिकादिना जमणवार करवा योग्य नथी, ए स्पष्ट समजी शकाय छे. तेमज मिथ्यात्व वृद्धिनो हेतु होवाथी साधुओने ज्यारे उपर दर्शाव्या मुजब बोलवानी साफ मनाइ छे, त्यारे श्रावकोथी ते कार्य करी केम शकाय ? कारणके श्रावको पण मिथ्यात्वना त्यागी होय छे. मिथ्यात्वनी बाबतमां श्रावको कांइ साधुथी जुदा पडी शके तेम नथी. जेटलो फरज मुनिमहाराजने मिथ्यात्वथी

वचवानी छे तेटलीज श्रावकोने पण छे; तेमां न्यूनाधिक थाय तेम नथी अत एव अमे आशा राखीए छीए के जेनजाइर्ड आवा प्रजाविक धुरधर आचार्य महाराजना वाक्यामृतनु पान करी तेने मान आपवा साथे तेवा मिथ्यात्व वृद्धिना कारणने उन्मूलन करवा त्वराथी कटिबद्ध थशे जो तेम नही करे तो अमे खुल्ला शब्दोमां कही शकीए छीए के तेर्ड पोताना कर्तव्यथी चुस्या गणाशे, तेमां कांइ पण शक नथी इत्यलं विस्तरेण ॥

प्रश्न ६० जैनवर्गमा पितृनिमित्त श्राद्ध करवानी वूट छे के नहीं ?

उत्तर जैनोमां श्राद्ध करवानी वूट नथी, तेथीज अंबिकाए तेम न करता मुनिने दान आप्यु हतुं तेनु वृत्तात श्रीजिनमडनगणिकृत श्राद्धगुणविवरणमां आ प्रकारे आपेलु छे—

श्रीरैवतगिरि पासे आवेला कुबेरपुरमां देवभट्ट अने देविलानो पुत्र सोमभट्ट नामे ब्राह्मण निवास करतो हतो. तेनी अंबिका नामनी स्त्री स्वभावथी दानप्रिय हती. तेने सिद्ध अने बुद्ध नामे बे पुत्र थया हता. एकदा श्राद्धना दिवसे मासोपवासी साधुने तेणे भक्तिभावथी अने हर्षथी दान आप्युं. ते जोइ देहधारी राक्षण जेवी तेनी पाडोशण हाथ उंचा करी उभी थइ, अने मोटा अवाजथी जेमतेम बकवा लागी, एटलामां गृहांतरथी तेनी सासु पण आवी पहोंची, अने पाडोशणनां तेवां वचनो सांभली वहु उपर क्रोध करी सोमभट्टने ते बिना कही दीधी; त्यारे सोमभट्ट बोल्यो के–अरे पापणी ! आ तें शुं कर्युं ? हजु सुधी कुलदेवतानी पूजा करी नथी, पिंडो भर्या नथी, ब्राह्मण पण जमाड्या नथी, ते

पहेलां तें मुनिने दान केम आप्युं? एम कही घरमांथी काढी मूकी ते पण वे छोकराने लइ घरथी नीकली गाममां कोइ जगाए स्थान न मलवाथी नगर बहार जती हती, तेवामां थाकी गयेला छोकराए जलनी मागणी करी त्यांथी आगल चालता शीलना प्रभावथी सूकुं सरोवर जलथी भरेलु अने शुष्क आंबो फलयुक्त थयेलो दीठो जेटलामां जल अने फलादिकथी सुखी थयेली ते, आंबानी छायामां चैनथी विसामो ले छे, तेटलामां तेनी सासु घरनी अंदर गइ ते दरमियान अंबिकाना शीलना प्रभावथी तथा मुनिदानना महात्म्यथी शासनदेवताए करेलां मुनिदानस्थाने आसनोने सोनानां अने अन्नकणोने मोती थयेला, तथा भोजनोमा जेवी हती तेवी अग्रशिखाने जोइ खुश थयेली ते पुत्रने कहेवा

लागी के हे वत्स ! गुणवती, सरल अने सती पतिव्रता वधूने तुं जलदी पाछी लइ आव. सोमजट्ट पण ते महात्म्य जोइ पश्चात्ताप करतो तेनी पाछल गयो. तेने आवतो जोइ डरथी कमकमाट करती अंबा पुत्रो सहित कुवामां पमी. जैनमुनिने आपेला दानना ध्यानमां तत्पर रहेली ते शुज्ञ अध्यवसाये पंचत्व पामी आ फानी डुनियानो त्याग करी कोहंड विमानमां अंबिका नामे महर्द्धिक देवी थइ. लोकापवादथी डरेलो सोमजट्ट पण कुवामां झंपलाइ पड्यो, अने तेज विमानमां ते देवीना वाहन तरीके सिंहरूपने धारण करनार देव थयो. इत्यादि श्राद्धनिषेधना अनेक दाखलाओ जैनशास्त्रमां मोजुद छे.

तथा जैन यशश्चंद्रकृत मुद्रितकुमुदचंद्र नाटकग्रंथमां एक काव्य आपेलुं छे. तेमां जणाववामां आव्युं छे के “ एक

स्थानमां विचरतो अने जीवतो एवा पण कोइ माणस मित्रना आपेला पिंडवडे तृप्ति पामतो नथी, तेवु आपणे प्रत्यक्ष जोइए छीए, त्यारे जे लक्षमा न आवे तेवा शरीरने धारण करतो निर्जीव थयेलो मरीने क्या गयो, तेनो आपणने पत्तो नथी, छतां पिंडवडे कुतगने जेम तृप्त करवामा आवे तेवी रीते भोला लोकोथी ते प्रिय स्वजन पिंडदानथी तृप्त कराय छे आ ते केवो आश्चर्यजनक विधि छे ते जुवो—

॥ तत्काव्यं यथा ॥

एकस्थानचरोपि कोपि सुहृदा दत्तेन जीवन्नऽपि, प्रीतिं याति न पिंडकेन तदिद प्रत्यक्षमालोक्यते ॥ जातः क्वाप्यऽपजीवितश्च किल यो बिभ्रन्न-ऽलक्ष्यां तनुं,मुग्धै श्चेव स तर्प्यते प्रिय-जनः पिंडेन कोऽय विधि· ॥ १ ॥

पूर्वोक्त प्रकारे जैनशास्त्रकारो एके अवाजे आ बाबतने अमलमां मूकवानी ना पाडे छे. तोपण गतानुगतिक प्रवाहमां तणाता केटलाएक अज्ञान जैनो, ब्राह्मण अने वैष्णवोना देखादेखी श्राद्धक्रियाथी कागडाउने नोतरे छे. तेमने 'श्राद्धनी आ-वश्यकता' ए नामनुं एक नानकडुं पुस्तक जे सरस्वती प्रिंटींग प्रेसमां छपाइने बहार पडेलुं छे ते वांचवा हुं खास भलामण करुं छुं, अने तेमांथी केटलीक बाबतने अहीं दाखल करुं छुं. एक कविनुं कहेवुं छे के—

॥ तथाहि ॥

स्वर्गस्थिता यदा तृप्तिं, गच्छेयुस्तत्र दानतः ॥ प्रासदस्योपरिस्थानामत्र कस्मान्न दीयते ॥ १ ॥ मृतानामपि जन्तूनां, श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम्॥ गता-नामिह जन्तुनां, वृथा पाथेयकल्पनम्

" स्वर्गमां वेठेला तमारा पितृओ अहीं दान देवाथी तृप्त थइ जाय छे तो माल उपर वेठेला माणसनी तृप्ति नीचे अनाज राखवाथी केम नथी थती ? अने मरेलानी तृप्तिने माटे श्राद्ध होय तो जेना मातापिता परदेशमां जाय छे तेने खरची मोकलवानी शी जरुर छे ? तथा खावानुं रस्ता वास्ते नातु बधाववु ते पण व्यर्थ छे अहीं आपणे त्या मोकलवाने बदले ब्राह्मणना पेटरूपी डाकमां अनाज नाखी परदेशमां तेने पहोंचाडी आपशु "

कदापि एम कहेवामां आवे के जीवतां नथी पहोंचतु, पण मरी गया पछी पहोंचे छे, तो जला विचार करो के ज्यारे जीवता दश हाथ दूर वेठेलाने नथी पहोंचतु तो मरेलांने केम पहोंचे ? केटली असजवीत वात ?

॥ कथा पहेली ॥

एक दिवस गुरु नानकजी हरद्वार गया हता. त्यां गंगाकिनारा उपर माणसो पोताना मरेला पितृओनुं तर्पण करता हता. नानकजीए पूछ्युं भाइ! आ शुं करो छो? लोकोए जवाब आप्यो के अमारा स्वर्गवासी पितृओने जल पहोंचाडीए छीए. नानकजीए पूछ्युं के तमारा पितृओ क्यां छे? लोकोए कह्युं के पितृलोकमां. त्यारे नानकजीए गंगामां प्रवेश कीधो, अने पोते पण खोबेथी पाणी उछाळवा लाग्या. ज्यां लोकोनां कपडां पड्यां हतां त्यांसुधी पाणी उड्युं, त्यारे लोकोए कह्युं 'महाराज! शुं करो छो? अमारां कपडां भींजाइ जाय छे.' नानकजीए कह्युं 'अहींथी २०० माइल उपर मारुं खेतर छे ते तापथी सुकाइ जाय छे, तेने जल पहोंचाडुं छुं.' लोकोए पूछ्युं आटले बधे दूर जल केम पहोंची शकशे?

त्यारे नानकजीए कह्युं, जे जग्यानी मने खबर छे त्यां जो आ पाणी नहीं पहोंचे तो तमारा पितृओ के जेनो पत्तो नथी के पृथ्वीना कया भागपर छे, तेने तमे श्राद्ध तथा तर्पणथी अन्न जल केम पहोंचाडी शकशो ? वाचकवर्गे आ बाबत उपर बुद्धिपूर्वक विचार करवो

॥ कथा बीजी ॥

एक जाट हतो, तेनो पिता गुजरी गयो तेना मरी गया बाद तेना गोरमहाराजे शय्यादान, गोदान विगेरे अनेक प्रकारनां दानथी जाटने लुट्यो लुटवामां कोइ जातनी कचाश राखी नहीं, परंतु जाटना घरमां एक उत्तम घोडी रु ५०० नी हती ते गोरमहाराजनी नजरे पडी अने घोडी जोइने गोरमहाराजनो जीव तलपापड थवा माड्यो के आ घोडी केवी रीते जाट पासेथी पडावाय ? गोरमहा-

राजने रात्रे निद्रा पण आवे नहि. एम करतां करतां बेत्रण दिवस नीकली गया. अंते एक युक्ति गोरने हाथ लागी. तेथी एक दिवस सवारना सात आठ वागे जाटने घेर गोरमहाराज जइ पहोंच्या. जाटे आदरसत्कार करी महाराजने पूछ्युं, केम महाराज ! शी आज्ञा छे ? गोरमहाराजे लाग जोइ कह्युं के दुनियामां दीकरा होय ते तमारी जेवाज होजो के जेणे बापने तार्यों. आजे सवारे छ वागे जरा मारी आंखमां निद्रा हती, अने कांइक जागतो पण हतो, एटलामां जाणे तमारो पिता, जे कपडां विगेरे तमे मने आप्यां हतां ते पहेरीने मारी सामे हाथमां तमारो आपेलो हुको विगेरे लइने आवी उभो, अने मने कहेवा लाग्यो के 'मारा सुपात्र दीकराने कहो के तारा आवा प्रकारना दानपुन्यथी तो हुं बहुज राजी थयो छुं, पण मारी घोडी विना हुं बहुज हेरान

थाउं छुं, वास्ते तमे आजने आज घो-
मीनु दान करावी लो, तो पठी मारा
जेवो पितृलोकमां कोइ सुखी नहि.'
त्यारे जाटे कह्युं के 'महाराज! मारे
सरकारनो कर जरवानो ठे, तेथी आ
घोमी वेची तमने एक घोमी अपावी
दउ' ते सांजलीने तो गोरना मनमां जूत
जरायु के आ जाट तो लपसवा मांड्यो,
तेटलामां जाटनां कोइ सगा त्यां आवी
पहोंच्यां तेमणे ज्यारे आ वात सां-
जली त्यारे गोरनी तरफेण लइ जाटने
ठपको आपवा लाग्यां के वाह! वाह!
बाप दुःखी थाय अने तुं एक घोमी
आपवाने आनाकानी करे! त्यारे बि-
चारो जाट चोंठो पड्यो अने ते वखते
तो घोडीनुं दान करी दीधु, पण विचार
करतो बेठो के आ गोरे नागरुदाइ क-
रीने घोडी तो लइ लीधी, हवे कर

केम चुकवाशे ? आ घोडीना पैसा करी तेमांथी बीजुं हलकुं घोडुं लइ गयो होत तो शुं मारो बाप नाराज थात ? आ वखते मारे केटलुं दुःख छे के कर जरवानुं जरा मोडुं थाय तो बंदीखानामां जवुं पडे; एटली दया शुं मारा बापने न उपजत ? आवो जुलम वली होय ? जो मारो बाप खरेखरो दुःखी थतो होत तो मने आवीने स्वप्नमां केम न कह्युं ? आ तो कांइक तमाशा जेवी वात लागे छे. जाट काचो न हतो. तेणे एक एवी तदबीर रची के बीजे दिवसे सवारना पहोरमां गोरने घेर पहोंच्यो, अने बराडे बराडा पाडवा मांड्यो के 'जलदी करो, जलदी करो.' त्यारे गोरे कह्युं 'केम भाइ! बूमो पाडो छो ?' त्यारे जाट बोल्यो के जलदी करो. मारो बाप स्वर्गमां बहु बीमार छे. तमो काले जे घोडी लइ

गया ते संबधमां आज मने स्वप्नमां आवी कहेवा लाग्यो के घोडी घणा दिवसथी बांधेली होवाथी हुं जेवो तेना उपर स्वार थयो के तरत घोडीनी मस्तीथी हुं नीचे पडी गयो मारो पग तुटी गयो ते में अहियां स्वर्गना वैद्यने बताव्यो तो वैद्यराजे कह्युं के गोरदेवताने घेर बोलावी, तेना पग उपर धगधगतो गरम लोखंडनो सळीउं लगाववो जोइए, तो तारो पग साजो थइ जाय वास्ते गोरमहाराज जलदी चालो सळीउं धगावी तैयार करी आव्यो हुं हवे बीलकुल वखत न करो मारा बापने दुःखी जोइने मने आ वखत कांइ सुजतु नथी विचारा पुरोहितनां मोतीआं मरी गयां, पण जाट तो तेनो हाथ पकडी खेचवा मंडी पड्यो गोर तो मनमां निसासा मूकी पश्चात्तापमां पड्यो के आ घोडी

हुं क्यांथी लाव्यो ! तेणे मनमां जाण्युं के आ तो जंगली जात छे, गरम सलीउं चांपी देशे; 'आ तो लेने गइ पुत तो खो बेठी खसम' एना जेवुं थयुं. त्यारे गोरमहाराज उचर्या के 'अल्या, घेलो थइ गयो छे. वली मारा पग उपर सलीउं चांपवाथी तारा पिताने ते कोइ दिवस आराम थतो हशे ? आवी जंगली वातो शुं करे छे ?' त्यारे जाट बोल्यो के 'महाराज ! मानमां रहीने घोडी पाछी लावो, तमने घोडी आपवाथी मारा पिताने घोडी पहोंची गइ एनी शी खात्री ? ज्यारे तमारा मनमां खात्री नथी तो पछी मारा मनमां खात्री क्यांथी थाय ? जो घोडी राखवी होय तो चालो मारी साथे अने तमारा पग उपर मने सलीउं चांपवा द्यो. भला, कंइ पगे लंगडुं थवानुं कोइने मन थाय ?

हरामनुं खावाने सर्वेने मन थाय ' आ प्रमाणे कही जाट घोकी छोडी लाग्यो अने महाराजने गाळो देवा लाग्यो वळी कहेवा लाग्यो के महाराज ! कलियुग आववा लाग्यो छे, तेथी हरामनुं खावानुं बंध थवानो वखत आव्यो छे वास्ते वाचकवर्गनु खास ध्यान खेचवानुं के आज तो दुनियामां ' मीठा मीठा गडपगरूप अने करूवा करूवा थूथू ' एवो रिवाज पड्यो छे वास्ते आंख उघाड्या विना चाले तेने खाडामा पड्या विना छुटको नथी वली नीचली कथाथी साफ जणाशे के आज दुनियामां ढोंग सिवाय काइ जोवामां आवतुं नथी

॥ कथा त्रीजी ॥

एक मनुष्यनो पिता गुजरी गयो हता तेणे शय्यादान विगेरेनी क्रिया

करी, त्यारे ब्राह्मणोए कह्युं के 'अमने जे आपशो ते तमारा पिताजीने पहों-चशे; तथा तमारा पिताजीने मिष्ट पदार्थो घणाज प्रिय हता तेथी अमोने पण खुब मिष्टान्न खवडावो.' आथी तेणे पुरोहितने उत्तम उत्तम पदार्थो खवडाववानी गोठवण करी अने नोतरुं आप्युं. ज्यारे महाराजो जमवा बेठा त्यारे बिचारा ओला यजमाने पोताना पिताने अफीणनुं बंधारण होवाथी दश पंदर तोला अफीण पण मंगाव्युं हतुं अने ते पण महाराजने उत्तम पदार्थो साथे खावानी विनंति करी. त्यारे महाराजनां धोतीआं हाथमां रह्यां, अने जाण्युं के आना मनमां तो पोताना पिता जेगा अमने करवानो विचार छे. आपणा तो वार वागी जाय. पछी गोरमहाराजे कह्युं के 'भाइ! जे खवातुं होय ते ख-

वाय ' यजमाने कह्युं के ' क्यां खावा वास्ते छे? आ तो मारा पिताने पहोंचाडवा वास्ते छे ' गोरे कह्युं के ' पहोंचतुं तो कांइ पण नथी, पण अमारो पेट भरवानो उपाय छे ' आ उपरथी वाचकवर्ग समजी शकशे के श्राद्धथी आलसु ब्राह्मणोना पेट भरवा सिवाय बीजु काइ पण होय तेम लागतुं नथी

॥ मृत श्राद्ध विषे केटला-
एक सवाल ॥

१ कागडा अने पितृउने शो संबंध छे के जेथी विशेष करीने श्राद्धमां कागडाउने भोजन वास्ते बोलाववामां आवे छे ? अने जो कागडा न आवे तो शामाटे पितृउनी अवगति मानवामा आवे छे ?

२ त्रण पेढी सुधीज श्राद्ध करवानो रिवाज छे त्यारे पाचमी पेढीना पितृउनी शी गति थती हशे ?

३ जे माणसो अपुत्र मरी जाय छे तेउने पोताना धर्मानुसार स्वर्ग मळे छे के नहीं ? केमके शुकदेवजी, जीष्मपितामह, पंचशिखादि घणा रुषिउए पोतानो विवाहज कर्यो नथी. ते लोकोनी हिंदु मतानुसार कइ गति थइ छे ?

४ पितृउ कया शरीरथी ग्रहण करे छे ? जो कहो के स्थूल शरीरथी, तो मनुष्योने पितृउ जोवामां केम नथी आवता ? जो कहो के सूक्ष्म शरीरथी ग्रहण करे छे, तो स्थूल पदार्थोनुं सूक्ष्म शरीरथी ग्रहण करवुं बीलकुल असंजवित छे.

५ एक माणसने चार छोकरा छे अने चारे छोकरा जुदा जुदा शहेरमां रहे छे अने चारे छोकरा एकज दिवसे श्राद्ध करे छे, ता ते पितृ चारेनुं जोजन केवी रीते ग्रहण करी शके छे ?

६ स्त्रीउने श्राद्ध करवानो अधिकार नथी, तो श्राद्धनु जोजन करवानो शो अधिकार ठे ?

७ जीवनी पोताना कर्मानुसार गति थाय ठे के नहीं ? जो थाय ठे तो मृतक श्राद्ध करवानुं शु फल ?

८ जे जातिउने श्राद्धनो अधिकार नथी तेना पितृउ बीजाना पितृउनो खोराक मारफाड करी पचावी लइ खाइ जाय ठे के जूख्याज पड्या रहे ठे ? जो जूख्याज पड्या रहे ठे, तो ते विचाराउना दिवस केम करी व्यतीत थता हशे ?

ए ज्यारे जीव शरीर ठोडे ठे त्यारे तेना पाठल दश एकादश द्वादश विगेरे जे श्राद्ध करवामां आवे ठे तेमां पयस देवाथी एक वर्ष सुधी तृप्त रहे ठे, तो वचमां कर्णागतमां पण श्राद्ध करवुं ए विचारा पितृउने बीमार करवा बरोबर ठे. ज्यारे

तेउं बीमार थता हशे त्यारे तेने औषध कोण आपतुं हशे ? अने वगर औषधीथी पिण विचारा बीमार रहेता हशे, कारणके अजीर्ण सर्वे रोगनुं मूल छे. इत्यादि ॥

प्रश्न ६१. साधु साध्वीउ 'वर्त्तमान योग' कहे छे तेनुं शुं तात्पर्य छे ?

उत्तर. आयुष्यनो विश्वास नथी अने कार्योमां घणा अंतराय आवी पमे छे, माटे साधुउ वर्त्तमान योगथी व्यवहार चलावे छे.

॥ तथाहि ॥

आउस्स न विसासो,कज्जस्स बहुणि अंतरायाणि ॥ तम्हा साहूणं वट्टमाणजोगेण ववहारो ॥ १ ॥

प्रश्न ६२. त्रण अक्षरनुं नाम छे तेमांथी प्रथम अक्षरने बाद करतां जलधिमां रहेल अदृश्य पदार्थनुं नाम थाय

छे, मध्यनो वर्ण अलग करतां पृथ्वीमां वर्णनीय व्रतनु नाम नीकले छे अने अन्त्याक्षरने हीन करतां शरीरने कंपावनारनु नाम प्रगटे छे, ते त्रण अक्षरना नामवाला तीर्थंपतिने हु नमन करुं छु एवी रीते समस्याकार कहे छे ते तीर्थंकर कया समजवा ?

॥ समस्याकाव्यं यथा ॥

आद्येन हीनं जलधावदृष्टं,
मध्यन हीनं भुवि वर्णनीयम् ॥
अंतेन हीनं धुनुते शरीरं,
तन्नामक तीर्थपतिं नमामि ॥१॥

उत्तर 'शीतल' ए त्रण अक्षरमांथी प्रथम अक्षर बाद करतां ' तल ' रहे छे, ते समुद्रमां अदृश्य छे मध्य वर्ण रहित करता ' शील ' रहे छे, ते पृथ्वीमां प्रशसनीय छे. अंत्याक्षर वर्जवाथी शीत

रहे छे, ते शरीरने कंपावी नाखे छे. ते त्रण अक्षरना नामवाला श्रीशीतलनाथ स्वामी समजवा. तेमने समस्याकारक नमस्कार करे छे.

प्रश्न ६३. तीर्थयात्रामां सूतक लागे के नहीं ?

उत्तर. तीर्थयात्रामां सूतक न लागे.

॥ यतः श्रीआचारदिनकरे ॥

स्वकुले तीर्थमध्ये च, तथावश्ये बलादपि ॥ षष्ठी पूजनकाले च, गणयेन्नैव सूतकम् ॥ १ ॥

प्रश्न ६४. अति क्षुधातुर, तृषातुर अने थाकेला मनुष्ये तत्काल जल पीवुं के नहीं ?

उत्तर. अत्यंत भूख, तरस अने श्रमवालाए एकदम पाणी न पीवुं, कारणके तेम करवाथी साते धातुउ कोपायमान

थाय छे, अने वात, पित्त, श्लेष्मादि दोषो उत्पन्न थाय छे

॥ यदुक्तं कुवलयमालायाम् ॥

यत्किल दुःसहतृषाक्षुधापरिश्रमभाजिनाऽपि देहिना तत्क्षण पयो न पेयमिति । यस्मादेते सप्तापि धातवः प्रकुप्यंति वातपित्तश्लेष्मादयो दोषा उत्पद्यंते ॥

प्रश्न ६५ भूत, पिशाच अने राक्षसो कवल आहार करे के नही ?

उत्तर भूत पिशाचादि कवल आहार करता नथी, पण बालकोना जेवी क्रीमा करे छे अने भक्षण करता होय तेवी माया देखाडे छे

॥ तदुक्तं कुवलयमालायाम् ॥

गौतमेन पृष्टं भगवन् किमु पिशाचा राक्षसाश्च कावलिकमाहारं

कुर्वंति किं वा न ? ज्ञगवता आ-
ज्ञप्तं गौतम ! न कुर्वंति प्रकृत्या व्यं-
तरा अमी बाला इव क्रीमां कुर्वंति
महामांसं ज्ञुक्तमिति मायां दर्शयति ॥

उपरना लेखथी सिद्ध थाय ठे के देवता
देवीउनी आगल तेमने तृप्त करवा अ-
ज्ञानीउं पशुपक्षीउनो वध करे ठे ते
फजुल ठे अने निरपराधी प्राणीउने
मारवाथी केवल घातकीपणुंज तेउं करे ठे;
कारणके कवल आहारी न होवाथी देवता
देवीने कांइ लाज्ञ नथी. तेम जे इरादाथी
वध करवामां आवे ठे ते इरादो बर न आव-
वाथी वध करनारने पण कांइ फायदो नथी.
फक्त बिचारां मुंगां प्राणीनो वचमां घाट
घमाइ जाय ठे. ते बिचारां करगरी पो-
कार करे ठे, पण तेमनी दाद कोण सां-
ज्ञले ठे ? जीवदया प्रतिपालक बिरुदने
धारण करनारा हिंडु राजाउए ज्यारे ते-

मनी दाद न साजली अने पोताना प-
वित्र बिरुदने वट्टो लगाड्यो त्यारे अमे-
रीकन राज्यमां तेमनी अरजी पसार
थइ अने तेमने अदल न्याय मळ्यो ते
आवी रीते–

॥ जीवदयानी खरी लागणीथी
राजसभामां रजु थएली प-
क्षीओनी अरजी. जैन-
पत्र ता. २२ मी
एप्रिल सने
१९०६ उप-
रथी ॥

" अमेरीकाना मेसेचुसेट्स नामना राज्यनी राजसभामां पक्षीओना रक्षण माटे जाणे पक्षीओ पोतेज करगरीने विनति करता होय एवी ढबमां त्याना वग सभासद मी ज्योर्जहोरे अरजी

रजु करी हती. जे सांजली राजसजामां पक्षीउने नहीं मारवानो कायदो पसार करवामां आव्यो हतो. आ अरजी ला- गणीवाली तथा वांचवालायक होवाथी जेमनी तेम नीचे आपीए ठीए.

मासेच्युसेट्स राज्यनी राजसजाना अध्यक्ष अने सजासदो,

आ राज्यना मधुर गायन गानारां पक्षीउनी तमो नामदारनी हजुरमां नम्र अरजी ठे के तमो अमारा विषे जे जाणो ठो ते करतां अमो तमारा विषे थोडुं जाणता नथी. तमो जला ठो अने गरीब, बीमार अने जूख्या माणसो ते- मज लुला, लंगमा अने बेहेराउं माटे तमे बांधेलां मकानोनां ठापरा उपर अमे नाचीए ठीए तथा घरोनी बारीउमांथी जोइए ठीए. अमे जाडमां माला बांध्या ठे अने तमारां बालबच्चां तथा गरीबो

माटेना वागवगीचाउंमां अमे घणां घणां गायनो गायां छे देशना मोटा जागमां अमे सूर्यनो प्रकाश पडे त्यांसुधी उडीए छीए जेम तमे अमेरीकाना छो तेम अमे पण अमेरीकनज छीए तमारी माफक अमारामांनां केटलांक पक्षीउं पण समुद्र उलंगीने अत्रे आव्यां छे घणां खरां तो लांबो वसवाट करीने अत्रेज रह्यां छे, अने तमारा वडवाउंने अमारामानां घणां खरांउंए पहेलो आवकार आप्यो हतो, एटलुंज नहीं पण अमारां मातापिताए तमारां मातापिताने खुश करवा बन्यु तेटलुं कर्युं हतु आपनी हजुरमां एक खेदजनक वात निवेदन करवानी छे के वगर विचारना अनाडी लोको अमारो नाश करवानी तजवीज करे छे अमारा पीछां सुंदर होवा माटेज तेउं अमोने मारी नाखे छे सौभाग्यवतीउं

अने प्यारी छोकरीउं जे अमारा उत्तम मित्रो छे तेज अमारा सहोदरने मारी नाखे छे, ने तेम करी तेमनां सुंदर पीछां टोपीउंमां नाखे छे. कोइ वखत मोजशोखने खातर अमोने मारी नाखे छे. निर्दय छोकराउं अमारो मालो लुंटी जाय छे. अमारी जगो जाणे आकाशमांज न होय तेम बंडुको अने जालथी अमोने नसाडे छे. आवी स्थिति चालु रहेशे तो तो पक्षीउंनी जड मूलथी नीकली जशे. जे देशो पक्षीउंथी भरपूर हता ते आजे उजड थया छे. इटालीमांथी बुलबुलनो सदंतर नाश थयो छे, माटे अमने कमोते मारी नाखवामां आवे छे तेमांथी बचावशो. तमे कायदो कर्यो छे के पक्षीने मारवुं नहीं, तेम इंडांनो नाश करवो नहीं. तेवोज बीजो कायदो करशो के कोइए अमारां पीछां पहेरवां

नहीं तमारी छोकरीउं पीगं विना सुं-
दरज छे जो तमे ते कायदो करशो तो
तेनो वदलो वाळवानु अमे जाणीए
छीए तमारा छोकराउंए स्वच्छ केम र-
हेवु ते शीखवीशुं सलाहसंपथी केम
रहेवु ते अमे अमारा दाखलाथी देखा-
डीशुं अमे एवा सुंदर माला बाधीशु
के जे जोवानु तमोने मन थाय तमारा
बागवगीचामा अने फुलवाडीउंमा खे-
लशु तेमनां फलोने कीडाना उपद्रवथी
बचावीशु वसत तथा ग्रीष्मरुतुने अ-
मारा मधुर गायनवडे मनोहर बनावीशुं
जुन मासमां तमो फरवा नीकलशो त्यारे
तमारी पाछल उडी दिवसने खुशनुमा
बनावीशुं संध्याकाले थाकीने घेर आ-
वशो त्यारे चकलीउं तमोने जणावशे के
अमे केटला वधा आभारी छीए ? रा-
त्रिए पण गायन करी तमोने रीझवीशुं

અમે સહીસલામત થવાથી બીજાં પક્ષીઓ પણ આ રાજ્યમાં આવીને આશ્રય લેશે."

તેમજ ચાલતા વર્ષની પશુપ્રેમીઓની બજાર લંડનમાં તા. ૨૮-૨૯-૩૦ નવેમ્બરે ભરાઇ હતી. આ મંડળીનો હેતુ શોધખોળ માટે થતી પશુહિંસા અટકાવવાનો છે. આ બજારમાં ડ્યુકો, લૉર્ડ, કાઉન્ટો તથા તેમની ઉમરાવ પત્નીઓ વિગેરેની સંખ્યા ૧૨૫ થી વધારે હતી. બજાર જોવા જવાની ફી રુ. ૧૦ હતી. બજારમાં કોઇ ઉમરાવ સ્ત્રીઓએ ગાવાનો તો કોઇએ બીજા પ્રકારનો, એમ ભાગ ભજવ્યો હતો. લેડી બ્લોમફીલ્ડ તથા બેરોનેટ બારનેકોએ પુષ્પો વેચવાનો વિભાગ સાચવ્યો હતો. આવા ખાનદાન કુટુંબનાં મનુષ્યો ખરા ઉત્સાહથી ભાગ લે ત્યારે ગરીબ માણસો ઉપર કેટલી બધી અસર

थाय तेनो तो विचारज करवो वस ठे थयेली मोटी रकमनी उपज जनावरोना हकना रक्षण माटे लफत चलावनार मंडलीर्जने तेउंए अर्पण करी हती

आवी रीते विदेशी राज्योमां ज्यारे प्राणीरक्षणना उपायो योजवामां आवे ठे, त्यारे आर्य महाराजाउं शिकारे चढीने अने नवरात्रना पवित्र दिवसोमां तेमज दशेरानी स्वारी चढावीने पाडा अने गरीब घेटा, बकरा आदि मुंगा प्राणीउंनी कतल चलावे ठे ए केटलु वधुं शोचनीय ठे !

अहीं उपयोगी होवाथी धी इन्डियन एडवरटाइझर ता २१ मी सप्टेम्बर सने १ए०६ ना पत्रमां आवेलो 'देशी राज्यो ने दशेराना पवित्र तहेवार' ए मथाळावाळो लेख रजु करीए ठीए

" हिंडु लोकोमां दशेराना दिवसने

रमो धर्मः' ए सूत्र केवी रीते आर्यधर्ममां उत्कृष्ट पद पाम्युं ? केटलाएक नोला अंधश्रद्धालु मनुष्यो कहे छे के मातानुं करोछुं छे, तेम नहीं करीए तो माताने कुडुं परुशे. अरे ! जे माताने तमे महादयालु, नक्तवत्सल, आखी सृष्टिनी जनेतारूप मानो छो ते पोताना एक बालकना रुधिरपानथी संतुष्ट थशे? तमे ते माताने, तमारा धर्मने ने आखा आर्यावर्त्तने आवा डुष्ट कर्मथी कलंक लगाडो छो.

केटलांक राज्योमां जैन कोन्फरन्सनी वखतो वखतनी अरजीउथी आवा डुष्ट रिवाजो बंध थयेला छे, त्यां शुं देवदेवीउए असंतुष्ट थइ तेमने आफतोमां गरक करेल छे ? बीलकुल नहीं.

आवां निरपराधी मुंगां उपयोगी प्रा-

णीउंने विना कारणे मारी नाखवाना रिवा-
जथी राजा महाराजाने गौब्राह्मण प्रतिपाल
निराश्रिताधार, प्रजापालक, न्याय दया
क्षमावान् विगेरे इल्कावो आर्यतनुजो
मारफते माताए मोकल्या हशे ? आगल
शु आवा रिवाज हता ? पुराणो तपासतां
आवा दाखला कोइ मली आवता नथी.
पशुवध ए शास्त्ररीति नथी अमे राजा
महाराजाउंने विनंति करीशु के हिंदुउंना
तहेवारोना दिवसे पशुवध करवानी सलाह
आपनार शास्त्री पासे आर्यमाता तरफथी
मलेला इल्कावोनो अर्थ करावो

हिंदु राजाउं एकदम आ रिवाजने
देशवटो आपी मुगा अवाचक प्राणीउंना
जीव उगारी, सनातन आर्यधर्मनी रक्षा
करशेज एवु धारी अमने आ प्रसगे आ
लखवानी जरूर जणाइ छे

प्रश्न ६६ उपरना लेखो सिवाय कोइ

शास्त्रीय पुरावो एवो छे के जेथी आ घातकीपणानो दुष्ट रिवाज नाबुद थाय ?

उत्तर. श्रीयोगशास्त्रमां एवुं फरमान छे के विघ्ननी शांतिने माटे करेली हिंसा पण निश्चयथी शांति न करतां उलटी विघ्नने वास्ते थाय छे, तेम कुलनो नाश करनारी थाय छे.

॥ तथाहि ॥

हिंसा विघ्नाय जायेत, विघ्नशांत्यै कृताऽपि हि ॥ कुलाचारधियाप्येषा, कृता कुलविनाशिनी ॥ १ ॥

आ श्लोकना आधारे वडोदराना सद्गृहस्थोए गायकवाड सरकारने अरजी गुजारतां ते नामदार सयाजीराव गायकवाडे दशेराना दिवसे थतो पाडानो वध बंध कर्यो छे, ते बदल तेमने मोटुं मान घटे छे; परंतु हजु ते नामदारना राज्यमां घेटां बकरांनो वध चालु रहेलो छे, ते

आवा सुधरेला राज्यकर्त्ताने लज्जास्पद छे अमे आशा राखीए छीए के तेओ अयोग्य कुलपरपराने न वलगी रहेतां जलदीज आ पामर पशुओने निरर्थक मरता बचावी तेमनो आशीर्वाद लेशे आ प्रसगे धरमपुरना राजा प्रमुख जे जे राजा महाराजाए दशेराने दिने थतो पशु-वध अटकाव्यो छे तेमने धन्यवाद घटे छे; अने जे जे राज्योमां अंध परंपरा चालती होय त्यानां सत्ताधीशोए "आत्मवत्सर्वभूतानि, य पश्यति स पश्यति" ए पुराण वाक्यार्थनुं मनन करी सर्व जीवो तरफ आत्मवत् नजर करी खरेखर देखता थवु जरूरनु छे

प्रश्न ६७ शिकारथी मार्यां जतां हरणो तरफनो पोकार कोइ शास्त्रमा उठावेलो छे ?

उत्तर "हिंसादि अष्टक" नामना

ग्रंथमां हरणोना बचाव माटे हरणो पोते-
ज जाणे पोकार करी निवेदन करता
होय तेम एक कवि तेमना शब्दोमां क-
हे छे के ' अमे जन्मवननो त्याग कर्यो,
तृणना अंकुरावाली माता जेवी वहाली
स्थली मूकी दीधी, विसामाना हेतुभूत
बंधु जेवां वृक्षोनी गणना न करी, बाल-
बच्चांना वियोगदुःखथी विधुरीत थयेली
हरणीने अर्ध मार्गे मूकी, तोपण अमारी
पदपंक्तिने ढूंढता आ निर्दय शिकारीओ
अमने छोडता नथी. '

॥ तदुक्तं हरिणाष्टके ॥

त्यक्तं जन्मवनं तृणांकुरवती मा-
तव मुक्ता स्थली, विश्रामस्थितिहेत-
वो न गणिता बंधूपमाः पादपाः ॥
बालापत्यवियोगदुःखविधुरा मुक्तार्द्ध-
मार्ग्गे मृगी, मार्ग्गतः पदवीं तथा-
प्यकरुणा व्याधा न मुंचंत्यऽमी॥१॥

उपरना काव्यमां दर्शाव्या मुजब क-रगरीने पोकार करतां पशुओनी दाद न सुणतां केटलाएक राजा महाराजाओ निरपराधी पशुपक्षीओनो शिकार करी मोटी शौर्यतानो दावो करे छे, अने सिंहनो शिकार कर्यो एटले तो जाणे शौर्यतानो अवधिज आवी गयो एम माने छे ते शिकारी महाराजा आदि घातकी पुरुषोने हु दयार्द्र चित्ते तेमना हित माटे कहीश के तेमणे खरा क्षत्रीत्वनु दिग्दर्शन करवा त्रिपृष्ट वासुदेवना दाखलारूपी दर्पणमां अवलोकन करवु, कारणके तेणे सापराधी सिंहने विदारण कर्यो हतो, तोपण आजकालना शिकारी राजा बादशाहोनी जेम चारे तरफथी रोकीने के कोलाहल करीने के गाजरो बनावीने के गफलतमा राखीने मार्यो न हतो तेनुं वृत्तांत श्रीजिनवल्लभसूरिकृत ' डुरिय-

रयसमीर ' प्राकृत काव्यनी श्रीसमयसुंदर उपाध्यायकृत वृत्तिमां आपेलुं छे. ते आ प्रमाणे–

एकदा शालिक्षेत्रना रक्षकोनुं भक्षण करी एक मोटो सिंह देशने उपद्रव करतो हतो. ते अपराधी सिंहने शिक्षा करवा रथारूढ थइ त्रिपृष्ठ वासुदेव अने तेमना भाइ बाल्यावस्थामां सिंहगुफाद्वार पासे जइ पहोंच्या, त्यारे सिंह सामो थयो. तेने जोइ न्यायवंत त्रिपृष्ठे विचार कर्यो के आ सिंह वाहन विनानो छे, तेनी सामे हुं वाहनारूढ थइ जइश ते केवुं अयोग्य गणाशे ! एम विचारी तेणे वाहन छोडी दीधुं. त्यार बाद वली तेणे विचार कर्यो के आ सिंहनी पासे कोइ पण जातिनुं हथियार नथी, छतां हुं हथियार लइ तेनी सन्मुख जाउं छुं ते केवो निर्लज्ज छुं ! आ ते शुं न्याययुक्त कहेवाय ? तेम विचारी पोतानां शस्त्रो मूकी दीधां

अने सिंह जेम पराक्रमथी ते सिंहना सामो चाल्यो तेने आवतो जोइ सिंह तो ताजुबी पामी गयो के 'प्रथमतो जे कोइ मने मारवा आवता ते फोज सहित सज्ज थइ आवता ते पण वची गया नथी, तो आ वली कोण अभिमानी हथियार रहित मारी सामे आवे छे ? एने हुं अभिमाननुं फल चखाडु' एवा इरादाथी जेवो ते त्रिपृष्ट उपर तलप मारवा गयो तेवोज त्रिपृष्टे तेना बन्ने होठ पकडी तेने कंठगत प्राण कर्यो त्यारे ते सिंह खेदयुक्त चित्ते कपवा लाग्यो ते वखते गौतमस्वामीनो जीव जे तेमनो सारथी हतो तेणे कह्युं–'हे मृगपति ! तुं चिंता करीश नहीं के मने एक हलका मनुष्यमात्रे मारी नाख्यो जेम तुं पशुपति सिंह छे, तेम आ पण नरपति सिंह छे ' आ उपरथी हालमां वाघनो शिका-

र करी वीरतानुं अभिमान धरावनारा प्रजापालक महाराजाओ केटला न्यायी अने शूरा छे ते स्पष्ट जणाइ आवे छे.

प्रश्न ६७. कोइ राजा शहेनशाहे धनुष्यबाणनो भंग करी शिकारनो त्याग कर्यो होय तेवा दाखला छे ?

उत्तर. श्रीहीरविजयसूरीश्वरजीए आपेला बोधथी हिंदना शिरताज नेकनामदार अकबर बादशाहे शिकारनो त्याग करी आग्राथी अजमेर सुधी प्रतिकोशने अंतरे मिनारा उपर हरणनां शींगडां चढावी शिकारनो त्याग दुनियामां जाहेर कीधो हतो. इत्यादि अनेक दाखला मोजुद छे. तथापि अहीं उपयोगी होवाथी काव्यमालामां मुद्रित थयेली तिलकमंजरीनी प्रस्तावनामां आपेलो धनपाल पंडित अने भोज राजानो दाखलो सविस्तरपणे आपीशुं तो ते अप्रासंगिक नहीं गणाय.

एकदा मुंज राजाए जेने 'साक्षात् 'सरस्वती' नो इल्काव आपेलो छे एवा धनपाल पंडितने शिकारे चढेला भोज राजाए पूछ्युं के 'हे धनपाल ! आ हरणो आकाशमा कूदे छे, अने भुंडो जमीन खोदे छे, तेनु शु कारण हशे ?' त्यारे धनपाले कह्युं के ' हे देव ! तमारां शस्त्रोथी चकित थयेला तेओ पोतपोतानी जातिनो आश्रय लेवा तेम करे छे हरणो चंद्रना चिह्नरूप हरणनु शरण चाहे छे, अने सूवरो वराह अवतारनो आश्रय लेवा चाहे छे ' त्यारवाद राजाए बाणवडे मृगने विंध्या पछी तेनुं वर्णन करवा धनपाल तरफ जोयु, त्यारे धनपाल वोल्यो के 'हे राजन् ! अहीं थयेलुं तमारुं पराक्रम पातालमां पेसो. आ तो कुनीति छे के अशरण अने निर्दोष एवो दुर्बल प्राणी वलवानथी

हणाय छे. हा ! हा ! महाकष्टनो विषय
छे के राजा विनानुं जगत् थइ पड्युं. '
आ प्रकारना तेना तिरस्कारथी क्रोध
पामेलो राजा बोल्यो के 'आम शामाटे
कहो छो ?' त्यारे धनपाले कह्युं के 'गमे
तेवा वैरी होय तोपण प्राणांते मुखमां
तृण ग्रहण करवाथी मार्या विना मूकी
देवामां आवे छे, अने आ निर-
पराधी प्राणीओ तो हमेशां तृण ग्रहण
करे छे, वास्ते तेमने केम मराय ?' आ
प्रकारे धनपाले कह्युं त्यारे अत्यंत उ-
त्पन्न थयेली दयावडे ते राजाए धनुष्य-
बाणनो भंग करवापूर्वक जीवितव्य
सुधी शिकारनो त्याग कर्यो.

अहीं प्रसंगोपात यज्ञमां मार्या जतां
पशुओना बचाव माटे ते कविवरे राजा-
ने करेलो बोध दर्शावीए छीए. शिकार-
नो त्याग करी घर तरफ पाछा फरतां

यज्ञमंरूपमां यज्ञने थांजले वांधेला वक-
रानी दयाजनक वाणी सांजलीने राजाए
धनपालने पूज्यु के 'श्रा वकरो शुं कहे-
ठे ?' श्रा प्रकारे पूठवाथी धनपाले कह्युं
के सांजलो–श्रा वकरो कहे ठे के 'हे य-
ज्ञ करनार ! हुं स्वर्गना उपजोग माटे
तृष्णातुर नथी श्रने मे स्वर्ग माटे तारी
प्रार्थना पण करी नथी, हुं तो तृण जक्ष
णवडे सतत संतुष्ट हुं वास्ते श्ररे लाय-
क नर ! मारा उपर श्रावो जुलम गुजा-
रवो तने युक्त नथी वली जो यज्ञमा
तारा मारेलां प्राणीश्रो निश्चे स्वर्गमा जाय
ठे तो तुं तारा मावाप श्रने पुत्र वंधुश्रोने
होमीने तेमने देवलोकमां मोकलवा य-
ज्ञ केम करतो नथी?' हे नरेंद्र ! श्रा प्र-
कारे श्रा वकरो पोकर करे ठे श्रावा ध-
नपालनां दयाजनक वचन सांजली कम-
कमी उठेला राजाए 'श्रा ते शो जुलम ?'

एम कही फरी बोलवानी प्रेरणा करी. त्यारे ते बोल्यो के "आवी रीते यज्ञमां यज्ञिय पशु बांधवानो थांभलो ऊभो करी, पशुना मुखमां जव भरी, निर्दयपणे कोणीओना प्रहारथी रीबावी रीबावीने मारी नाखी, तेमना लोहीथी कादव करी, आवा क्रूरपणाथी जो स्वर्गमां जवातुं होय तो नरकमां शाथी जवाय ? अने कोण जशे ? माटे एनो खरो अर्थ तो आ प्रकारनो छे के सत्यरूपी यज्ञस्थंभ, तपरूपी अग्नि, कर्मरूपी काष्ठ अने अहिंसारुपी आहुति आपवी. आ प्रकारनो यज्ञ करवो ते सत्पुरुषोने अभिमत छे. इत्यादि शुकसंवादमां कहेलां वचनो राजा आगल बोलतां अने हिंसाशास्त्रना उपदेशक हिंसक स्वभाववालाउ ब्राह्मणरूपे राक्षसो छे, एम ठसावतां ते धनपाले भोजराजाने अर्हत् धर्मनो अभिलाषी बनाव्यो.

॥ तथाहि ॥

किं कारणं नु धनपाल मृगा यदेते,
व्योमोत्पतन्ति विलिखन्ति भुवं वराहा ॥
देव त्वदस्त्रचकिताः श्रयितुं स्वजातिमेके मृगाङ्कमृगमादिवराहमन्ये ॥ १ ॥

राज्ञा बाणेन मृगे विद्धे सति तद्दर्शनाय विलोकितमुखो धनपालः प्राह ॥

रसातलं यातु तवात्र पौरुषं,
कुनीतिरेषाऽशरणो ह्यदोषवान् ॥
निहन्यते यद्बलिनापि दुर्बलो,
हहा महाकष्टमराजकं जगत्॥२॥

इति तन्निर्भर्त्सनात्क्रुद्धो नृपः किमेतत् ? इत्यभिदधानः—

वैरिणोपि हि मुच्यन्ते, प्राणान्ते

तृणभक्षणात् ॥ तृणाहाराः सदैवैते, हन्यन्ते पशवः कथम् ॥ ३ ॥

इत्यूचे. अतोऽद्भुतसंजातकृपेण नृपेण धनुर्बाणत्यागमङ्गीकृत्याजीवितान्तं संन्यस्तमृगयाव्यसनेन पुरं प्रत्यागच्छता तत्र यज्ञमंरूपे यज्ञस्तंभनियन्त्रितच्छागस्य दीनां गिरमाकर्ण्य किं पशुरसौ व्याहरति ? इत्यादिष्टः स धनपालः । अवधेहि इति प्राह

नाहं स्वर्गफलोपभोगतृषितो नाभ्यर्थितस्त्वं मया, संतुष्टस्तृणभक्षणेन सततं साधो न युक्तं तव ॥ स्वर्गं यांति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो, यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बान्धवैः ॥ ४ ॥

इति तद्वाक्यानन्तरं राज्ञा किमेतत्, इति जूयोऽजियुक्तः ॥

यूपं कृत्वा पशून्हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम् ॥ यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ ५ ॥ सत्यं यूपं तपो ह्यग्निः, कर्माणि समिधो मम ॥ अहिंसामाहुतिं दद्यादेव यज्ञः सतां मतः ॥ ६ ॥

इत्यादीनि शुकसंवादोदितानि वचांसि नरेंद्रस्य पुरतः पठन् हिंसाशास्त्रोपदेशिनो हिंसकप्रकृतीन्ब्राह्मणरूपेण राक्षसांस्ताञ्ज्ञापयन्नृपमार्हन्धर्माजिमुखं चकार ।

प्रश्न ६९ ढुंढको एम कहे छे के जे घरमांथी एक दिन आहार लीधो होय ते घरमां बीजे दिन साधु जिक्षा माटे जाय तो तेने नित्यपिंडनो दोष लागे. आ प्रकारे नित्यपिंडनो अर्थ करे छे ते ठीक छे के केम ?

उत्तर. ढुंढकोनो ए कल्पित अर्थ दुरस्त नथी; कारणके नियागनो अर्थ नियत थाय छे अने ते तो ज्यारे आदरथी कोइ निमंत्रणा करे के 'हे भगवन्! तमारे मारा उपर प्रतिदिन अनुग्रह करवो' आ प्रकारनी निमंत्रणा अंगीकार करी तेम करे त्यारे साधुने नित्यपिंडनो दोष लागे छे; परंतु स्वाभाविक जेने प्रतिदिन भिक्षा मले छे तेने आ दोष लागु पडतो नथी.

॥ तथोक्तं श्रीदशवैकालिकचूर्णौ ॥

नियागं नाम नियंयंति वुत्तं संभवइ तं तु यदा आयरेण आमंतियो भवइ जहा भयवं तुझेहिं मम दिणे दिणे अणुग्गहो कायव्वो तदा तस्स अप्भुवगछं तस्स नियागं भ-

वइ न तुं जस्स अहाभावेण दिणे दिणे भिक्खा लब्भइत्ति ॥

सारांश के ढुंढको जेम एक दिन वर्जी बीजे दिन तेज घरमां भिक्षा लेवा जाय छे तेम करवाथी सदोष आहारनो संभव छे, परंतु केटलाएक दिन लागट अने केटलाएक दिन वर्जी जवामां आवे तो सदोषनो संभव नथी

प्रश्न ३०. देवलोकमा कीडी, कुंथु, माखी, मच्छरादि क्षुद्र जीवो छे के नहीं ?

उत्तर देवलोकमां तुच्छ जीवो नथी, कारणके पंचेंद्रिय अने एकेंद्रिय जीवो त्रिभुवनमा छे, पण विकलेंद्रिय जीवो तो फक्त तिर्छा लोकमांज छे एकेंद्रिय जीवोमां पण पृथ्वी, पाणी अने वनस्पति बार देवलोक अने सात पृथ्वीमा छे तेमा वली पृथ्वी तो यावत् सिद्ध-

शिला सुधी छे अने बादर अग्नि मनुष्य-
लोकमांज छे. देवलोकनी वावडीउंमां
मच्छादि जलचर जीवो नथी. ग्रैवेय-
कादि उपरना देवलोकमां तो वावडीउं
पण नथी अने वावडीउंना अजावे त्यां
जल पण नथी.

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाशे ॥

पंचिंदिय एगिंदिय, उड्ढेय अहेय
तिरियलोयेय, ॥ विगलिंदिय जीवा
पुण, तिरियलोए मुणेयव्वा॥१॥पुढवी
आउ वणस्सइ, बारसकप्पेसु सत्तपु-
ढवीसु ॥ पुढवी जासिध्धसिला, तेउन-
रखित्ततिरिलोए ॥ २ ॥ सुरलोअवा-
विमज्जे, मछाइ नहि जलयरा जीवा ॥
गेविज्जे न हु वावी,वावी अजावे जलं
नहि ॥ ३ ॥

प्रश्न ७१. सामायिकनुं कालमान बे

घमीनुं शा कारणथी छे ? अने अनव-स्थित सामायिक कोने कहेवुं ? कदाचित् बे घमीथी वधारे टाइम थाय तो तेमां कांइ दोष छे ?

उत्तर. श्रीउपदेशचिंतामणि ग्रंथमां एवो लेख छे के ' पच्चक्खाणनी जघन्यथी पण बे घमीनी स्थिति होवाथी नमुक्कार सहिना पच्चक्खाणनी माफक सामायिकनी स्थिति पण मुहूर्त्त प्रमाण छे,' अने अनवस्थित सामायिक करवानु तो तेने कहेवाय के जे तत्काल पारे अथवा अनादरथी जेमतेम करे श्रीवंदितासूत्रनी अर्थदीपिका टीकामा मुहूर्त्तथी वधारे वेसवामा पण अदोप गणेलो छे.

॥ तथाहि ॥

सामायिकस्य मुहूर्त्तमानता प्रत्याख्यानस्य जघन्यतोपि मुहूर्त्तस्थितिकत्वान्नमस्कारसहितप्रत्याख्यानवत्

अनवस्थितकरणं तदुच्यते यत् त-
त्क्षणात् पारयति यथाकथंचिद्वाऽ-
नादरतस्तत् करोति ॥ अर्थदीपि-
कायां मुहूर्त्तादूर्ध्वमपि स्थाने न दोषः॥

प्रश्न ७४. नरकना जीवो नवीन स-
म्यक्त्व पामे के नहीं ?

उत्तर. सर्व नरकोमां केटलाएक नि-
र्दोष नरकवासीउ कर्म हलकां पमवाथी
नवीन सम्यक्त्वने पण पामे छे.

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाश १४ सर्गे॥

सर्वास्वऽपि क्षितिष्वासु, नारकाः
केचनानघाः ॥ नवीनमपि सम्यक्त्वं,
लभंते कर्मलाघवात् ॥ १ ॥

प्रश्न ७३. श्रीजिनपूजा अने प्रतिक्र-
मण क्यारे करवां जोइए?

उत्तर. किंचित् सूर्य उगे त्यारे प्रथम
जिनप्रतिमाउनी पूजा करवी अने अ-

कधो आदित्य अस्त थाय त्यारे पूजानी समाप्ति करी लेवी जोइए त्यार वाद प्रतिक्रमण करवु

॥ तदुक्तं श्रीउपदेशचिंतामणौ ॥

ईषदुद्गते सूर्ये प्रथमं जिनविंबानि पूजयति अर्धास्ते सा समाप्यते तदनु प्रतिक्रमण ॥

प्रश्न ३४ पूजा वखते पुरुष अने स्त्रीउंए केटलां वस्त्र धारण करवा जोइए ?

उत्तर पूजाक्षणे पुरुषोए वे वस्त्र अने स्त्रीउंए त्रण वस्त्र धारण करवा एवु श्रीउपदेशचिंतामणिमां कह्यु छे

॥ तथाहि ॥

नरेण वस्त्रद्वय नार्या तु वस्त्रत्रयं धार्यं इति ॥

प्रश्न ३५. देवताउं केवी नापा वोले ?

उत्तर. श्रीलोकप्रकाशमांथी एवो प्रकाश पडे छे के देवताउ ज्यारे बोलवानी इच्छा करे छे त्यारे रमणिक वर्णवाली अने चतुरना चित्तने चमत्कार करनारी अर्ध मागधी नाषावडे नाषण करे छे. श्रीनगवती सूत्रना पांचमा शतकना चोथा उद्देशामां पण एमज कह्युं छे.

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाशे ॥

विवक्षवस्त्वमी अर्ध-मागध्या रम्यवर्णया ॥ नाषंते चतुरस्वांत-चमत्कारकिरा गिरा ॥ १ ॥ नगवतीपंचमशतकचतुर्थोद्देशके तथैव प्रोक्तम्

प्रश्न ३६. देवताउने निद्रा होय के नहीं ?

उत्तर. यद्यपि देवता उंघता नथी तथापि तेमने प्रदेश उदयथी निद्रा होय छे. एम न मानवामां आवे तो

विद्यमान दर्शनावरणीय कर्मनो अनुदय थाय ते शी रीते घटी शके ?

॥ तथाहि लोकप्रकाशे ॥

प्रदेशोदयतस्त्वेषां, स्यात्तथाप्यन्था कथम् ॥ दर्शनावरणीयस्य, सतोप्य-नुदयो भवेत् ॥ १ ॥

प्रश्न ३७ दोगुंदक देवता कया छे ?

उत्तर भोगमां तत्पर एवा त्रायत्रिंश देवो दोगुंदक तरीके कहेवाय छे

॥ उक्तं च लोकप्रकाशे ॥

त्रायस्त्रिंशा देवा भोगपरायणा दोगुंदका इति भण्यंते ॥

प्रश्न ३८ देवताइ आहारनां पुद्गलो कोइ देखी शके के नहीं ?

उत्तर, देवताओने आहार करवा लायक पुद्गलोने निर्मल अवधिज्ञानरूपी नेत्र-वाला अनुत्तर विमानना देवता देखी शके

छे, बीजा देवताउ देखी शकता नथी.

॥ तथाच लोकप्रकाशे ॥

आहार्य पुजलाँस्तांश्च, विशुद्धा-
वधिलोचनाः ॥ अनुत्तरसुरा एव,
पश्यंति न पुनः परे ॥ १ ॥

प्रश्न ७ए. युगलिक तिर्यंचो काल
करी कइ गतिमां जाय ?

उत्तर. हिंसादि रहित युगलीया ति-
र्यंचो युगल धर्मनुं पालन करी निय-
मथी देवगतिमां जाय छे. एवो लोकप्र-
काशमां लेख छे.

॥ तथाहि ॥

तादृशा एव तिर्यंचस्तत्र हिंसा-
दिवर्जिताः ॥ पालयित्वा युग्मधर्मं,
गछंति नियमाद्दिवम् ॥ १ ॥

प्रश्न ७०. देवताउ घेला थाय
के नहीं ?

उत्तर देवताओ घेला थाय छे, तेमनी घेलछा लोकप्रकाशमां बे प्रकारनी वर्ण-वेली छे तेमां पहेली यक्ष प्रवेशथी अने बीजी मोहनीय कर्मना उदयथी थाय छे ते एवी रीते के ज्यारे कोइ महर्धिक देवता कोपायमान थाय त्यारे अल्प ऋद्धिवाला देवता उपर खराब पुद्गल नाखी क्षणवारमा तेने परवश बनावे छे, तेथी घेलो थयेलो ते देव मर्यादा विनानी चेष्टा करे छे

॥ तथाहि ॥

तथा ह्युन्मत्तता द्वेधा, देवानामपि वर्णिता ॥ एका यक्षावेशजन्या, मोहनीयोदयात्परा ॥ १ ॥ अल्पर्धिकं तत्र देवं, रुष्टो देवो महर्धिकः ॥ इष्टपुद्गलनिक्षेपात्कुर्यात्परवशं क्षणात् ॥ २ ॥

ततश्च यहिलात्मासौ यथा तथा विचेष्टते ॥

प्रश्न ८१. तमस्काय केवा स्वरूपे ढे ?

उत्तर. तमस्काय अप्कायना विकाररूपे ढे.

॥ तथाहि लोकप्रकाशे ॥

अवगाह्यारुणवर, नामधेयं पयोनिधिं ॥ योजनानां सहस्रान् द्वा-चत्वारिंशतमत्र च ॥ जलोपरितलादूर्ध्वमपूकायविकृतिर्महान्॥ १ ॥ तमस्कायो महाघोरांधकाररूपउन्नतः

प्रश्न ८२. कृष्णराजी केवा स्वरूपे ढे?

उत्तर. कृष्णराजी पृथ्वीपरिणाम स्वरूपे ढे.

॥ तथाहि लोकप्रकाशे ॥

यत्र रिष्टप्रस्तटेयं, तमस्कायश्च

निष्टित ॥ तस्यैंद्रकविमानस्य, रिष्टाख्यस्य चतुर्दिशम् ॥ १ ॥ जीवपुद्गलसत्पृथ्वीपरिणामस्वरूपिके ॥ द्वे द्वे च कृष्णराज्यौ स्तो, जात्या जनघनद्युती ॥ २ ॥

प्रश्न ७३ मिथ्यात्वीनी करणी सर्वथा निष्फल छे के केम ?

उत्तर मिथ्यात्वीनी करणी सर्वथा नकामी नथी ए तो निर्विवाद छे, कारणके तामलि तापसे अज्ञान तपवडे इंद्रत्व उपार्जन कर्युं अने सम्यक्त्व तथा एकावतारत्वने प्राप्त करी भवसमुद्र तर्यो अलवत ए तो निःसंशय छे के क्रोडोगमे वर्षे अज्ञानी जे कर्मने खपावे छे ते कर्मने त्रण गुप्तिवालो ज्ञानी पुरुष श्वासोच्छ्वास मात्रमा क्षय करवा भाग्यशाली बने छे

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

एवं तामलिनाबाल-तपसैशत्वम-र्जितम् ॥ सम्यक्त्वैकावतारत्वे, प्राप्य तीर्णो नवार्णवः ॥ १ ॥ जं अन्नाणि कम्मं, खवेइ बहुयाहिं वासकोडिहिं ॥ तं नाणी तिहिंगुत्तो, खवेइ उसास-मित्तेण ॥ २ ॥

प्रश्न ७४. विजय, विजयंत, जयंत अने अपराजीत ए चार विमानना देवता केटला नव करे ? तथा तेमनुं आयुष्य केटलुं होय ?

उत्तर. विजयादि चार विमानमां गयेला जीव उत्कृष्टा संख्याता नव करे अर्थात् चोवीश नवथी जादा न करे एवो वृद्धवाद छे; अने सर्वार्थसिद्ध विमानथी तो बेशक जीव एक नवमांज सिद्ध थाय छे. विशेष बिना एवी छे के

उक्त चार विमानमां बे वार उत्पन्न थ-
येला जीवो अनंतर भवमां अवश्य पर-
मपद पामे छे. पांचमा कर्मग्रंथनी वृ-
त्तिमां तो आ प्रकारे देखाय छे के विज-
यादि विमानमां बेवार गयेलो जीव पण
ससारमा केटलाएक भवभ्रमण करे छे
अने नरक तिर्यंच गति योग्य कर्म पण
बांधे छे, वास्ते इहां तत्त्व केवलिगम्य छे

योगशास्त्रमा अने तत्त्वार्थमा तो
(द्विचरमा) ए पाठने आ प्रकारे स्पष्ट
करे छे के विजयादिथी चवेला उत्कृष्टपणे
बे वार जन्म लइ मनुष्यपणामां मोक्ष
जाय छे. ते एवी रीते के विजयादि वि-
मानथी चवेलो जीव मनुष्य थाय, वली
तेज विमानमां जाय अने त्यांथी चवी
मनुष्य थयेलो ते जीव मोक्ष जाय छे
विजयादि चार विमानमा जघन्य ३१
सागरोपमनी अने उत्कृष्ट ३२ सागरोप

मनी स्थिति छे. त्यारे समवायांग सूत्रमां जघन्य ३१ सागर अने उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी स्थिति बतावेली छे.

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

विजयाइ विमाणेहिय, संखिजन्नवाउ बोधव्वा ॥ सव्वठाउ नियमा, एगंमि न्नवंमि सिजाये जीवो ॥

चतुर्विंशतिन्नवान्नातिक्रामंतीति वृद्धवादः चतुर्ष्वेषु विमानेषु, ह्युत्पन्ना हि जंतवः ॥ अनंतरन्नवेऽवश्यं, प्रयांति परमं पदं ॥ २ ॥

पंचमकर्मग्रंथवृत्तौ तु विजयादिविमानेषु ह्यर्गतोपि संसारे कतिचिन्नवान् ज्रमति नरकतिर्यग्गतियोग्यमपि कर्म बध्नातीति दृश्यते तदत्र तत्त्वं केवलिगम्यम् ॥

योगशास्त्रे तथा तत्त्वार्थे ह्रिच-रमा ॥ इति तदेव स्पष्टयति विजया-दिष्वश्च्युता· परं उत्कर्षेण द्विर्जनित्वा मनुष्येषु सिद्धिमधिगच्छति विजयादि-विमानाच्च्युतो मनुष्यः पुनरपि तत्र देवस्ततश्च्युतो मनुष्यः स सिद्ध्य तीति ॥ एकत्रिंशद्वारिधयश्चतुर्पु वि-जयादिषु ॥ स्थितिजघन्योत्कृष्टा तु, त्रयस्त्रिंशत्पयोधय· ॥ ३ ॥

समवायांगे तु जहन्नेणं बत्तीसं सागर० उ० तेत्तीस ॥

प्रश्न ७५ छंदना अने निमंत्रणामां शुं फरक छे ?

उत्तर पोते ग्रहण करेला आहारा-दिकनी गुरुमहाराजादिने आपवा प्रथम प्रार्थना करवी तेने आगममां छंदना

दादक्षयो मोक्षः प्राप्यते अन्यसिद्धिप्राप्तौ किमाश्चर्यं ॥

प्रश्न ७७. चोवीश तीर्थंकरना मातापिता कइ गतिमां गया छे ?

उत्तर. श्री ऋषभदेवजीना पिता नागकुमारमां गया छे; अने शेष तीर्थंकरना पिताउमांथी सात इशान देवलोके, आठ सनत्कुमार देवलोके अने आठ माहेंद्र देवलोके गया छे तथा आठ तीर्थंकरनी माताउ सिद्ध थइ छे, आठ सनत्कुमार देवलोके गइ छे अने आठ माहेंद्र देवलोके गइ छे. एवुं श्री लोकप्रकाशथी जाणवुं.

॥ तथाहि ॥

उसभपिया नागेसु, सेसाणं सत्त हुंति इसाणे॥ अठ्य सणंकुमारे, माहिंदे अठ बोधव्वा ॥ १ ॥ अठसणं

जणाणीउं, तिठयराण हुंति सिन्नाउं ॥ अठय सणंकुमारे, माहिंदे अठ वोधव्वा ॥ ९ ॥

प्रश्न ७७ उपक्रमथी दीर्घस्थितिवाला कर्मनो सदतर नाश थाय छे के भोगवाइ जाय छे ?

उत्तर उपक्रमथी दीर्घस्थितिवाला कर्मनो नाश नथी थतो, पण अध्यवसाय विशेषथी ते कर्म शीघ्र भोगवाइ जाय छे जेम कोइ भस्मक वात रोगवालो घणा काले भक्षण योग्य धान्यना मूडाउंने थोडा वखतमा भक्षण करी जाय छे, तेमा विद्यमान अनाज काइ उडी जतुं नथी, किंतु ते अन्न जलदी खवाइ जाय छे तेज न्याय कर्मना संबंधमा पण जाणवो. वली जेम लांबु करेलुं दोरडुं घणा वखते अग्निथी बली शके छे, तेज दोरडु जो एकठुं करी वह्निमा नाख्यु

होय तो फोरन् बलीने भस्मीभूत थाय छे. अलबत वृक्ष उपर रहेलां आंबा प्रमुखनां फलो विलंबथी पाके छे, पण खुबीनी वात छे के खाडा प्रमुखमां नाखी पलाल प्रमुखनी युक्तिवडे तो ते जलदी पाकी जाय छे. एवी रीते कर्मनो विपाक पण जिनागममां बे प्रकारे कथन करेलो छे. एक स्वाभाविक स्थिति मुजब अने बीजो उपक्रमथी. एम बे प्रकारे बांधेलुं कर्म भोगवाय छे.

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

नोपक्रमेण क्रियते, दीर्घस्थितिककर्मणः ॥ नाशः किंत्वध्यवसायविशेषाद्भुज्यते द्रुतम् ॥ १ ॥ यथा भूयः कालभोग्यान्,प्रभूतान्धान्यमूढकान्॥ रुग्णा भस्मकवातेन, न चिरादेव भुंजते ॥ २ ॥ न चात्र वर्तमानानां, धा-

गमो ज्ञवेत् ॥ तन्नोग. स्यात्किंतु नृणां, न्यायोऽयं कर्मणामपि ॥ ३ ॥ चिरेण दह्यते रज्जुर्वह्निना वितता यथा ॥ सैव सङ्क्षिप्तनिक्षिप्ता, क्षिप्रं ज्ञवति ज्ञस्मसात् ॥ ४ ॥ चिरेण पच्यते वृक्षस्थितमाम्रादिकं फलम् ॥ गर्तादिपपलालादियुक्त्या तु क्षिप्रमप्यहो ॥ ५ ॥ विपाक कर्मणोप्येवं, द्विधा प्रोक्तो जिनागमे ॥ यथास्थित्योपक्रमाद्वा, बद्धं कर्म हि ज्ञुज्यते ॥ ६ ॥

प्रश्न ८ए श्रीऋषजदेवादि तीर्थंकरोना साधुर्जनी संख्या चोराशी हजार प्रमुखनी कहेवामा आवे ठे, तेटलाज तेमना साधुर्ज ठे के तेथी अधिक पण होइ शके ठे ?

उत्तर वेशक जे आ श्रीऋषजदेवादि तीर्थंकरोना साधुर्जनु चोराशी हजार

प्रमुख परिमाण आपवामां आव्युं छे ते तो उत्तम सूत्रोनी रचना करवामां समर्थ एवा साधुउने अनुसरीने आपेलुं छे; बीजी रीते तो वली तेमना सामान्य मुनिउ घणाए होय छे.

॥ तथाहि लोकप्रकाशे ॥

इदं किल चतुरशीतिसहस्रादिक-मृषभादीनां तीर्थकृतां श्रमणपरिमाणं प्रधानसूत्रविरचनसमर्थान् श्रमणा-नधिकृत्य वेदितव्यं इतरथा पुनः सा-मान्यश्रमणाः प्रभूततरा अपि ॥

प्रश्न ५०. इंद्र महाराज, भगवान्नी माताने अवस्वापिनी निद्रा आपी भगवा-नने जन्म कल्याणकनो महोत्सव करवा मेरु पर्वत उपर लइ जाय छे, त्यारे माता पासे प्रभुनुं प्रतिबिंब राखवानुं शुं कारण हशे ?

उत्तर प्रतिबिंब राखवानो उद्यम तो एटला माटे छे के कोइक दुष्ट देवता तेणीनी निद्राने दूर करे त्यारे पुत्रने न जोइने माता आकुल व्याकुल न थाय अथवा तेणीनो परिवार जन्मताज तेना पुत्रने जोवामां न आववाथी खेद पामे नहीं, ते कारणथी इंद्र महाराज आवो प्रयोग करे छे

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

केनचिद्दुष्टदेवेन, हृतनिद्रेह मास्मभूत् ॥ इयं पुत्रमनालोक्य, विजत्येत्ययमुद्यम ॥ १ ॥ यद्वा परिजनस्तस्याः, जातमात्रं तदंगजम् ॥ अनालोक्य विषादं मा, यासीदित्यऽयमुद्यमः ॥ २ ॥

प्रश्न ८१ प्रतिवासुदेवनी माता केटलां स्वप्न देखे ?

उत्तर. प्रतिवासुदेवनी माता त्रण स्वप्न देखे, अने महात्मा मुनिराजनी माता पण एक स्वप्न देखे. ए प्रसंगोपात् लोकप्रकाशथी निवेदन कर्युं छे.

॥ तथाहि ॥

प्रतिकेशवमाता तु, त्रीन्स्वप्नानवलोकयेत् ॥ मातैकं पश्यति स्वप्नं, मुनेरपि महात्मनः ॥ १ ॥

प्रश्न ए२. दुष्कालनो संभव केम जाणी शकाय ?

उत्तर. मेघमालामां एम कह्युं छे के एक महिनामां ज्यारे पांच रविवार, पांच मंगलवार अने पांच शनिवार आवे त्यारे दुर्भिक्षनो संभव समजवो. तथा एक दुहामां एवुं जणाववामां आव्युं छे के काबरचित्री वीजली थाय तो वायुनुं चिह्न छे, लाल वीजली तापनुं चिह्न

छे अने पीली वीजली वरसादनुं चिह्न छे, त्यारे धोली वीजली दुर्भिक्ष करे छे.

॥ तथाहि ॥

पंचार्काः पंच भौमाश्च, पंचसूर्यसुतास्तथा॥एकमासे यदायातास्तदा दुर्भिक्षसंभव ॥ १ ॥ कपिला वीजली वायुनु, चिह्न तुमे दील धारो ॥ लाल ताप पीली घन, धोली करे दुकालो ॥ २ ॥

प्रश्न ए३ तीर्थंकरनी भाषा सर्वथी केवी रीते समजी शकाय छे अने ते केवी होय छे ?

उत्तर जेम जलधरनु जल आश्रयविशेषथी नानाप्रकारना रसपणे परिणमे छे, तेमज भगवान्नी वाणी पण श्रवण करनारनी भाषापणे परिणाम पामे छे अलवत प्रभुनी मूल स्वाभाविक भाषा

तो अर्ध मागधी होय ढे. तेमां मागधी अने प्राकृत ए बे नाषाना लक्षणनो समावेश थाय ढे.

॥ तथोक्तं लोकप्रकाशे ॥

यथा जलधरस्यांन, आश्रयाणां विशेषतः ॥ नानारसं नवत्येवं, वाणी नगवतामपि ॥ १ ॥ स्यात्प्रनोर्मूलनाषा च, स्वनावादर्धमागधी ॥ स्यातां द्वे लक्षणे ह्यस्यां, मागध्याः प्राकृतस्य च ॥ २ ॥

प्रश्न ए४. श्री तीर्थंकर नगवान्नुं समवसरण जमीनथी केटले उंचे होय अने तेनुं पीठ कोण बनावे ढे ?

उत्तर. समवसरणनुं पीठ व्यंतर बनावे ढे, अने ते जमीनथी सवा कोश उंचे होय ढे[1].

---

१ समवसरण प्रकरणमां अढी कोश उंचुं कहेलुं ढे. 'सड्ढकोसेहिं धरणीयला.'

॥ यदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

रचयंति तत पीठं, व्यंतरास्तत्र भूतले ॥ भूमेः सपादक्रोशोच्चं, स्वर्णरत्नमणीमयं ॥ १ ॥

प्रश्न ए५ श्री समवसरणना चार पासे ध्वजाउं होय ठे तेनां नाम कयां ?

उत्तर पूर्व दिशामा धर्मध्वज, दक्षिण दिशामां मीनध्वज, पश्चिम दिशामां गजध्वज अने उत्तर दिशामा मोटो सिंहध्वज होय ठे

॥ तथोक्तं लोकप्रकाशे ॥

तत्र धर्मध्वज प्राच्या, याम्या मीनध्वजो भवेत् ॥ गजध्वज पश्चिमायां, उदकू सिंहध्वजो महान् ॥ १ ॥

प्रश्न ए६ समवसरणनुं अने तीर्थंकरोनां शरीरनुं माप कया अंगुलथी थाय ठे ?

उत्तर समवसरणना सवधमां यथा-

स्थाने जे धनुष्य अने कोश प्रमुखनुं माप कहेलुं छे ते जे तीर्थंकरनुं समवसरण होय ते तीर्थंकरना आत्मांगुलथी जाणवुं, अने जिनेश्वरोनुं देहमान तो उत्सेध अंगुलथी समजवुं.

॥ तथा च लोकप्रकाशे ॥

यदत्र चापक्रोशादि, मानमुक्तं यथास्पदम्॥ ज्ञेयं तदत्राधिकृत-जिनात्मांगुलमानतः ॥ १ ॥

जिनांगमानं तु उत्सेधांगुलेन ॥

प्रश्न ए७. समवसरणमां केटली पर्षदा उनी रहे छे अने केटली बेसे छे ?

उत्तर. समवसरण प्रकरण अने आवश्यक वृत्तिना अनुसारे चार प्रकारनी देवीउ अने साध्वीउ ए पांच पर्षदा उन्नी थकी प्रभुनी देशना सांजले छे; तथा चार प्रकारना देवता, नर, नारी अने

साधु ए सात पर्षदा वेसीने श्रवण करे छे वली चूर्णिमा तो एम कह्युं छे के साधुउ उकडु आसने श्रवण करे छे, साध्वीउ अने वैमानिक देवीउ उभी रहे छे, बाकीनी नव पर्षदा वेसीनेज ज्ञानवानुनी देशना साजले छे इहा तत्त्व शुं छे ते तो तत्त्वज्ञानी जाणे

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाशे ॥

देव्यश्चतुर्धा साध्व्यश्च, शृण्वत्यूर्ध्वं दमाः क्षणम् ॥ देवा सर्वे नरा नार्यो, निविष्टाः श्रमणास्तथा ॥ १ ॥ वृत्तावावश्यकस्येदं, चूर्णौ चोत्कटिकासनाः ॥ शृण्वंति साधवोर्योर्ध्वाः, साध्व्यो वैमानिकांगना २ उपविश्यैव शृण्वंति, देशनामाप्तजास्वता ॥ पर्षदाऽन्या नवेत्युक्तं, वेत्ति तत्त्वं तु तत्त्ववित् ॥ ३ ॥

प्रश्न ए७. देवछंदामां प्रभु एकला रहे छे के कोइ साथे होय छे ?

उत्तर. नोकरोथी सेवाता होय तेम छंडामां छंडा क्रोड देवता साथे देवछंदामां आवी भगवान् सुखे रहे छे.

॥ प्रोक्तं च श्रीलोकप्रकाशे ॥

देवःछंदकमागत्य, सुखं तिष्ठंति नाकिभिः ॥ अप्यऽल्पैः कोटिसंख्याकैः, सेविता भृतकैरिव ॥१॥

प्रश्न एए. एक वार देशना आप्या पछी तेज दिवसे फरीथी भगवान् धर्मदेशना आपे छे के नहीं ? जो आपे छे तो केवी रीते ?

उत्तर. पाछले पहोरे फरीथी सर्वज्ञ परमात्मा सिंहासन उपर स्थित थइने व्याख्यान करे छे, त्यारे पण सघली व्यवस्था सवारना जेवीज जाणवी.

॥ उक्तं च श्रीलोकप्रकाशे ॥

पुनः पाश्चात्यपौरुष्यां, स्थित्वा सिंहासने जिनाः ॥ कुर्वते देशनां सर्वा, व्यवस्थाऽत्रापि पूर्ववत् ॥१॥

प्रश्न१०० सत्पुरुषोनु आचरण केवु होय छे?

उत्तर सज्जन माणस पारका दुषणने बोलतो नथी, परना थोडा पण गुणोने निरंतर कहे छे, बीजानी सपत्तिमां पोते सतोष धारण करे छे, पण इर्षा करतो नथी, परपीडामां पोते अफसोस धारण करे छे, आत्मप्रशसा करतो नथी, नीतिमार्गने त्यागतो नथी, उचिताचरणनुं उल्लंघन करतो नथी, अने अप्रिय कहेवाथी पण क्रोध करतो नथी सत्पुरुषोनु आ प्रकारनुं सदाचरण होय छे

॥ तदुक्तं सिंदूरप्रकरे श्रीसोमप्रभाचार्यैः ॥

न ब्रूते परदूषणं परगुणं वक्त्यल्प-

मप्यन्वहं, संतोषं वहते परर्द्धिषु परा-
बाधासु धत्ते शुचम् ॥ स्वश्लाघां न
करोति नोज्झति नयं नौचित्यमुल्लं-
घयत्युक्तोऽप्यऽप्रियमऽक्षमां न रच-
यत्येतच्चरित्रं सतां ॥ १ ॥

प्रश्न २०१. वासुदेवने उपाडवा योग्य कोटिशिला केवी अने क्यां आगल छे ?

उत्तर. मेघना जेवी श्याम अने स्निग्ध वर्णवाली, देवताना समुदायथी अधिष्ठित, केसर, चंदन अने पुष्पप्रकरथी पूजित, सघली बाजुए आभूषणोथी भूषित एवी ते कोटिशिला नामे शिला दक्षिण भरतार्धमां देवीना जेवी शोभे छे. अथवा मतांतरथी एक योजन लांबी, चोडी अने उंची एवी ते अविनाशी शिला सिंधुदेशमां दशार्ण पर्वत समीपे छे.

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाशे ॥

घनश्यामस्निग्धवर्णाधिष्ठिता दे-
वतागणैः॥ शिला कोटिशिला याम्य-
भरतार्द्धे भवेदिह ॥ १ ॥ चंदनैः
कुंकुमोपेतैरर्चिता कुसुमोत्करैः ॥ सा
शिला भाति देवीव, भूषणैर्भूपिता-
भितः ॥ २ ॥ सिंधुदेशे दशार्णाद्रिस-
मीपे वा मतांतरे॥ योजनायामविष्क-
भोच्चूया सास्ति निरत्यया ॥ ३ ॥

तथा सेनप्रश्नमां वासुदेवने उपाडवा
लायक अशाश्वती कोटिशिला मगधदे-
शमां दशार्ण पर्वतना निकटमां कहेली छे

॥ तथाहि ॥

वासुदेवोत्पाट्या तु मगधदेशे द-
शार्णपर्वतसमीपेऽशाश्वतीति ॥

तथा तारंगाजी उपर जे कोटिशिला
छे ते तो बीजी जाणवी त्यां तो फक्त

क्रोड मुनिराज मोक्ष गयेला छे. तेनुं व्यान नीचेना काव्यथी जाणवुं.

॥ तदुक्तं हीरसौभाग्यमहाकाव्ये ॥

यत्तुंगतारंगगिरौ गिरीश, शैलोपमे कोटिशिला समऽस्ति ॥ स्वयंवरोर्वीव शिवांबुजाक्षी, पाणिग्रहे कोटिमुनीश्वराणां ॥ १ ॥

प्रश्न १७२. जरत चक्रवर्तीनी जगिनी ब्राह्मी परणेली हती के बालकुमारी हती?

उत्तर. जरतचक्रीनी बहेन ब्राह्मीने श्रीयुगादीश प्रजुए बाहुबली जूपालने आपी हती. त्यारथी जनसमूहमां पण आ रिवाज दाखल थयो छे. तेथी ते परणेली हती एवुं लोकप्रकाशथी साबीत थाय छे.

॥ तथाहि ॥

जरतस्य च सोदर्यां, ददौ ब्राह्मीं

जगत्प्रभुः नृपाय बाहुबलिने, तदादि जनताप्यथ ॥ १ ॥

प्रश्न १०३ रत्नप्रभा नरकना प्रथम पाथडे देहमान केटलु होय ?

उत्तर. श्रीभगवती सूत्रना २४ मा शतकना १९ मा उद्देशानी टीकामां रत्नप्रभाना प्रथम पाथडे देहनु उच्चपणुं त्रण हाथनु कह्युं छे त्यारबाद प्रतिप्रतरे साडी छप्पन आंगलनी वृद्धि जाणवी

॥ तथाहि ॥

रयणाय पढमपयरे, हत्थतियं देहउसयं भणिय ॥ छप्पणंगुलसड्ढा, पयरे पयरे य वुड्ढीउ ॥ १ ॥

प्रश्न १०४ जैनसूत्रमा साधुउने शुभ मुहूर्त्तादि ग्रहण करवानो अधिकार छे के नहीं ?

उत्तर श्रीसूर्यप्रज्ञप्ति सूत्रमा जिनराजनी एवी आज्ञा छे के क्षेत्रादिक पण

कर्म—उदयादिनां कारण छे, ते माटे सर्वत्र यत्नथी वर्तवुं.

॥ तथाहि ॥

एसा जिणाणआणा, खित्ताइयाय कम्मणो ज्ञणिया उदयाइ कारणं जं, तम्हा सवड जइयव्वं॥ १ ॥

आ सूत्रगाथानी व्याख्यामां टीका-कार लखे छे के सारा क्षेत्रमां शुज्ञ दिशा तरफ सुतिथि नक्षत्र मुहूर्त्तादिमां दीक्षा अने व्रतारोपणादि करवुं, पण अन्यथा नहीं. अलबत क्षेत्रादिक पण कर्मना उदयादिमां कारणरूप ज्ञगवाने कहेला छे; ते कारणथी अशुज्ञ द्रव्य क्षेत्रादि सामग्री पामीने कदापि अशुज्ञ वेदनीय-कर्म विपाकअवस्था पामी उदयमां आवे तो ग्रहण करेला व्रतमां ज्ञंगादि दोषनो प्रसंग थाय, तेथी मुहूर्त्तादिकनुं ग्रहण साबीत थाय छे.

॥ टीका यथा ॥

शुभे क्षेत्रे शुभां दिशमभिमुखीकृत्य शुभतिथिनक्षत्रमुहूर्त्तादौ प्रव्राजनव्रतारोपणादिकर्तव्य नान्यथा। अपि च क्षेत्रादयोऽपि कर्मणामुदयादिकारणं भगवद्भिरुक्ताः ततोऽशुभद्रव्यक्षेत्रादिसामग्रीं प्राप्य कदाचिदशुभवेद्यानि कर्मांणि विपाकं गत्वोदयमासादयेयुः तदुदये च गृहीतव्रतभंगादिदोषप्रसंगः॥

प्रश्न १७५ चतुर्थभक्त प्रत्याख्याननो केवो अर्थ थाय छे?

उत्तर जे तपमा प्रथम दिने एक वखततुं, उपवास दिने बे वखततु अने पारणाने दिवसे एक वखततु भोजन त्याग करवामा आवे तेने चतुर्थभक्त कहीए एवो ए शब्दनो व्युत्पत्ति मात्र अर्थ थाय

छे, पण चतुर्थभक्तादि शब्दोनी प्रवृत्ति तो एकादि उपवासमां छे.

॥ तदुक्तं स्थानांगटीकायाम् ॥

एकं पूर्वदिने द्वे उपवासदिने चतुर्थं पारणकदिने भक्तं भोजनं परिहरतो यत्र तपसि तच्चतुर्थभक्तं एवमन्यत्रापि शब्दव्युत्पत्तिमात्रमेतत्प्रवृत्तिस्तु चतुर्थभक्तादिशब्दानामेकाद्युपवासादिष्विति ॥

प्रश्न १७९. पोषधउपवासनो शो अर्थ छे?

उत्तर. पोषध एटले अष्टम्यादि पर्वना दिवसो, ते पवित्र दिवसोमां उपवास करवो, तेनुं नाम पोषधोपवास कहीए. एवो श्रीस्थानांग सूत्रनी टीकामां अर्थ करेलो छे.

॥ तद्यथा ॥

पोषधः पर्वदिनमऽष्टम्यादि तत्रो-

पवसनमऽन्नक्तार्थः पोषधोपवासः ॥

प्रश्न १०७ साधु साध्वीने केटली तरेहना वस्त्र कल्पे ?

उत्तर साधु साध्वीने कपासना, ऊननां, अलसीनां, सणनां अने वृक्षनी ठालना ए पांच प्रकारनां वस्त्र कल्पे एवु श्रीस्थानांग सूत्रमां यद्यपि कह्युं छे, तथापि टीकाकार महाराज लखे छे के उत्सर्गथी कपासनां अने ऊननांज वस्त्र ग्रहण करवां

॥ सूत्रपाठो यथा ॥

कप्पइ निग्गथाणवा निग्गथीणवा पंचवत्थाइं धारित्तएवा परिहरित्तएवा तंजहा जगिए भंगिए साणए पोत्तिए तरीडपट्टए णाम पचमए ॥

॥ टीका यथा ॥

कप्पइ इत्यादिकंव्य नवरं कल्पन्ते युज्यन्ते धारयितुं परिग्रहे परिहर्तुं-

मासेवितुमिति अथवा धारणाया उ-
वभोगो परिहरणादोइ परिभोगोत्ति॥
जंगियत्ति ॥ जंगमास्त्रसास्तदऽवयव-
निष्पन्नं जांगमिकं कंबलादि ॥ भंग-
एत्ति ॥ भंगा अतसी तन्मयं भां-
गिकं ॥ साणएत्ति ॥ सनसूत्रमयं सा-
नकं ॥ पोत्तियत्ति ॥ पोतमेव पौतिकं
कार्प्पासिकं ॥ तिरिडवट्टेत्ति ॥ वृक्ष-
त्वग्मयमिति ॥ इह पंचविधे वस्त्रे
प्ररूपितेऽप्युत्सर्गतः कार्पासिकौर्णिके
एव ग्राह्ये ॥

प्रश्न १०८. पृथिवीआदि पांच स्थाव-
रकायनां नाम कयां ?

उत्तर. इंद्रस्थावरकाय. २ ब्रह्मस्थाव-
रकाय. ३ शिल्पस्थावरकाय. ४ संमति-
स्थावरकाय. ५ प्रजापत्यस्थावरकाय. ए
पांच क्रमथी पृथिव्यादिनां नाम जाणवां.

॥ तदुक्तं श्रीस्थानांगसूत्रे ॥

पंचथावरकाया पणत्ता तंजहा इंदेथावरकाये बम्भेथावरकाये सिप्पेथावरकाये समईथावरकाये पयावए थावरकाये ॥

॥ टीका यथा ॥

पचेत्यादि ॥ स्थावरनामकर्म्मोदयात् स्थावराः पृथ्व्यादयस्तेषां काया राशयः स्थावरो वा कायः शरीरं येषा ते स्थावरकायाः इंद्रसंबंधित्वादिंद्रः–स्थावरकायः पृथिवीकाय एवं ब्रह्म शिल्प संमति प्राजापत्या अपि अप्कायादित्वेन वाच्या इति ॥

प्रश्न १०९ आयुष्य केटला प्रकारे तुटे छे ?

उत्तर. १ राग, स्नेह अने भयात्मक अध्यवसायथी

२ दंडादि शस्त्रना निमित्तथी.

३ अधिक नोजनथी.

४ नेत्रादिकमां वेदना उत्पन्न थवाथी.

५ गर्त्तादिकमां पमवाना पराघातथी.

६ सर्पादिकना केरी स्पर्शथी.

७ श्वासोश्वासना रोकाणथी.

ए सात प्रकारे सोपक्रम आयुष्य तुटे ले.

॥ तदुक्तं श्रीस्थानांगसूत्रे ॥

सत्तविहे आउनेदे प० तंजहा । अज्जवसाणनिमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए । फासे आणापाणू, सत्तविधं निज्जए आउ ॥ १ ॥

प्रश्न ११०. उक्त सात प्रकारे जींदगी कपाइ जवाथी तो कृतनाश अने अकृत आगमरूप दोष प्राप्त थशे अने मोक्ष उपरथी विश्वास पण उठी जशे; कारणके

सो वर्षनुं बांधेलुं जीवन अपांतराले गमन करी जाय ए कृतनाश अने जे कर्मथी ते तुटे छे ते करेलु न होवाथी अकृत आगमरूप दोष लागु पडे छे तेनु केम ?

उत्तर जेम विस्तारेलु भीनुं वस्त्र जलदी सुकाय छे अने घरी वालेलुं कपडु विलंबथी सुकाय छे, तेवी रीते केटलाएक कर्मनो पण एवो कायदो छे के उपक्रम लागवाथी ते सर्व कर्म प्रदेशथी अवश्य शीघ्रपणे भोगवाइ जाय छे, माटे कृतनाश, अकृत आगमनो दोष नथी आ बाबतनो विशेष खुलासो उपर ८६ मा प्रश्नोत्तरमां आवी गयो छे त्यांथी जोइ लेवो

प्रश्न १११ ढुंढक तेरापथीओ ऋतुधर्म संबधी रुधिरनी तथा मूत्रपुरीषादिनी अस्वाध्याय मानता नथी एटलुंज नहीं, बल्के ऋतुधर्मने गुमडुं फुटवा बरोबर द-

शावे छे. रात्रिमां जंगल मात्रादि कारण वास्ते जल राखवानी पण ना पाडे छे. एटलेथी न अटकतां दिल्ली अने पंजा- बना ढुंढीआओ तो एक कवित पण क- हे छे ते आ प्रमाणेः-

एककंकरी लोटाणं, पंचकंकरी मं- जारि ॥ घासफुस नदीनालं, गांडघ- सनं समुद्रं ॥ १ ॥

आवी रीते कही आलोक परलोकवि- रुद्ध आचरण करे छे. वास्ते जैनसूत्रोमां कोइ स्थले आ बाबतनो अस्वाध्याय ब- तावेलो छे के नहीं ?

उत्तर. श्रीस्थानांग सूत्रमां दश प्रकारे औदारिक शरीर संबंधी एटले मनुष्य तिर्यंच संबंधी अस्वाध्याय कहेलो छे. ते आ प्रमाणेः—

१ हाड.	३ लोही
२ मांस.	४ मलमूत्रसामीप्य.

५ श्मशानसामीप्य.
६ चन्द्रग्रहण
७ सूर्यग्रहण
८ राजा अमात्य सेनापत्यादि मरण
९ राजा सेनापति मल्ल युद्धादि संग्राम.
१० उपाश्रयमां जीव रहित मनुष्यादिनुं औदारिक शरीर.

ए दश कारणे साधुप्रमुखे सूत्रादिकनु पठन पाठन करवु नहीं.

॥ तत्सूत्रपाठो यथा ॥

दसविहे उंरालिए असज्झाइए पण्णत्ते तंजहा अठि मसे सोणिए असुइसामत मसाणसामंतं चंदोवराए सूरोवराए पडणे रायवुग्गहे उवसयस्स अंतो उंरालिए सरीरे॥

॥ टीका यथा ॥

दसविहेउंरालिए इत्यादि ॥ औदारिकस्य मनुष्यतिर्यक्शरीरस्येदमौदारिकमऽस्वाध्यायिकं तत्राऽस्थि-

मांसशोणितानि प्रतीतानि तत्र च पंचेंद्रियतिरश्चामऽस्वाध्यायिकं द्रव्यतोऽस्थिमांसशोणितानि ग्रंथांतरे चर्मोप्यऽधीयते यदाह सोणिय मंसं चम्मं अट्ठीविय होंति चत्तारित्ति ॥ क्षेत्रतः षष्टिहस्ताभ्यन्तरे कालतः संभवकालाद्यावत्तृतीया पौरुषी मार्जारादिभिर्मूषकादिव्यापादने अहोरात्रं चेति भावतः सूत्रं नन्द्यादिकं नाऽध्येतव्यमिति मनुष्यसंबंध्यऽप्येवमेव नवरं क्षेत्रतो हस्तशतमध्ये कालतोऽहोरात्रं यावत् आर्त्तवं दिनत्रयं स्त्रीजन्मनि दिनाऽष्टकं पुरुषजन्मनि दिनसप्तकमऽस्थीनि तु जीवविमोक्षदिनादारभ्य हस्तशताऽभ्यन्तरस्थितानि द्वादशवर्षाणि यावदऽस्वाध्या-

यिकं नवति चिताऽग्निना दग्धान्युद्‌-
कवाहेन वा व्यूढान्यऽस्वाध्यायिकं न
नवति नूमिनिखातान्यऽस्वाध्यायिक-
मिति तथा अशुचीन्यऽमेध्यानि मू-
त्रपुरीषादीनि तेषां सामन्तं समीपं
अशुचीसामन्तमऽस्वाध्यायिकं न-
वति उक्त च कालग्रहणमाश्रित्य सो-
णियमुत्तपुरीसे, घाणालोयं परिहरे-
जत्ति ॥ श्मशानसामन्तं शवस्थानस-
मीपं चन्द्रस्य चन्द्रविमानस्योपरागो
राहुविमानतेजसोपरंजनं चन्द्रोप-
रागो ग्रहणमित्यर्थः एवं सूरोपरा-
गोऽपि इह चेदङ्कालमानं यदि चन्द्र-
सूर्यौ वा ग्रहणे सति स ग्रहोऽन्यथा
वा निमज्जति तदा ग्रहणकालं तद्रा-
त्रिशेषं तदऽहोरात्रशेषं च ततः पर-

मऽहोरात्रं च वर्जयन्ति आह च चं-
दिमसूरुवरागे निग्घाए गुंजिए अ-
होरत्तंत्ति ॥ आचरितं तु यदि तत्रैव
रात्रौ दिने वा मुक्तस्तदा चन्द्रग्रहणे
तस्या एव रात्रेः शेषं परिहरन्ति सू-
र्य्यग्रहणे तु तद्दीनशेषं परिहृत्याऽन-
न्तरं रात्रिमऽपि परिहरन्तीति आह
च आइन्नंदिणमुक्को सोच्चियदिवसो-
वराइवत्ति ॥ चन्द्रसूर्योपरागयोश्चौ-
दारिकत्वं तद्विमान पृथिवीकायिका-
पेक्षयाऽवसेयमांतरिक्षकत्वं तु सदऽ-
पि न विवक्षितमांतरिक्षकत्वेनोक्तेऽन्य
आकस्मिकेऽन्य उल्कादिऽन्यश्चन्द्रादि-
विमानानां शाश्वतत्वेन विलक्षणत्वा-
दिति ॥ पडणेत्ति ॥ पतनं मरणं रा-
जाऽमात्यसेनापतिग्रामभोगिकादीनां

तत्र यदा दंडिकः कालगतो भवति राजा वाऽन्यो यावन्न भवति तदा सभये निर्भये वा स्वाध्यायं वर्जयन्ति निर्भयश्रवणानन्तरमऽप्यऽहोरात्रं वर्जयन्तीति ग्राममहत्तरेऽधिकारनियुक्ते बहुस्वजने वा शय्यातरे वा पुरुषान्तरे वा सप्तगृहाऽभ्यन्तरे मृते अहोरात्रं स्वाध्यायं वर्जयन्तीति शनैर्वा पठन्ति निर्दुःखा एव इति गर्हां लोको माकार्षीदिति आह च मयहरए गए बहुपक्खि एव सत्तघर अतर मयमि ॥ निहुक्कत्तियगरहा, न पढन्ति सणीयग वा वित्ति ॥ १ ॥ तथा रायवुग्गहेत्ति॥ राज्ञां सग्रामउपलक्षणत्वात्सेनापतिग्रामभोगिकमहत्तरपुरुषस्त्रीमल्लयुद्धान्यऽस्वाध्यायिकं एव

पांशुपिष्टादिनाप्मनान्यऽपि यत एते प्रायो व्यन्तरबहुलास्तेषु प्रमत्तं देवताछलयेन्निर्दुःखा एत इत्युड्डाहो वाऽप्रीतिकं वा भवेदित्यऽतो यद्विग्रहादिकं यच्चिरकालं यस्मिन् क्षेत्रे भवति तत्र विग्रहादिके तावत्कालं तत्र क्षेत्रे स्वाध्यायं परिहरन्तीति उक्तं च सेणाहिवभोइय, मयहरेयपुंसिछिमक्षयुध्धेय ॥ लोढाइभंड णेवा, गुज्जागउड्डाहअवियत्तंति ॥ २ ॥ तथोपाश्रयस्य वसतेरन्तर्मध्ये वर्त्तमानमौदारिकं मनुष्यादिसत्कं शरीरकं यद्युज्झिन्नं भवति तदा हस्तशताभ्यन्तरेऽस्वाध्यायिकं भवति अथानुज्झिन्नं तथापि कुत्सितत्वादाचरित्वाच्च हस्तशतं वर्ज्यते परिष्ठापिते तु तत्र तत्स्थानं

शुद्धं भवतीति पञ्चेन्द्रियशरीरमऽस्वाध्यायिकमित्यऽनन्तरमुक्तमिति ॥

प्रश्न ११२ पूर्वोक्त सूत्र तथा टीकाना दीवा जेवा पाठ विद्यमान छतां ढुंढक लोकु ठेने प्रकाश केम नहीं पडतो होय ? अने तेउ निंदनीय काम शामाटे करता हशे ?

उत्तर जेम आंधला मनुष्यने उदय पामेला चन्द्र, सूर्य अने जाज्वल्यमान निर्मल कोडो दीवा पण प्रकाशरूप उपकार करी शकता नथी, तेवी रीते मतांध मनुष्योने शास्त्रनो उपदेश पण लागु पडतो नथी शास्त्र सद्भावनु प्रतिपादन तो प्रशांत चित्तवाला मध्यस्थने हितकर थाय छे. जेम नवीन चढता तावने एकदम शांत करवा आपेलु औषध फायदाकारक निवडतुं नथी तेम मूढमतिने शास्त्र पण दोषने वास्तेज थाय छे

॥ तदुक्तं लोकतत्त्वनिर्णयग्रंथे श्रीहरिभद्रसूरिभिः ॥

उदितौ चन्द्रादित्यौ, प्रज्वलिता-
दीपकोटिरमलापि ॥ नोपकरोति य-
थान्धे, तथोपदेशस्तमोन्धानाम् ॥१॥
अप्रशान्तमतौ शास्त्र-सद्भावप्रतिपा-
दनम् ॥ दोषायाभिनवोदीर्णे, शम-
नीयमिव ज्वरे ॥ २ ॥

आ महात्मानुं कथन अक्षरशः सत्य थयुं छे; कारणके ढुंढकोना हितार्थे महात्मा श्रीविजयानंद सूरीश्वरजीए सम्यक्त्व शल्योद्धार ग्रंथ बनावीने, तेमना निंदनीय कार्यनो अटकाव करवा शास्त्रोपदेश करेलो ते केटलाएक मूढमतिउने अहितकर थयो, पण गुणग्राही सज्जनोने तो गुणकरज थयो छे. एटलुंज नहीं बल्के अनेक भव्य जीवो ते पंथमांथी नी-

कली शुरू सनातन धर्ममां दाखल थया छे, अने केटलाएक निंदनीय फंदमां फसता वची गया छे जो सर्व ढुढक भाइओ मध्यस्थताथी ते लेखनो शास्त्रद्वारा निर्णय करी सद्वर्तन करे तो तेओ कोइ जगाए निंदापात्र थाय नहीं तेमना निंदापात्र कार्यने लइने अनेक तटस्थ विद्वान सज्जनोने, जेवा के रा रा वासुदेव गोविंद आपटे बी ए तथा ढुढकविवादजीतन किताबकर्त्ता चुनीलालजी तथा रासमालाकर्त्ता फारबससाहिब तथा गिरधरकवि तथा सतसेवाना हिमायती बावा नानक जेवाने पोतानी पवित्र जिह्वानो अने कलम कसवानो उपयोग करवानी फरज पडी हती तेओ ढुंढीयानी बाबतमा शु कहे छे ते इहां लखवु अमे दुरस्त धारता नथी. जाणवानी इ-

छठावालाए तारीख १५ जुलाइ तथा तारीख २६ मी ओगष्ट सने १ए०६ नुं जैनपत्र जोइ लेवुं ॥

प्रश्न ११३. तीर्थंकरादि महापुरुषना हृदयमां श्रीवत्सनुं लक्षण होय छे ते शानुं हशे ?

उत्तर. दक्षिणावर्त्त रोमथी बनेला अने अधिक शोनावाला महापुरुषना चिह्नरूप एवा श्रीवत्सथी आप्तपुरुषनुं हृदय युक्त होय छे. एवुं श्रीलोकप्रकाशमां कह्युं छे.

॥ तद्यथा ॥

लोमभिर्दक्षिणावर्त्तै रचितेनाधिकश्रिया ॥ महापुरुषचिह्नेन, श्रीवत्सेनाप्तवक्षसः ॥ १ ॥

श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्रमां पण श्रीनरतचक्रवर्तीना अधिकारे तेमज कह्युं छे.

॥ तथाहि ॥

· पसव्वलोमविरइय सिरिवव्वलगण विउलवव्वदेशे ॥

प्रश्न ११४. तीर्थंकर जगवान्ना जन्मक्षणे जेम त्रिभुवनमां उद्योत थाय ठे तेम निर्वाणसमये अधकार थाय ठे के नहीं ?

उत्तर सर्व कर्मना नाशसमये शैलेशी अवस्थामां आरूढ थइ पारंगत जगवान् ज्यारे अविनाशी स्थानने पामीने निराबाधपणे सुखे रहे ठे, त्यारे क्षणवार अंधकार पण थाय ठे

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

ततोऽधिरुह्य शैलेशीं, सर्वकर्मक्षयक्षणे ॥ संप्राप्य शाश्वतं स्थानं, निर्बाधासुखमासते ॥ १ ॥ क्षण तदाधकारस्यादित्यादि ॥

प्रश्न ११५. जेम बीजा चक्रवर्तीउने छ खंरु साधतां मागधादि तीर्थे अठम करवो परु छे, तेम तीर्थंकर चक्रवर्ती थाय त्यारे तेमने करवो पडे के नहीं ?

उत्तर. जे चक्रवर्ती जिनेश्वर होय छे तेमने अठम तप करवानुं प्रयोजन नथी. तेमना तो याद करवा मात्रमां आसन कंपवाथी मागधादि देवता हाजर थाय छे.

॥ उक्तं च लोकप्रकाशे ॥

यस्तु चक्री जिनस्तस्य, नाष्टमेन प्रयोजनं ॥ स्मृतिमात्रादऽसौ कंप्रासनस्तमुपतिष्ठते ॥ १ ॥

प्रश्न ११६. विजय मूहूर्त्तनो टाइम केटलो ?

उत्तर. मध्याह्नवेला पहेलांनी अने पाछलनी एक एक घरुीने अर्थात् बे घरुीनो विजययोग कहेवामां आवे छे. ते स-

वें कार्यने फतेहमंद उतारनार तरीके गणाय छे

॥ तथोक्तं लोकप्रकाशे ॥

द्वौ यामौ घटिकाहीनौ, द्वौ यामौ घटिकाऽधिकौ ॥ विजयो नाम योगोऽयं, सर्वकार्यप्रसाधकः ॥ १ ॥

प्रश्न ११७ देवतादिकना उपद्रवने नाश करनार दंडरत्न विद्यमान छते सगर चक्रवर्तीना पुत्रोने ज्वलनप्रभ नागेंद्रथी उपद्रव केम थयो ?

उत्तर उपद्रवनो नाश करनार दंडरत्न विद्यमान छतां सगरचक्रीना साठ हजार पुत्रोने नागेंद्रथी उपद्रव थयो, अने ते सर्वे मरणने शरण थया तेनुं कारण एवुं छे के ते अनुपक्रम उपद्रव हतो उपद्रव बे प्रकारना थाय छे एक सोपक्रम अने बीजो अनुपक्रम दंडरत्नथी सोपक्रम उपद्रवनो नाश थाय छे, पण

निरुपक्रमनो नहीं. समवसरणमां वीरन्न-गवान्ना शिष्योना दाहनी माफक निरु-पक्रम उपद्रव तो थाय छे ज. एवो लो-कप्रकाशमां लेख छे ते आ प्रमाणेः—

॥ तथाहि ॥

ज्वलनप्रज्ञनागेंद्रात्सगरस्यांगज-न्मनाम् ॥ योऽन्नूडुपद्रवः सत्यऽप्य-स्मिन्स त्वऽनुपक्रमः ॥ १ ॥ ध्वंसः सो-पक्रमस्यैवोपद्रवस्य न्नवेदितः ॥ इ-तरस्तु न्नवत्येव, वीरांतेवासि दा-हवत् ॥ २ ॥

प्रश्न ११७. चक्रवर्तीनुं चर्मरत्न चाम-डानुं नथी, तथा दंडरत्न काष्ठमय नथी, ते छतां तेने चर्मरत्न अने दंमरत्न कहेवामां आवे छे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर. चर्मरत्नमां पार्थिवत्व छे. तथा-पि तेमां चामम्राना जेवो संकोच विकोच

स्वभाव होवाथी चर्मरत्न कहेवामां आवे छे, अने दंडरत्न पण पृथ्वीमय छे, छतां काष्ठदंडनी सादृश्यताथी दंडरत्न कहेवाय छे. एवी रीते बुद्धिशालीओए साते रत्नोमां पृथ्वीत्व जाणवुं

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

पार्थिवत्वेऽपि तत्साम्या-च्चर्मेति व्यपदिश्यते ॥ दंडोऽप्येवं पार्थिवस्तत्साम्यात्तद्व्यपदेशभाक् ॥ भाव्यमेव पार्थिवत्वं, सप्तानामऽपि धीधनैः ॥ १ ॥

प्रश्न ११९ चक्रवर्तीना नव निधानमां शुं चीज छे तथा ते निधान अने चक्रीनी फोज क्या स्थिति करे छे ?

उत्तर चक्रवर्तीना नव निधानमां शाश्वता दिव्य पुस्तको छे, अने तेमा संपूर्ण विश्वनी व्यवस्था बतावेली छे. आ प्रकारे कोइ आचार्यनुं मानवुं छे, त्यारे मतांतरे एम मानवामां आवे छे के ते

कल्पपुस्तकोमां प्रतिपादन करेला पदार्थों पण ते ते निधिओमां साक्षात् प्रगट थाय छे. तथा नगर जेवडा ते निधि नगरीमां माइ शके नहीं, तेथी पातालमार्गें आवी चक्रीना पुरनी बहार रहे छे. एवी रीते चक्रीनी चतुरंग सेना पण अंदर अवकाश न मलवाथी पुरीमां प्रवेश करती नथी.

॥ उक्तं च लोकप्रकाशे ॥

पुस्तकानीह नित्यानि, संति दिव्यानि तेषु च ॥ आख्यातास्त्यऽखिला विश्वस्थितिरेकमिदं मतम् ॥ १ ॥
मतांतरे तु तत्कल्प-पुस्तकप्रतिपादिताः ॥ साक्षात्प्रादुर्भवंत्यर्थास्तेषु तेषु निधिष्विह ॥ २ ॥ पातालमार्गेणायांति, तिष्ठंति च पुराद्बहिः ॥ तेषां नगरतुल्यानां, पुर्यामनवकाशतः ॥३॥

एवं सेनाश्वतस्तोपि, पत्त्यश्वेन्नरथात्मिका. ॥ पुर्यां न प्रविशत्यत-रवकाशविवर्जिताः ॥ ४ ॥

प्रश्न १२० ज्यारे श्रीक्रुषनदेव नगवाने केशनी पांचमी मुठी खन्ना उपर लोटती राखी त्यारे कच्छ, मदाकच्छादिक मुनिर्जए केम कर्युं दतु ?

उत्तर स्वामीनी पाठल दीक्षित थयेला अने स्वामीना मार्गने अनुसरनारा ते कच्छादिक मुनिर्जए पण केशनी पांचमी मुठी खन्ना उपर स्थित राखी दती

॥ प्रोक्तं च श्रीलोकप्रकाशे ॥

अनुप्रव्रजितास्तेऽपि स्वामिमार्गानुगामिनः ॥ अरदन् पंचमं केशमुष्टिं स्कधोपरि स्थितम् ॥ १ ॥

प्रश्न १२१ शत्रुजय पर्वत प्राये शाश्वतो कहेवाय ठे तेनुं शु कारण ?

उत्तर. कालक्रमथी ए पर्वतनो नाश थाय छे तेथी अशाश्वतो, अने समूल नाश थतो नथी तेथी शाश्वतो. एवी रीते उभय धर्मवालो होवाथी ते शत्रुंजय पर्वत शाश्वतप्राय कहेवाय छे.

॥ उक्तं च लोकप्रकाशे ॥

एष चाऽशाश्वतो नाशान्मूलानाशाच्च शाश्वतः ॥ ततः सोभयधर्मत्वाच्छाश्वतप्राय उच्यते ॥ १ ॥

प्रश्न १२२. पांचमा आरामां शुद्ध साधु छे के नहीं ?

उत्तर. हालमां पण नीतिनिपुण, उग्रतपस्वी अने चारित्रना महात्म्यथी आश्चर्य उत्पन्न करनारा साधुओ जयवंता वर्ते छे. वास्ते विवेकी पुरुषोए आ प्रकारे मध्यस्थ दृष्टिथी विचार करी पांचमा आरामां शुद्ध साधुविषयिक संश-

य न करवो एवुं लोकप्रकाशमां जाहेर करेलुं ठे

॥ तथाहि ॥

विजयंतेऽधुनाप्येवं, मुनयो नयकोविदाः ॥ अत्युग्रतपसश्चारुचारित्रमहिमाञ्चिताः ॥ १ ॥ एव मध्यस्थया दृष्ट्या, पर्यालोच्यं विवेकिन्निः ॥ न कार्यः शुद्धसाधूनाम्, संशयः पंचमेऽरके ॥ २ ॥

प्रश्न १२२ सध्यासमये सामायिक लीधा बाद पच्चरकाण वखते मुहपत्तिपमिलेहणनो आदेश केवी रीते मागवो?

उत्तर सेनप्रश्नमा एवो खुलासो कर्यो ठे के त्रण नवकार गणी खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह जगवन् मुहपत्ति पमिलेहुं ? ए प्रकारे आदेश मागवो.

॥ तथाहि ॥

नमस्कारत्रयं च कथयित्वा क्षमाश्रमणपूर्वं इच्छाकारेण संदिसह भगवन्मुहपत्ति पडिलेहुं इत्यादेशमार्गणम् ॥

प्रश्न १२४. दत्ति पच्चख्खाण केवी रीते करवुं ?

उत्तर. 'सपाण भोयणं पंचदत्तिअं आयंबिलं पच्चख्खाइ' इत्यादि प्रकारे दत्ति पच्चख्खाण लेवानुं सेनप्रश्नमां कथन छे.

प्रश्न १२५. केवलज्ञान थया अगाउनी अवस्थामां सर्व तीर्थंकरनुं अवधिज्ञान तुल्य होय के नहीं ?

उत्तर. सर्व तीर्थंकरनुं प्राथमिक अवधिज्ञान सरखुं न होय, पण वर्धमान् अवधि होइ शके, कारणके जे तीर्थंकर जे देवलोकादिकथी आवे तेमने ते गतिमां जेटलुं अवधिज्ञान होय तेटलुं इ-

हां पण साथे आवे, एवुं सेनप्रश्नमां कथन छे.

प्रश्न १२६. साधु तथा श्रावक जपमाला प्रमुखनी स्थापना केवी रीते करे ?

उत्तर. साधु बे नवकार गणी अने श्रावक त्रण नवकार गणी जपमालादिकनी स्थापना करे, पण उठावता तो बन्ने जण एकज नवकार गणे ॥ इति सेनप्रश्ने ॥

प्रश्न १२७. उपधान विना नवकारादि भणी शकाय के नहीं ?

उत्तर जीतव्यवहारथी उपधान विना पण नवकारादि भणी शकाय, एकांत निषेध नथी इति सेनप्रश्ने ॥

प्रश्न १२८ चौद पूर्वधर जघन्यथी लांतक देवलोके जाय एवो नियम छे त्यारे कार्त्तिक शेठनो जीव प्रथम देवलोके केम गयो ?

उत्तर. कार्त्तिक शेठ प्रथम देवलोके गया ते तो पूर्वना विस्मरणथी संज्ञव थाय छे. एवुं सेनप्रश्नमां कथन छे.

प्रश्न १२ए. श्रावक श्राविका उपधानमां वांचना केवी रीते ले ?

उत्तर. श्राविकाओ उन्नी रहीने अने श्रावको चैत्यवंदन मुद्राथी उपधान वांचना सांन्नले. एवुं श्रीहीरप्रश्नमां कह्युं छे.

॥ तद्यथा ॥

उपधानवाचनां श्राद्ध्य ऊर्ध्वस्थिताः शृणवंति श्राद्धास्तु चैत्यवंदनमुद्रया ॥

प्रश्न १३०. अन्यदर्शनीय लोकोने चोथुं व्रत उच्चराववानी छुट छे के केम ?

उत्तर. अन्यदर्शनीय चोथुं व्रत उच्चरवानी मागणी करे तो तेने नंदि विना पण उच्चराववुं. तेमां कोइ तरेहनो बाध नथी. एवुं श्रीहीरप्रश्नमां कह्युं छे.

॥ तथाहि ॥

अन्यतीर्थीयः तुर्यव्रतमुच्चारयति तदा नंदिविनापि उच्चार्यते निषेधः कोऽपि न ॥

प्रश्न १३१. गृहस्थना आचारने धारण करनार यति प्रतिक्रमण केवी रीते करे?

उत्तर. गृहस्थाचारी यतिवेषवालो मुख्यवृत्तिए सामायिक ग्रहण करीने प्रतिक्रमण करे ॥ इति श्रीहीरप्रश्नग्रंथे प्रोक्तमस्ति ॥

॥ तद्यथा ॥

गृहस्थाचारधरो यतिवेषवान्मुख्यवृत्त्या सामायिकग्रहणं कृत्वा प्रतिक्रमणं करोति ॥

प्रश्न १३२ श्रीदशवैकालिकादि उत्कालिक सूत्र क्यारे गणवु शुरू गणाय?

उत्तर. दिनरातनी चार संध्याओ व-

जीं ज्यारे मरजी होय त्यारे दशवैकालिकादिक गणवुं शुद्ध गणाय.

॥ तदुक्तं श्रीहीरप्रश्ने ॥

अहोरात्रिमध्ये संध्याचतुष्टयं विहाय दशवैकालिकादि गणनं शुद्ध्यति ॥

प्रश्न १३३. समवसरणमां तीर्थंकर केवा रूपे होय छे ?

उत्तर. हीरप्रश्नमां हीरा जेवो लेख छे के श्रीतीर्थंकर जगवान् समवसरणमां—नथी गृहस्थवेषमां, नथी साधुवेषमां नथी स्वलिंगमां, नथी कुलिंगमां, पण लोकोत्तर रूपमां होय छे.

प्रश्न १३४. परमाधामी जव्य के अजव्य ?

उत्तर. हीरप्रश्नमां बन्ने प्रकारना परमाधामी कह्या छे.

प्रश्न १३५. पोसहवाली बाइओ रस्तामां गीत गाइ शके के नहीं ?

उत्तर पोसहवाली बाइओ रस्तामां गीत गाय ते शास्त्राधारे नथी एवुं श्रीहीरप्रश्नमां निवेदन छे

प्रश्न १३६ चौदपूर्वी केटला नव जाणी शके ?

उत्तर सपूर्ण चौदपूर्वी असंख्याता नवो जाणी शके एवु श्रीसेनप्रश्नमां कह्युं छे

॥ तथाहि ॥

सपूर्णचतुर्दशपूर्वविदोऽसंख्येयान् नवान् जानति

प्रश्न १३७ परमाधामीनी करेली वेदना त्रण नरकमा होय छे छता लक्ष्मणजीने चोथी नरके परमाधामीकृत वेदना केम थइ ?

उत्तर त्रण नरकमा परमाधामीनी वेदना होय छे ते प्रायिक वचन छे एवु सेनप्रश्नमां कथन छे.

प्रश्न १३८. चरक, परिव्राजकादि मिथ्यादृष्टिओमां सकाम निर्जरा होय के नहीं?

उत्तर. सेनप्रश्नमां बन्ने प्रकारनी निर्जरा चरकादिकमां मानेली छे.

प्रश्न १३९. पिंडविशुद्धि ग्रंथकर्त्ता जिनवल्लभसूरि खरतर गच्छीय छे के बीजा?

उत्तर. पिंडविशुद्धिकर्त्ता जिनवल्लभसूरि खरतर गच्छीय नथी एवो सेनप्रश्नमां निर्णय करेलो छे.

प्रश्न १४०. प्रातःकाले चउव्विहार उपवासनुं प्रत्याख्यान कर्युं होय तेने सायंकाले फरीथी पच्चक्खाण करवानी जरुर छे के केम ? तथा छठ करनारने बीजे दिन छठनुं पच्चक्खाण लेवुं के नहीं ?

उत्तर. सवारे चउव्विहार उपवास करनारने सांजे फरीथी प्रत्याख्यान करवानी जरुर नथी, पण प्रतिक्रमणवेलाए मनमां याद करवुं. तेवी रीते छठ करना-

रे पण बीजे दिन मनमां धारी लेवुं एवुं सेनप्रश्नमां निवेदन छे ॥

प्रश्न १४१ बे हजार ने चार युगप्रधान, केवा प्रतापी समजवा ?

उत्तर बे हजार ने चार युगप्रधान मांहेला प्रख्यात श्रीसुधर्मास्वामी अने जंबूस्वामी तो तद्भव मोक्षगामी थया छे, अने बाकीना विश्वोत्तम एवा ते सर्व आचार्यो एकावतारी समजवा ते युगप्रधान महात्माओ ज्या विचरे छे त्यां दश गाउनी अंदर दुष्कालादि उपद्रवो नाश पामे छे एवा अनेक अतिशय युक्त मोटा सत्त्ववंत तेओ होय छे आ प्रकारे लोकप्रकाशमा प्रकाशित करेलु छे.

॥ तथाहि ॥

एकावताराः सर्वेऽमी, सूरयो जगदुत्तमाः ॥ श्रीसुधर्मा च जंबूश्च ख्या-

तौ तद्भवसिद्धिकौ ॥ १ ॥ अनेका-
तिशयोपेताः, महासत्त्वा भवंत्यऽमी ॥
घ्नंति सार्धद्वियोजन्यां, दुर्भिक्षादीनु-
पद्रवान् ॥ २ ॥

प्रश्न १४२. योगवहनपूर्वक गुरुमुख-
थी सिद्धांत वांचना लेवानुं कोइ शास्त्र-
मां फरमान छे ?

उत्तर. श्रीजिनेश्वरे कहेला अंगोपांग
भेदथी भिन्न सिद्धांतोनो योगोद्वहनपू-
र्वक मेलव्यो छे स्वगुरु मुखकमलथी पर-
मार्थ जेमणे एवा महात्मा होय. एवुं श्री-
मध्यानव्याख्या ग्रंथमां निवेदन कर्युं छे.

॥ तथाहि ॥

जिनोक्तसिद्धांतानां अंगप्रविष्टा-
नंगप्रविष्टभेदभिन्नानां गृहीतो योग-
वहनेन स्वीकृतः स्वगुरुमुखकमला-
त्परमार्थो रहस्यं यैस्ते ॥

प्रश्न १४३. ज्यां चोमासुं रह्या होय त्यां साधुओ क्यां सुधी वस्त्रादिक न ग्रहण करी शके ?

उत्तर ज्यां चोमासुं रह्या होय त्यां चोमासा बाद बे मास सुधी साधु साध्वीओने वस्त्रादिक लेवु कल्पे नहीं एवुं श्रीसेनप्रश्नमां कह्युं छे

प्रश्न १४४ श्री अष्टापद तीर्थनी यात्रा करनार तद्भव मोक्षगामी केवी रीते मनाय छे ?

उत्तर तपसयमथी उत्पन्न थएली लब्धिवडे जेओ श्रीअष्टापद गिरिनी यात्रा करे तेओ तेज भवमां मुक्ति जाय एवो श्रीहीरप्रश्नमां संभव बतावेलो छे

॥ तथाहि ॥

अष्टापदगिरौ ये तपसंयमोत्थलब्ध्या यात्रां कुर्वंति ते तद्भवसिद्धिगामिन इति संभाव्यते ॥

प्रश्न १४५. सर्व इंद्र एकावतारी छे के केम ?

उत्तर. सर्व इंद्र एकावतारी नथी. एवुं श्रीहीरप्रश्नमां निवेदन कर्युं छे.

प्रश्न १४६. सर्व नारद तद्भव मोक्षगामी छे के केम ?

उत्तर. सर्व नारद तद्भव मोक्षगामी नथी. एवुं श्रीहीरप्रश्नमां दर्शाव्युं छे.

प्रश्न १४७. केटलाएक अजाण कच्छी लोको आयंबिलमां सोपारी वापरे छे ते वपराय के नहीं ?

उत्तर. आयंबिलमां रांधेला पोंक तथा लवींग, पिपर, हरडे न कल्पे. एवुं श्रीहीरप्रश्नमां कह्युं छे. वास्ते सोपारी प्रमुख तंबोल न कल्पे एवुं सिद्ध थाय छे, पण कालां मरी अने सुंठ वापरी शकाय छे.

प्रश्न १४७ उपांग सूत्रोनी रचना कोण करे छे ?

उत्तर उपांगनी रचना श्रीस्थिविर महाराज करे एवु श्रीहीरप्रश्नमां प्रदर्शित कर्युं छे

प्रश्न १४९ साधारण जिनालयमां प्रतिमा कोना नामथी जोइए ?

उत्तर साधारण जिन मंदिरमा गामना नामथी प्रतिमाजी जोइए

तथाच हीरप्रश्ने प्रोक्तमस्ति ॥

साधारणप्रासादे प्रतिमायां कार्यमाणायां ग्रामनाम्ना प्रतिमा विलोक्यते ॥

प्रश्न १५० बे इंद्रिय एलनी चोइंद्रिय भ्रमरी केवी रीते बनी जाय छे ?

उत्तर एलना कलेवरमां तेज एलनो जीव मरण पामीने अथवा बीजो कोइ

जीव चोइंद्रिय ज्ञमरीपणे उत्पन्न थाय छे; पण तेज ज्ञवमां एलनी ज्ञमरी बनी जाय छे एम समजवुं नहीं. एवुं श्रीहीरप्रश्नमां स्पष्ट कहेलुं छे.

प्रश्न १५१. नरकमां केटला प्रकारनी वेदना थाय छे ?

उत्तर. शीत, उष्ण, क्षुधा, तृषा, खुजली, ज्ञय, शोक, पराधीनता, ज्वर अने दाहनो व्याधि ए दश प्रकारनी नरकमां वेदना थाय छे. एवुं श्राद्धगुण विवरणमां वर्णवेलुं छे.

॥ तद्यथा ॥

दसविह वेयण निरए, सी १ उसिण २ खु ३ प्पिवास ४ कंडुअ ५ । ज्ञय ६ सोग ७ पारवस्सं ८ जरोअ ९ वाहीअ १० दसमोअ ॥ १ ॥

प्रश्न १५२. नरकमां केटला प्रकारना रोग थाय छे ?

उत्तर पांचं क्रोड, अडसठ लाख, नवाणु हजार, पांचसें, चोरासी प्रकारना रोगो अप्रतिष्ठान नरकावासामां छे ते बतावबा श्राऊगुण विवरणमां नीचे मुजब गाथा आपेली छे

॥ तथाहि ॥

पणकोडीअडसठी,लक्खानवनवइ-सहसपंचसया। चुलसी अहियानरए, अपइठाणमि वाहीउं ॥१॥

प्रश्न १५३ कया पांच वकार अनर्थ उत्पन्न करे छे ?

उत्तर वेर १ वैश्वानर २ व्याधि ३ वाद ४ अने व्यसैन, ५ ए पांच वकार वृद्धि पाम्या थका महा अनर्थने करनारा थाय छे

१ सयपण सूत्रमा (५६८९९५८४) प्रकारना रोग छठी सातमी नरके दर्शाव्या छे २ अग्नि ३ सात व्यसन

॥ तथोक्तं श्राद्धगुणविवरणे ॥

वैर वैश्वानर व्याधि, वाद व्यसनलक्षणाः ॥ महाऽनर्थाय जायंते, वकाराः पंच वर्ज्जिताः ॥ १ ॥

प्रश्न १५४. नरलोकमां ढ नरको कहेवाय ढे ते कई ?

उत्तर. १ कुग्राममां रहेगण २ कुनृपनी सेवा ३ कुत्सित अन्न जोजन ४ क्रोधिष्ट स्त्री ५ कन्यानुं बहुत्व अने ६ कंगाल हालत. ए ढ प्रकारनी मनुष्य लोकमां नरको गणाय ढे.

॥ यदुक्तं श्राद्धगुणविवरणे ॥

कुग्रामवासः कुनरेंद्रसेवा,
कुजोजनं क्रोधमुखी च जार्या ॥
कन्याबहुत्वं च दरिद्रता च,
षट् जीवलोके नरका जवंति॥१॥

प्रश्न १५५ वहिरात्मा अने अतरात्मा शुं चाहे छे ?

उत्तर वहिरात्मा पोताने सुदर रूप, दीर्घायु, घणु वल अने प्रभूत द्रव्यादिकनी सपदा मले एम चाहे छे त्यारे विज्ञानी अंतरात्मा पण्डितपणे आ वधाथी मुक्त थवा चाहे छे इति शुद्धोपयोगविचारप्रकरणे प्रोक्तमस्ति

॥ तथाहि ॥

रूपायुर्वलवित्तादि, संपत्तिं स्वस्य वांछति ॥ वहिरात्माऽथवा ज्ञानी, सादात्तेभ्योऽपि विच्युतिम् ॥ १ ॥

प्रश्न १५६ मुक्ति कोनी थाय अने कोनी न थाय ?

उत्तर जेनी आत्मस्वरूपमां निश्चल स्थिति छे तेज मुनिनी मुक्ति थाय छे, अने जेनी आत्मस्वरूपमा चोकस रीते स्थिरता नथी तेनी निश्चय मुक्ति नथी

ए प्रकारे शुद्धोपयोग प्रकरणमां निरूपण कर्युं छे.

॥ तथाहि ॥

मुक्तिरेव मुनेस्तस्य, यस्यात्मन्यचलस्थितिः ॥ न तस्यास्ति ध्रुवं मुक्तिर्न यस्यात्मन्यवस्थितिः ॥ १ ॥

प्रश्न १५७. आत्मा केवी रीते सिद्धत्व प्राप्त करे छे ?

उत्तर. जेम दीवानी वाट दीपकने पामीने प्रदीप रूप बने छे तेम आत्मा पण सिद्धात्मानुं आराधन करी सिद्धता मेलवे छे.

॥ तदुक्तं शुद्धोपयोगप्रकरणे ॥

आत्मानं सिद्धमाराध्य, प्राप्नोत्यात्मापि सिद्धताम् । वर्त्तिः प्रदीपमासाद्य, यथाभ्येति प्रदीपताम् ॥ १ ॥

प्रश्न १५८ आत्मा शरीरथी भिन्न छे एवु सांभळवा के बोलवाथी मोक्ष जवाय के नहीं ?

उत्तर. ज्यांसुधी आत्मा भेदाभ्यासमां निश्चित थतो नथी त्यांसुधी शरीरथी आत्मा जुदो छे एवुं सांभळतो के बोलतो प्राणी मोक्षे जइ शकतो नथी.

॥ तथोक्तं शुद्धोपयोगप्रकरणे ॥

शरीराद्भिन्नमात्मानं, शृण्वन्नपि वदन्नपि॥ तावन्न मुच्यते यावन्नभेदाभ्यासनिश्चितः ॥ १ ॥

प्रश्न १५९ आत्मज्ञानी मरण समये शरीरनो केवी रीते त्याग करे छे ?

उत्तर. आत्मज्ञानी आत्माथी देहने अने देहथी आत्माने जुदो जोइ जेम घृणास्पद गंदा वस्त्रने छोडी देवामां आवे छे तेम असंगात्मा मरण वखते पोताना देहनो निर्ममत्वताथी त्याग करे छे.

॥ तथाचोक्तं शुद्धोपयोगप्रकरणे ॥

पृथग् दृष्ट्वात्मनः कायं, कायादात्मानमात्मवित् ॥ तथा त्यजत्यसंशंकं, यथा वस्त्रं घृणास्पदम् ॥ १ ॥

प्रश्न १६०. ज्यारे आत्मा शरीरथी भिन्न छे एवुं सांभळवा के बोलवाथी मुक्त थवातुं नथी त्यारे आत्मभावना केवी रीते करवी ?

उत्तर. आ आत्मा शरीरथी भिन्न छे एवा प्रकारनी आत्मावडे आत्मामां आत्मभावना करवी के जेथी फरीने आ शरीर छे तेज आत्मा छे एवी अंगसंगतिने स्वप्नमां पण आ आत्मा प्राप्त थाय नहीं, एवुं शुभचंद्राचार्यविरचित योगप्रदीपाधिकारांतर्गत शुद्धोपयोगविचारप्रकरणमां निवेदन कर्युं छे.

॥ तथाहि ॥

व्यतिरिक्तस्तनोस्तद्व—द्भाव्योऽय-

मात्मनात्मनि ॥ स्वप्नेऽप्ययं यथान्ये-
ति, पुनर्नांगेन संगतिम् ॥ १ ॥

प्रश्न १६१ प्रमाण एटले शुं अने ते केटला प्रकारे जैनो माने छे ?

उत्तर सारी रीते पदार्थना निर्णयने प्रमाण कहेवामां आवे छे, अने जैनो प्रत्यक्ष तथा परोक्ष एवां बे प्रमाण माने छे

॥ तदुक्तं प्रमाणमीमांसायां श्री-
हेमचंद्राचार्यैः ॥

१ सम्यगर्थनिर्णयः प्रमाणम्

२ प्रमाणं द्विधा.

३ प्रत्यक्ष परोक्ष च.

प्रश्न १६२ तर्कशास्त्रमां फल कोने कहे छे ?

उत्तर पदार्थ प्रकाशने फल कहेवामां आवे छे

॥ तदुक्तं प्रमाणमीमांसायाम् ॥

१ फलमर्थप्रकाशः

प्रश्न १६३. क्रिया अने प्रमाणनी स्थिति शेमां छे ?

उत्तर. क्रिया कर्ममां अने प्रमाण कर्त्तामां स्थित होय छे एवुं प्रमाणमीमांसामां निवेदन कर्युं छे.

॥ तथाहि ॥

१ कर्मस्था क्रिया. २ कर्तृस्थं प्रमाणम्.

प्रश्न १६४. जय पराजय कोने कहेवामां आवे छे ?

उत्तर. पोताना पक्षनी सिद्धिने जय अने स्वपक्षनी असिद्धिने पराजय कहेवामां आवे छे.

॥ प्रोक्तं च प्रमाणमीमांसायाम् ॥

१ स्वपक्षसिद्धिर्जयः २ असिद्धिः पराजयः

प्रश्न १६५. आत्मशिक्षा केवी रीते करवी ?

उत्तर रे आत्मन् ! नम्रीभूत ऊर्ध्वमुख कमलना दल साथे लागेला जलबिंदु जेवी चंचल आ संसारनी रचनाने जोतो-थको पण तु खरी रीते देखतो नथी, ए तारुं नवाइ जेवु अधत्व छे, जो तने आत्म कल्याणनी इच्छा होय तो गिरिगुफामां निवास करी संसारनी चेष्टाओने पण मूकी दे अने पर्वत जेवी दृढ प्रतिष्ठाने प्राप्त था वली रे जीव ! चोराशी लाख प्रकारना उत्पत्ति स्थानथी गम्भीर एवा आ संसार समुद्रमां भ्रमण करीने तें सुंदर रत्न जेवुं आ अलभ्य मनुष्यत्व मेलव्यु छे, तेने बनावटी नहीं एवा धर्मकृत्यरूपी कनकनी साथे जोडी देवामा आवे तो खरेखर आश्चर्य छे के, तेनी त्रिभुवनमा पण कोण कीमत करी शके ? अलबत्त कोइ पण तेनी कीमत करी शके नहीं. आ प्रकारे विम-

लाचार्यविरचित संवेगद्रुमकंदलीमां आत्मशिक्षा करेली छे.

॥ तथाहि ॥

उत्तानांबुजपत्रबिंदुतरलां संसारनंगीमिमां, रे पश्यन्नपि नैव पश्यति नवानांध्यं तवालौकिकम् ॥ कल्याणाय किल स्पृहा यदि गिरिप्राप्तप्रतिष्ठस्तदा, मुंचात्मन् नवचेष्टितान्यपि गिरिप्राप्तप्रतिष्ठो नव ॥ १ ॥ न्रांत्वास्मिन्बहुयोनिलक्षगहने संसारवारां निधौ, मानुष्यं नवता सुरत्नमिव रे डुःप्रापमासादितम् ॥ तन्निःकृत्रिमधर्मकर्मकनकेनायोज्यते यद्यहो, त्रैलोक्येपि करोति कः किल तदा तस्येह मूल्यं जनः ॥ २ ॥

---

१ अपरनाम श्रीब्रह्मचंद्राचार्यकृत.

प्रश्न १६६ ब्राह्मणादि अन्यदर्शनीओ ज्यारे 'धनवान्, पुत्रवान, आयुष्यमान् था' एवा प्रकारना आशीर्वाद आपे छे, त्यारे जैनमुनिओ नमस्कार करनाराने धर्मलाभ कहे छे तेनु शुं प्रयोजन ?

उत्तर जो 'दीर्घायुर्भव' एम कहेवामां आवे तो लांबु जीवन नरकवासीओमां पण पसार थाय छे, तेमां कांइ नवाइ नथी. जो संतान माटे 'पुत्रवान् भव' एम कहेवामां आवे तो कुकडाओने घणांए बच्चां होय छे, तेमां पण कांइ महत्ता नथी सुखने वास्ते 'धनवान् भव' एम कहेवामां आवे तो खरेखर म्लेछ मुकानीओ पासे पण पुष्कल पैसा होय छे, तेमां पण कांइ खरी खुबी कहेवाय नहीं ते कारणथी ज्ञानीओए सर्व प्रकारना सुखने करनारो धर्मलाभ निवेदन करेलो छे अतएव जैनमुनिओ धर्मलाभ कहे छे

॥ तदुक्तं धर्मलाभाष्टके ॥

दीर्घायुर्भव जण्यते यदि तदा तन्नारकाणामपि, संतानाय च पुत्रवान् भव तदा तत्कुर्कटानामपि ॥ सौख्यार्थं धनवान् भवेति नियतं नौवित्तकानामपि, तस्मात्सर्वविधायको निगदितः श्रीधर्मलाभो बुधैः

प्रश्न १६७. केटलाएक श्राविको एकल प्रतिमा भरावे छे, केटलाक त्रिकरूपे भरावे छे, कोइ पंचतीर्थी तो कोइ चोवीशी अने कोइ एकसो सीतेर जिनना शिलापट्ट कोतरावे छे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर. अनेक प्रकारनी प्रतिमा भरावबानुं कारण एवुं छे के कोइ भक्तिवंत जिनराजनी ऋद्धि देखवाने माटे प्रगट प्रातिहार्य अने देवताना आवागमथी शोभित एवी एक प्रतिमाने करावे छे.

तथा कोइ दर्शन ज्ञान चारित्रना आराधन निमित्ते त्रण जिननी त्रिकरूपे प्रतिमा करावे छे तथा कोइ पंचपरमेष्ठी नमस्कार मंत्रना उद्यापनार्थे अथवा कल्याणक तपना उजमणा वास्ते पचतीर्थी प्रतिमा करावे छे. तथा ऋषभादि चोवीश तीर्थंकर भरतक्षेत्रमां थया छे माटे तेना बहुमान विशेषथी कोइ चोवीशी करावे छे तेमज मनुष्य लोकमां उत्कृष्टा १७० जिन विचरे छे तेथी ते सर्वेनी भक्तिवडे कोइ धनाढ्य १७० जिनबिंब करावे छे

॥ तदुक्तं बृहद्भाष्ये ॥

जिणऋद्धि दसणत्थं, एग कारेइ केइ भत्तिजुओ ॥ पायडिय पाडिहेर, देवागमसोहियं चेव ॥ १ ॥ दसणनाणचरित्ताराहणकये जिणत्तिय कोइ ॥ परमिठिनमोक्कार उद्यमियं कोइ

त्रिंशद्रागिणी गणोपनीत परम भाव रागमाधुर्य श्रोतृजनामृत पीतगीत-रास प्रबंध नाना छंदः प्राच्य महा पुरुष चरित्र प्रमाण सूत्रवृत्त्यादि कर-ण यथोक्त समस्या पूरण विविध ग्रंथ-ग्रथनेन नैकश्लोकशत संख्यकरणादि लब्धगीः प्रसादैः श्रोतृश्रवणामृत पारणानुकारि सर्वराग परिणति मनो-हारि सुस्वनादैः स्पष्टाष्टावधान शता-वधान कोष्टकपूरणादि पांडित्यानुरं-जित महाराष्ट्र कौंकणेश श्रीबुर्हान-शाहि महाराज श्रीरामराज श्रीखा-नखाना श्रीनवरंगखान प्रभृत्यऽनेक नृपदत्त जीवामारि प्रभृत बंदिमो-क्षादि सुकृत समर्जित यशः प्रवादैः पं० श्रीविवेकहर्षगणि प्रसादैरस्मद्-

गुरुपादैः ससघाटकैस्तेषामेव श्रीपरमगुरूणामादेशप्रसादं महाराजश्री भारमल्लजिदाग्रहानुगामिनमासाद्य श्रीभक्तामरादि स्तुति भक्ति प्रसन्नी भूत श्रीऋषभदेवोपासक सुर विशेषाज्ञया प्रथम विहारं श्रीकच्छदेशेऽत्र चक्रे तत्र च सं १६५६ वर्षे श्रीभुज नगरे आद्यं चतुर्मासक द्वितीयं च रायपुर वंदिरे तदा च श्रीकच्छ मरुकांठा पश्चिम पाचाल वागड जेसला मंडलाद्यऽनेक देशाधीशैर्महाराज श्रीखेंगारजी पट्टालकरणैर्व्याकरण काव्यादि परिज्ञान तथाविधैश्वर्यस्थैर्यधैर्यादि गुणापहस्तित सरस्वती महा-नवस्थान विरोध त्याजकैर्याद-

१ व्याजै –

ववंश भास्कर महाराज श्रीभारमल्लजी राजाधिराजैः (विज्ञप्ताः) श्रीगुरुवस्ततस्तदिभापूर्वकं संजग्मिवांसः काव्य व्याकरणादि गोष्ठ्या स्पष्टाष्टावधानादि प्रचंड पांडित्य गुणदर्शनेन च रंजितैः राजेंद्रैः श्रीगुरूणां स्वदेशेषु जीवामारी प्रसादश्चक्रे तद्व्यक्तिर्यथा-सर्वदापि गवामारिः पर्यूषणा ऋषिपंचमीयुत नवदिनेषु तथा श्राद्धपक्षे सर्वैकादशी रविवार दर्शेषु च तथा महाराज जन्मदिने राज्यदिने सर्व जीवामारिरिति सार्वदिकी सार्वत्रिकी चोद्घोषणा जज्ञे तदनु चैकदा महाराजैः पाल्लविधीयमान नभोवार्षिक विप्र विप्रतिपत्तौ तन्निराकरणपूर्वकं श्रीगुरुभिः कारिता श्रीगु-

रूक्तां नन्नस्य वार्षिक व्यवस्थापिका सिद्धातार्थयुक्तिमाकर्ण्य तुष्टो राजा जयवादपत्राणि ७ स्वमुद्रांकितानि श्रीगुरुन्यः प्रसादाडुपढोकयति स्म प्रतिपक्षस्य च पराजितस्य तादृश राजनीतिमासूत्र्य श्रीराम इव सम्यग्न्यायधर्मं सत्यापितवान् किंच कियदेतदस्मद्गुरूणाम् ॥ यतः ॥

यैर्जिग्ये मलकापुरे विवदिषुर्मूलान्निधानो मुनिः, श्रीमज्जैनमतं यवस्तुतिपद नीतं प्रतिष्ठानके ॥ नट्टानां शतशोऽपीयत्सु मिलितासूद्दीप्य युक्तीर्जिता, यैर्मौनं श्रयितः स वोरिदपुरे वादीश्वरो देवजी ॥१॥ जैनन्यायगिराविवादपदवीमारोप्य निर्घाटितो, पाचीदेश गजालणा पुरन्रे दिगव-

राचार्यराट् ॥ श्रीमद्रामनरेंद्रसंसदि किलात्मारामवादीश्वर, कस्तेषां च विवेकहर्षसुधियामग्रे धराचंद्रकः॥२॥ किंचास्मद्गुरुवक्त्रनिर्गतमहाशास्त्रामृताब्धौ रतः,सर्वत्रामितमान्यतामवद्धे श्रीमद्युगादिप्रभोः ॥ तद्भक्त्यै भुजपत्तने व्यरचयत् श्रीभारमल्लप्रभुः, श्रीमद्रायविहारनाम जिनपप्रासादमत्यद्भुतम् ॥ ३ ॥

अथ च सं. १६५६ वर्षे श्रीकच्छदेशांतर्जेसलामंडले विहरद्भिःश्रीगुरुभिःप्रबल धनधान्याभिरामं श्रीखाखर ग्रामं प्रतिबोध्य सम्यग् धर्मक्षेत्रं चक्रे यत्राधीशो महाराज श्रीभारमल्लजी भ्राता कुंभरश्री पंचायणजी प्रमद प्रबल पराक्रमाक्रांतदिक्चक्रश्चक्र-

बंधु प्रतापतेजा यस्य पट्टराज्ञी पुष्पांवाइ प्रभृति तनूजाः कुं०झजाजी, हाजाजी, भीमजी, देसरजी, देवोजी, कमोजी, नामानो रिपुगजघटाकेशरिणस्तत्र च शतश श्रीजंगवालगृहाणि सम्यग् जिनधर्मं प्रतिबोध्य सर्वं श्राद्ध सामाचारी शिक्षणेन च परमश्राद्धी कृतानि तत्र च ग्रामग्रामणी भद्रकत्व दानशूरत्वादि गुणोपार्जितयशःप्रसर कर्पूर पूर सुरभीकृतब्रह्मांडभाड शा. वयरसिकः सकुटुंब श्रीगुरुणा तथा प्रतिबोधितो यथा तेन घंघर शा शिवापेथा प्रभृति समवहितेन नव्योपाश्रयः श्रीतपागण धर्मराजधानीव चक्रे. तथा श्रीगुरुपदेशेनेव गुर्जर धरित्र्याः शिलातक्षकानाकार्य

श्रीसंभवनाथ प्रतिमा कारिता. शा.
वयरसिकेन तत्सुतेन शा. सायर-
नाम्ना मूलनायक श्रीआदिनाथ प्र-
तिमा ३ शावीजाख्येन ३ श्रीविम-
ल नाथप्रतिमा च कारिता. तत्प्रतिष्ठा
तु शा. वयरसिकेनैव सं. १६५७
वर्षे माघसित १० सोमे श्रीतपाग-
च्छनायक भट्टारकश्रीविजयसेनसूरि-
परमगुरूणामादेशादस्मद्गुरु श्री-
विवेकहर्षगणिकरेणैव कारिता. त-
दनंतरमेषप्रासादोऽप्यस्मद्गुरूपदे-
शेनैव फाल्गुनासित १० सुमुहूर्त्ते
उवएसगछे भट्टारक श्रीकक्क सूरि
बोधित श्रीआणंदकुशल श्राध्देन उं-
शवाल ज्ञातीय पारिषिगोत्रे शा. वी-
रापुत्र डाहापुत्र जेगपुत्र शा. लाखण

पुत्ररत्नेन शा. वयरसिकेन पुत्र शा. रणवीर शा. सायर शा. महिकरण स्नुषा उमा रामा पुरी पौत्र शा. मालदेव, शा. राजा, खेतल, खेमराज, वणवीर, दीदा, वीरा प्रमुख कुटुंबयुतेन प्रारेभे. तत्र सान्निध्यकारिणौ घंघरगोत्रीयौ पौर्णमीयक कुलगुरुभट्टारक श्रीनिश्राश्राद्धौ शा कथड सुत शा नागीआ शा मेरगनामानौ सहोदरौ सुत शा पाचासा महिपाला मल प्रसादात् कुटुंबयुतौ. प्रासादोऽयं श्रीशत्रुंजयावताराख्य सं १६५१ वर्षे फा०कृ० १० दिने प्रारब्धः। सं १६५९ वर्षे फा० शु० १० दिनेऽत्र सिद्धि पदवीमारुरोह आनंदाच्च कल मंडन श्रीखाखरि नगर

संघे श्रेयश्च. सं. १६५ए वर्षे फा०
सुद १० दिने पं. श्रीविवेकहर्षग-
णिन्निर्जिनेश्वर तीर्थ विहारोऽयं प्र-
तिष्ठितः ॥ प्रशस्तिरियं विद्याहर्षग-
णिन्निर्विरचिता. संवतो वैक्रमः ॥

॥ उक्त शिलालेखनुं गुजराती भाषांतर ॥

व्याकरण, काव्य, साहित्य, नाटक, संगीत, ज्योतिष, छंदःशास्त्र, अलंकार शास्त्र, कठिन एवां तर्कशास्त्र, शिवमतनां शास्त्र, जिनमतनां शास्त्र, चिंतामणिना मतनुं प्रचंड खंडन करनारां शास्त्र, मीमांसा शास्त्र, स्मृतिशास्त्र, पुराणशास्त्र, वेदशास्त्र तथा श्रुतिनी पद्धतिनां छ लाख छत्रीश हजार शास्त्रो तथा जैन

आगम आदिक पोताना अने परना सिद्धांत, गणित शास्त्र, तथा जागता एवा यवन आदिक बए दर्शनोना ग्रंथ तथा निर्मल एवा प्रकरण संबंधी ज्ञाननी चतुराइवडे करीने दली नाखेल वे इत्यादि मनुष्योनो उन्माद जेउंए एवा तथा ब्राह्मी अने फारशी आदिक लिपि तथा पींबीनी लिपियी यती विचित्र प्रकारनी चित्रकला तथा घडामांथी अग्नि कहाडवा आदिकनी विधियी अत्यत उत्तम माणसोनां मनने चमत्कार करनारा तथा शृंगार आदिक रसथी रसयुक्त थयेला अने चित्रबंधादि अलकारोयी सुशोन्नित एवी संस्कृत नाषामां बनावेलां मनो-

हर एवां नवां काव्यो बनाववाथी तथा छत्रीश प्रकारनी रागणीउंना समूहथी बतावेला उत्कृष्ट भाववाला रागनी मीठाशथी सांभलनारा माणसोने अमृतपान सरखां गीतवाला रास अने प्रबंधोथी तथा नाना प्रकारना छंदोथी भरेलां पूर्व महापुरुषोनां चरित्रो तथा न्याय शास्त्रोनी टीका आदिक करवावडे करीने तथा जेवी कहीतेवी समस्या पूरवाथी तथा विविध प्रकारना ग्रंथो रचवावडे करीने तथा अनेक अने सेंकडो गमे श्लोकों रचवा आदिकवडे करीने मेलवेल छे सरस्वतीनो प्रसाद जेमणे एवा तथा सांभलनाराउंना कानोने अमृतना पारणा समान एवा सर्व

प्रकारना रागोनी परिणतिवडे करीने मनोहर छे मुखनो शब्द जेमनो एवा वली स्पष्ट रीते आठ अवधानना तथा सो अवधानना कोष्टकने संपूर्ण करवा आदिकनी पंडिताइवडे करीने खुशी करेला एवा महाराष्ट्र तथा कोकणना राजा श्रीबुर्हानशाह महाराज श्रीरामराजा श्रीखानखाना तथा श्रीनवरंगखान आदिक अनेक राजाउंए दीधेला जीवो माटेना अमारि पटह तथा घणा केदीउंना छुटकारा आदिकना पुण्यथी मेलवेल छे जसवाद जेउंए एवा अमारा गुरु महाराज पंडित श्रीविवेकहर्षगणिए संघाडा सहित तेज श्रीगुरु महाराजनो महाराज श्रीजारमल्लजीना

आग्रहयुक्त थयेलो आदेश पामीने श्रीभक्तामर आदिकनी स्तुतिपूर्वक भक्तिथी पसन्न थयेला श्रीऋषभदेव प्रभुना उपासक एवा देवविशेषनी आज्ञावडे करीने पहेलो विहार अहीं श्रीकछदेशमां कर्यो. वली तेमां पण संवत् १६५६ वर्षे श्रीभुज नगरमां पहेलुं चोमासुं अने बीजुं चोमासुं रायपुर बंदरमां कर्युं. वली ते समये श्रीकछ, मछुकांठा, पश्चिम, पांचाल, वागड तथा जेसल आदिक अनेक देशना स्वामी एवा तथा महाराज श्रीखेंगारजीनी गादीने शोभावनार एवा तथा व्याकरण अने काव्य आदिकोनां परिज्ञानवाला तथा तेवा प्रकारनी महत्ता स्थिरता तथा

धैर्यता आदिक गुणोवडे करीने दूर
करेल छे सरस्वतीने जेमणे एवा
तथा महान् अनवस्था अने विरो-
धनो त्याग करावनारा अने यादव
वंशनी अंदर सूर्य समान एवा महा-
राजा राजाधिराज श्रीनारमल्लजीए
विनति करवाथी श्रीगुरु महाराजे ते-
मनी इछापूर्वक विहार कर्यो. ते-
मज काव्य तथा व्याकरण आदि-
कनी गोष्ठीथी तथा स्पष्ट रीते अष्ट
अवधान आदिकनो उत्कृष्ट पंडिता-
इनो गुण देखाडवावडे करीने खुशी
करेला एवा ते राजाए श्रीगुरु महा-
राज प्रत्ये पोताना देशोमा जीवहिंसा
न थवा देवा माटेनो (लेख करी
आपवानो) कृपा करी ते लेखनो

खुलासो नीचे मुजब छे. हमेशां गा-
यनी बिलकुल हिंसा थाय नहीं; ते-
मज ऋषिपंचमी सहित पर्युषणना नवे
दिवसोमां,आद्रपक्षमां,सघली अग्या-
रसोए, रविवारे तथा अमावास्याए ते-
मज महाराजना जन्मदिवसे तथा रा-
ज्यदिवसे पण सघला प्रकारना जी-
वोनी हिंसा न थाय. एवी रीतनी
सर्व दिशाउंमां अने सर्व जगोए
उद्घोषणा करावी. त्यारबाद एक
वखते श्रावण मासनुं वार्षिक पर्व
पालवानी महाराजाए आज्ञा करते
छते ब्राह्मणे ते अंगीकार न कर-
वाथी तेने बोलावीने श्रीगुरु महा-
राजे शिक्षा करावी. तेमज गुरु महा-
राजे कहेली श्रावण मासनी वार्षिक

व्यवस्थावाळी सिद्धांतना अर्थोनी युक्ति सांभळीने तुष्टमान थयेला राजाए श्रीगुरु महाराज प्रत्ये महेरबानी पूर्वक पोतानी मोहोर छापवाळां सात जयपत्रो आप्यां; अने प्रतिपक्षीने पराजित पत्रो एटले हारवानां पत्रो आप्यां अने तेवी रीतथी राजनीति बतावीने राजाए पोतानो उत्तम प्रकारनो न्यायधर्म श्रीरामनी पेठे सत्य कर्यो. वळी अमारा गुरु महाराजनो एटलो प्रभाव तो शुं हिसावमां छे केमके जे गुरु महाराजे श्रीमलकापुरमां वाद करवानी इच्छावाळा मूळा नामना मुनिने जीतेलो छे, तेमज प्रतिष्ठान पुरमा यवनोने महोडेथी पण श्रीजैनधर्मनी जेमणे

स्तुति करावेली छे; वली एटलामां आवी मलेला एवा सेंकडो गमे ब्राह्मणोने युक्तियो देखाडीने जेमणे जीतेला छे. तेमज बोरिदपुरमां वादीउंना उपरी एवा देवजीने जेमणे मौन करावेलुं छे ॥ १ ॥ वली जेमणे जैननी न्यायवाणीथी दक्षिण देशमां रहेला जालणानगरमां विवाद पदवीपर चमावीने दिगंबराचार्यने कहाडी मूकेलो छे, तेमज रामराजानी सज्ञामां जेमणे आत्माराम नामना वादीश्वरने हरावेलो छे एवा ते उत्तम बुद्धिवाला श्रीविवेकहर्षगणि महाराजनी पासे राजा पण शुं हिसाबमां छे ॥ २ ॥ वली अमारा श्रीगुरु महाराजना मुखमांथी नीक

लेला महान् शास्त्रोरूपी अमृतना सागरमां लीन थयेला श्रीभारमल्लजी महाराजाए श्रीऋषजदेव प्रजुनी घणी मान्यता धारण करी तथा तेमनी जक्ति माटे ते श्रीजारमल्लजीए जुजनगरमां राजविहार नामनुं अत्यंत अद्भुत श्रीजिनेश्वर प्रजुनुं मंदिर बनाव्यु ॥ ३ ॥ हवे सं. १६५६ नी सालमां श्रीकच्छदेशनी अंदर रहेला जेसल्ला मंरूलमां विहार करनारा श्रीगुरु महाराजे घणां धनधान्योथी मनोहर थयेला एवा श्रीखाखर गामने प्रतिबोधीने सारी रीतनुं धर्मक्षेत्र बनाव्युं के ज्यांना राजा महाराजा श्रीजारमल्लजीना जाइ कुंअरश्री पचायणजी हता के जेमणे म-

दयुक्त अने प्रबल पराक्रमे करी दि-
शाचक्रने दबाव्युं हतुं तथा जे सूर्य
सरखा प्रताप अने तेजवाला हता.
वली जेमनी पट्टराणी पुष्पांबाइ आ-
दिको हती तथा तेमना पुत्रो कुंअर
उजाजी, हाजाजी, नीमजी, देसरजी,
देवोजी तथा कमोजी नामना हता
के जेउं शत्रुउंरूपी हाथीउंनी श्रेणिने
हराववामां केसरीसिंह सरखा हता.
वली त्यां रहेला सेंकडो गमे ओशवा-
लोनां घरोने सम्यक् प्रकारे जिनधर्म
प्रतिबोधीने तथा श्रावक संबंधी
सघली सामाचारी शीखवीने तेमणे
उत्कृष्ट श्रावक बनाव्या. वली त्यां
नजीकपणुं, दान तथा शूरापणुं आ-
दिक गुणोथी उपार्जन करेला यशना

फेलावारूपी कपूरना समूहथी सुगंध युक्त करेल ठे ब्रह्मांड मांड जेमणे एवा शा. वयरसी नामना गामना पटेलने तेना कुटुंब सहित श्रीगुरु महाराजे एवो तो प्रतिबोध आप्यो के, जेथी तेणे घंघर गोत्रीय शा. शिवा पेथा आदिक सहित श्री- तपागछनी राजधानी सरखो नवो उपाश्रय बनाव्यो. तेमज श्रीगुरुम- हाराजना उपदेशे करीनेज गुजरा- तनी भूमिमांथी सलाटोने बोलावीने शा. वयरसीए श्रीसंभवनाथजीनी प्रतिमा करावी १ तथा तेना शा सायर नामना पुत्रे श्रीआदिनाथनी प्र- तिमा करावी २ तथा शा. वीजा ना- मना पुत्रे श्रीविमलनाथ प्रभुनी

प्रतिमा करावी. वळी तेनी प्रतिष्ठा (अंजनशलाका) तो शा. वयरसीएज सं. १६५७ नी सालमां महा सुदि १० सोमवारे श्रीतपागछ नायक भट्टारक विजयसेनसूरि गुरु महाराजना हुकमथी अमारा गुरु श्रीविवेकहर्षगणिना हाथेज करावी छे. त्यारबाद आ देरासर पण अमारा गुरुना उपदेशवडे करीनेज फागण वदी १० मे उत्तम मुहूर्त्ते उपकेश गछना भट्टारक श्रीकक्कसूरिए बोधेला श्रीआणंदकुशल श्रावके उशवाल ज्ञातिना पारिख गोत्रवाला शा. वीराना पुत्र डाहा तेना पुत्र जेठा तेना पुत्र शा. खाखण तथा तेना पुत्ररत्न शा. वयरसीए तथा पुत्र

शा. रणवीर शा सायर शा. महिक-रण तथा बहुर्ज जमा, रामा अने पुरी तथा पौत्र शा. मालदेव, शा. राजा, खेतल, खेमराज, वणवीर, दीदा तथा वीराआदिक कुटुंब सहिते प्रा-रंन्यु. वली घंघर गोत्रवाला अने पुनमीया कुलगुरु भट्टारकनी निश्रा-थी श्रावक थयेला एवा शा. कंथडना पुत्र शा नागीया तथा मेरग नामना सगा भाइर्ज पुत्र पांचासा सहित तेमां मदद करनारा हता, अने ते-मणे राजानी निर्मल कृपाथी कुटुंब सहित तेमा मदद करेली छे. आ श्रीशत्रुजयावतार नामनुं देरासर छे. संवत १६५१ ना फागुण वदी १० मे प्रारंभेलुं छे तथा संवत १६५९

ना फागुण सुदि १० मे अहीं संपूर्ण थयुं छे. वली तेथी आनंदथी कच्छदेशना शणगार रूप एवा श्रीखाखर नामना नगरमां कल्याण थयुं छे. संवत १६५ए ना फागुण सुदि १० मे पंडित श्रीविवेकहर्षगणिए आ जिनेश्वर भगवान्ना तीर्थ रूप मंदिरनी प्रतिष्ठा करेली छे; अने आ प्रशस्ति विद्याहर्षगणिजीए रचेली छे. संवत विक्रमनो जाणवो.

आ शिलालेखनो जीर्णोध्धार तपगच्छरूपी आकाश मंडलमां सूर्यसमान एवा श्रीविजयानंद सूरीश्वरजीना (श्रीआत्मारामजी सूरीश्वरजीना) शिष्य पंडित श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराजना शिष्यरत्न मुनीश्वर

श्रीमद् हंसविजयजी महाराजना सडुपदेशथी तेमना शिष्य पन्यास पदवीने धारण करनारा श्रीमान् संपद्विजयजी महाराजनी प्रेरणाए करीने संवत १८६१ ना अशाड वदी आठमना दिवसे थयो छे आ शिलालेखनुं गुजराती भाषांतर जामनगरनिवासी श्रावक हीरालाल हंसराजे करेलुं छे.

प्रश्न १६८ उपरना लेखमां दर्शावेलुं छे के भारमल्लजी महाराजाए भुज पत्तनमा श्रीयुगादि प्रभुनो राजविहार नामे अति अद्भुत प्रासाद बधाव्यो, तेना निर्णय माटे कोइनुं ध्यान खेंचाय तो तेना दृढ पुरावारूप त्याना देरासरमा कोइ शिलालेख छे के नहीं ?

उत्तर श्रीकछ देशना शिरताज भुज

शहेरमां आवेला श्रीऋषनदेव स्वामीना चैत्यमां एक काव्यबंध प्राचीन शिलालेख छे. तेना केटलाएक अक्षरो भ्रांतिवाला होवाथी तेनो किंचित्तात्पर्यार्थ इहां आपीए छीए.

प्रथमना काव्यमां जैनेंद्रनी जाग्रत् ज्योतिनी उपासना करी छे. बीजा काव्यमां कुलदीपक श्रीखेंगार नरेश्वरनी तारीफ करी छे. त्रीजाथी आठमा सुधीनां काव्योमां यादववंशीय भारमल्ल भूपाल अने तेमना पुत्रोनी कारवाइनुं बहु रसिलुं वर्णन करेलुं छे. नवमा काव्यमां श्रीभारमल्लजीए तपागछीय श्रीविवेकहर्ष महर्षिने तेडावी तेमनी पासे धार्मिक कथा करावी तेनुं तथा ते महर्षिना अष्टावधानादि प्राज्ञताना गुणथी अने तेमनी अकल दोलतथी रंजीत थयेला ते कदरदान राजाए संपूर्ण देशमां गोवध बंध

कराव्यो तेनु तथा जैनोना दीक्षोजानी आवकारदायक पर्यूषणादि पर्वमा सर्व प्राणीओनो छुटको कराव्यो तेनु व्यान करेलुं छे दशमा काव्यमां खुरानसीव भारमल्लजीए जीवोना जान बचाववा छुतल उपर करेलु अजयदान वर्णवेलु छे. अगीआरमा काव्यमां भक्ति भावनो दावो करनार एवा ते राजाए भक्ति माटे मोटा पायापर करावेला अद्भुत राजविहार नामना श्रीयुगादि प्रभुना प्रासादनी नोंध लीधी छे वारमा काव्यमा श्रीनाभेय जिननी तथा चिंतामणि पार्श्वनाथनी तथा शीतलनाथजीनी मूर्तिओ करावी निर्माय बुद्धिवाला अने मूर्तिपूजाना हिमायती एवा ते राजाए श्रीविवेकहर्षगणिनी उपदेशप्रथाने सफल करी पूज्य बुद्धि वतावी ते वर्णवेली छे. तेरमा काव्यमा श्रीतपागण गगना-

त्यादि तीर्थयात्रानां फलो श्रीकथाकोश ग्रंथमां निवेदन करेलां ने.

॥ तद्यथा ॥

आरंभाणां निवृत्तिर्द्रविणसफलता संघवात्सल्यमुच्चैर्नैर्मल्यं दर्शनस्य प्रणयिजनहितं जीर्णचैत्यादिकृत्यम् ॥ तीर्थोन्नत्यं प्रभावो जिनवचनकृतिस्तीर्थकृत्कर्मकृत्त्वं, सिद्धेरासन्नभावः सुरनरपदवी तीर्थयात्राफलानि ॥ १ ॥

प्रश्न १७१. कच्छ देशमां कोइ अति प्राचीन जिनप्रासाद हयातीमां ने के नहीं ?

उत्तर. कच्छमां आवेला श्रीभद्रेश्वरमां ताजुबी उपजावनारो अने एके अवाजे वखणातो एवो एक बावन जिनालयवालो मोटो जिनप्रासाद ने. ते घणो

प्राचीन ठे, एवुं त्यांना मूल मंदिरमां रहेला शिलालेख उपरथी सावीत थाय ठे ते शिलालेखनो केटलोएक साराश जाहेरना जाण माटे इहा आपीए ठीए

प्रारंभमा त्रण काव्योथी कामितक- श्रीमहावीर स्वामी अने गुणना एवा श्रीपार्श्वनाथनी स्तुतिरूप [illegible]चरणपूर्वक लेखनी शरुआत करी तेमा जणाववामां आव्युं ठे के 'श्रीकच्छ देशमां भद्रावती नामे नगरी हती ते पुरीमा महर्धिक शिरोमणि हिंमतवाज देवचंद्र नामनो एक श्रीमान् श्रेष्ठिपुंगव निवास करतो हतो ते सुश्रावके लाखो गमे द्रव्य खरची वीर संवत् २३ मां जैन लोकोनी जाहोजलाली सूचवनारुं आ देरासर बधाव्युं, अने तेमां श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा मूलना-

देरामां पधरावी, ने मूलनायकपदे श्री-महावीर स्वामीनी मूर्त्ति स्थापन करी. त्यारथी आ देरासर श्रीमहावीर जि-ननुं छे एवी निर्विवाद जागृति थइ ॥ इत्यर्वाचीनकालीनोऽयमितिहासः ॥

आ प्रकारे वखतने वीततां जडावती कथाशेष थइ तोपण शासन देवतानी सहायताथी अने श्रीसंघना प्रचुरतर पुण्योदयथी अद्यापि पर्यंत आ देवल आबाद रह्युं, ते जोइ श्रीसंघना चित्तमां परम हितकर प्रशंसनीय लाग-णीवालो अभिप्राय उत्पन्न थयो के इहां प्रति वर्षे फागण मासमां सर्व संघनो मोटो मेलो भरी आ तीर्थनी मोटा आडंबरथी यात्रा प्रवर्तावीए तो ठीक. ते जिज्ञासाने अमलमां मूकवा दृढ नि-श्चय थतां संवत् १९३४ ना वर्षथी मेला-वडानी शरुआत थइ. त्यारथी वर्षोवर्ष

हजारो माणसोनो मेलो फागण शुद ५ उपर भराय छे, अने जलयात्रानो वरघोडो काढवापूर्वक सर्व शिखरो उपर ध्वजाओ चढाववामां आवे छे. आ चैत्य अति पुरातन कालनु होवाथी हालना वखतमा तेने जीर्ण थयेलु जोइ कच्छ-मांडवीना रहीश शा पीतांवरदास शातिदासवाला शा मोणसीभाइनी भार्या मीठीबाइए ५०००० कोरीना खरचे सवत् १९३९ मा आ श्रीमहावीर स्वामी महाराजना मदिरनो जीर्णोद्धार कराव्यो ॥ इति साप्रतकालीनोऽयमितिहास ॥

प्रश्न १७२ चैत्र मासमा साधु साध्वीओ अचित रज सवधी कायोत्सर्ग न करे तो काइ हरकत छे ?

उत्तर उक्त मासमां त्रण दिन कायोत्सर्ग न करे तो एक वर्ष सुधी सूत्रनो

स्वाध्याय न थइ शके एवुं श्रीआवश्यक-
जीमां निरूपण छे.

॥ तथाहि ॥

चेतपख सुध्दसमीए अवरन्हे जोगं निखिवति दसमीतो परंण जावपोणिमा एथंतरे तिन्निदिणाउवरुवरीं अचित्तरयोग्घाम्हावणकाउसग्गंकरेंति तेरसिमादीसु वा तीसुदिणेसु तो साज्ञाविगेपडंतेवि संवछरं सझ्झायं करेंति अह तं उस्सग्गं न करंति तो साज्ञाविगेविपडंते सझ्झायं न करेंति ॥

प्रश्न १७२. महान् शास्त्रकारोए साधुपणाने केवुं वर्णवेलुं छे ?

उत्तर. जेमां राजानो के चोरोनो जय नथी, जे उत्तम कीर्त्ति अर्पण करे छे, जेनामां मनुष्य अने देवोनुं हित समायेलुं छे, जेनाथी आलोक परलोकमां

सुख थाय छे, एवु आ साधुत्व अत्यत रमणीक छे

वली ज्यां जिनराज देव छे, शांतनिधि गुरु छे, कृपासमुद्र धर्म छे, शुद्ध अन्नपान अने वस्त्रवडे प्रवर्त्तन छे, चिदानंद माटे विद्या छे, शरीररक्षा माटे क्षमा छे, गुणमणिमालानो मोटो शणगार छे, तेवा श्रमणपणाने पामीने कल्पवृक्षना लाजनी माफक कयो माणस खुशी न थाय ? अलबत हरेक कोइ खुश थायज

॥ तथाहि ॥

न च राजभयं न च चौरभयं
वरकीर्त्तिकरं नरदेवहितम् ॥
इहलोकसुखं परलोकसुखं,
श्रवणत्वमिद रमणीयतरम् ॥१॥
देवो यत्र जिनो गुरु शमनिधिर्ध-

र्मैः कृपावारिधिः, शुद्धैर्वर्त्तनमन्न-
पानवसनैर्विद्या मनःप्रीतये ॥
रक्षायै वपुषः क्षमा गुणमणि-
श्रेणिः परं भूषणं, श्रामण्यं तदवाप्य
माद्यति न कः कल्पद्रुमाप्तौ यथा ॥

प्रश्न २७४. सूर्योदय वखते अमुक तिथिनो टाइम अल्प होय अने तेज दिवसे बीजी तिथिनो टाइम घणो होय तो कइ तिथि प्रमाण राखवी ?

उत्तर. सूर्योदय वेलामां जे तिथि होय तेज प्रमाण थाय छे. ते सिवायनी घणा टाइमवाली इतर तिथि स्वीकारवामां आवे तो आज्ञाभंग, अनवस्था, मिथ्यात्व अने विराधना दोषने पामे एवुं श्रीनिशीथ भाष्यमां निवेदन करेलुं छे.

॥ तथाहि ॥

उदयम्मि जा तिहि सा, पमाणमिअरी

कीरमाणीए ॥ आणाजंगणवडा, मि-
च्छत्त विराहणं पावे ॥१॥

प्रश्न १७५ कोइए प्रतिदिन पोसह कर्यो होय तेवो कोइ शास्त्रीय दाखलो छे ?

उत्तर वृंदारुवृत्तिमां एवो एक दाखलो छे के एकदा प्रस्तावे जिनदेव श्रावक पोताना लघु भ्राताने कुटुंबभार सोंपी हमेश विधिपूर्वक पोसहशालामां पौषध करवा लाग्यो

॥ तथाहि ॥

कुटुंबभारमारोप्य, जिनदेवोऽन्य-
दाऽनुजे ॥
पौषधं पौषधागारे, प्रत्यह विधि-
वद् व्यधात् ॥ १ ॥

प्रश्न १७६ तपरूप घरट्ट केवो छे अने ते शुं करे छे ?

उत्तर क्षमारूप माकडीवालो, दृढ-

तारूप हाथावालो अने मनरूप मजबूत खीलावालो तपरूप तीव्र घरट्ट कर्मरूपी धान्यनो चूरो करे छे.

॥ तदुक्तं श्रीपालचरित्रे ॥

तपस्तीव्रघरट्टोयं, क्षमामर्कटिकान्वितः

धृतिहस्तो मनः कीलः, कर्मधा-
न्यानि चूरयेत् ॥ १ ॥

प्रश्न १७७. चिंता अने चिता ए बेमां अधिकता कोनी छे ?

उत्तर. चिंता चिताथी पण अधिक छे, कारणके चिंता शब्द अनुस्वार युक्त होय छे अने चिताने ते होतो नथी. वली चिता तो एकवारज शरीरने बाले छे, त्यारे चिंता सतत देहने दग्ध करे छे.

॥ उक्तं च श्रीपालचरित्रे ॥

चिंता चितातोऽप्यधिका-नुस्वा-
रेण युता यतः ॥

चितैकशो दहेद्देहं, चिंता दहति सर्वदा ॥ १ ॥

प्रश्न १७८ पासथ्थादिकने वांदवामां कांइ नुकशान छे ?

उत्तर पासथ्थादिकने वंदन करनारनी कीर्त्ति के कर्मनिर्जरा होती नथी, पण ते कायक्लेश तथा कर्मबंध करे छे ॥ यदुक्तं श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमे ॥

पासछाई वंदमाणस्स, नेव कित्ती न निजारा होइ ॥ कायकलेस एमेव, कुणइ तह कम्मबंधं च ॥ १ ॥

प्रश्न १७९ महान् नरो उपर कोइ कष्ट आवी पडे त्यारे अने ग्रहण लागे त्यारे जिज्ञासा जाग्रत राखनार मनुष्ये केवी रीते वर्तवु ?

उत्तर देव, साधु, राजा अने स्व-

जनो कष्टमां आवी पडे त्यारे अने ग्र-
हण वेलाए विवेकी माणसे छती शक्तिए
भोजन न करवुं.

॥ प्रोक्तं च श्राद्धविधौ ॥

देवसाधुपुरस्वामि,स्वजनव्यसने सति
ग्रहणे च न भोक्तव्यं, शक्तौ स-
त्यां विवेकिना ॥ १ ॥

उपर बतावेला श्लोक उपरथी सा-
बीत थाय छे के ग्रहणना दिवसे जे
लोको पाणी प्रमुख पदार्थोंने फेंकी दे छे
अने मृन्मय भाजनोने फोडी नाखी
स्नानादिकनो मोटो आरंभ करे छे ते
निरर्थक छे. जो सार्थक होय तो घृतादि
बहु मूल्यवाला पदार्थों फेंकी दइ काच
प्रमुखना भाजनोने केम फोडी नाखता
नथी ? आवां परस्पर विरुद्ध आचरण
तो केवल उपहास्यजनक होय छे. वास्ते

सुज्ञ जनोए आ हानिकारक रीवाज पण वेशक तावडतोव दवावी देवो जाइए, कारणके महाभारतादिकमा पण कह्युं छे के जेटलु पाप माछीमारने एक वर्षमां थाय छे तेटलु पाप अगलित पाणी ग्रहण करी वापरनारने एक दिवसमां थाय छे

॥ तथाहि ॥

संवत्सरेण यत्पाप, कैवर्त्तस्येह जायते ॥

एकाहेन तदाप्नोति, अपूतजलस-ग्रही ॥ १ ॥

प्रश्न १७० गृहस्थ लोकोना पत्रमा 'श्रीपंच' लखवामां आवे छे तेनुं शु कारण ?

उत्तर नीचे वतावेली पांच प्रकारनी लक्ष्मीथी युक्त गृहस्थ होय छे, वास्ते 'शाह श्रीपच' लखवामां आवे छे.

॥ तथाहि ॥

प्रथम धान्य ने बीजे धन, त्रीजे स्त्री ने चोथे तन ॥ पांचमे होय पशुनो संच, लखाय कागलमां श्रीपंच ॥१॥

प्रश्न १८१. हरेक कोइ साधु उपधाननी क्रिया करावी शके के नहीं ?

उत्तर. तत्त्वतरंगिणी नामना शास्त्रमां कह्युं छे के महानिशीथ सूत्रादिना योगानुष्ठान करनाराउंएज उपधानादिक करावबुं युक्त छे, पण योगोद्वहन कर्या सिवायना मुनिउंए उपधानादि क्रिया करावबी योग्य नथी. तथापि कोइ करावे तो जिनाज्ञा जंगादि दोषवडे संसारमां परिभ्रमण करवानो प्रसंग आवे. ते हेतुथी हरेक मुनिए उपधान क्रिया करावबी नहीं.

॥ तथाहि ॥

कृतमहानिशीथादियोगानुष्ठानानामे

वोपधानवाहनादियुक्त नेतरेषामाज्ञा-
ऽंगादिदोषैःसंसारपरिभ्रमणप्रसंगात्

प्रश्न १७४ जैन सिद्धांतमां अपश-
कुन के दुर्निमित्तना प्रतिघातनो कोइ
हितकर उपाय बतावेलो छे ?

उत्तर जो कदापि वहार के ग्रामां-
तरे गमन करतां अथवा बीजा कोइ
कार्यना प्रारंभमा वस्त्रादिनु स्खलन वा
अपशुकन के दुर्निमित्त थाय तो ते स-
र्वेना प्रतिघातने वास्ते पंच मंगलरूप
आठ श्वासोछ्वास प्रमाण नवकार मंत्रनुं
ध्यान करवुं, अथवा गमे ते स्वाध्याय
रूप बे श्लोकनु चिंतवन करवु तेम न
बने तो जेटला कालमा बे श्लोकनु चिं-
तवन करी शकीए त्यां सुधी तेज वखते
एकाग्रचित्ते कायोत्सर्गमा स्थित थइ
शुभ अंत करणवाला थवु आ प्रकारनुं

फरमान जैन धर्मना पवित्र पुस्तक श्रीव्य-
वहार सूत्रनी वृत्तिमां छे.

॥ तथाहि ॥

इहयदि बहिर्गमने प्रयोजनांतरप्रारंभे वा वस्त्रादेः स्खलनं भवति आदिशब्दात् शेषाऽपशकुनदुर्निमित्तपरिग्रहः तेषु सर्वेषु स्खलनादिषु समुपजातेषु तत् प्रतिघातनिमित्तं पंचमंगलमष्टोच्छ्वासप्रमाणं नमस्कारसूत्रं ध्यायेत् यदि वा यौ वा तौ वा स्वाध्यायभूतौ द्वौ श्लोकौ चिंतयेत् अथवा यावता कालेन द्वौ श्लोकौ चिंत्येते तत्क्षणं तावंतं कालं एकाग्रः कायोत्सर्गस्थः सन् शुभमना भूयात् ॥

प्रश्न १८२. औषध अने भेषजमां शो फरक छे ?

उत्तर. औषधमां अनेक वस्तु मळेली

होय छे, तेम भेपजमां द्रव्यसयोग होतो नथी अथवा हरडे प्रमुखने औषध कहेवामां आवे छे, त्यारे पीवा प्रमुखमां वपराती दवाने भेपज कहेवाय छे

॥ यदुक्तं गच्छाचारलघुटीकायाम् ॥

॥ तथाहि ॥

तत्रौपधमनेकद्रव्यसंयोजित तद्व्यतिरिक्त भेपजं यद्वा औपध हरीतक्यादि भेपज पेयादि च ॥

प्रश्न १८४. सारजी श्वेत वस्त्रवाला गच्छने सेववो के केम ?

उत्तर स्फाटकीगृह सदृश्य घटी, उखल, चुल्लक, जलगृह अने सावरणीना आरंभमा प्रवर्त्तनार अने समुद्रफेन जेवा सफेद वस्त्रना वपरादे उज्जल एवा गछने सेववो नहीं, पतु गछाचार सूत्रनु फरमान छे

॥ तद्यथा ॥

सूणारंन्नपवत्तं, गह्नं वेसुजालं न सविज्जा ॥

॥ टीका यथा ॥

शुनारंन्नप्रवृत्तं षड्जीवमर्दनपरं खंडन्याद्यारंन्नकर्तारं वा गह्नं साध्वान्नासगणं वेषेण कल्पकंबलीचोलपट्ट-रजोहरणमुखपोतिकादिलक्षणनेपथ्येन साधुद्रव्यलिंगेनेत्यर्थः उज्वलं सागरडंडीरवत् परमश्वेतं वेषोज्वलं न सेवेत डुःखलक्षसंसारवर्द्धकत्वात्॥

प्रश्न १८५. निर्जरा अने मोक्षमां शो फरक ठे ?

उत्तर. गह्नाचार पयन्नानी टीकामां जणाववामां आव्युं ठे के मोटा प्रन्नाविक गह्नमां निवास करनारा साधुर्ड विस्तीर्ण निर्जरा करवापूर्वक मोक्ष मेलवी शके

छे त्यां निर्जरा अने मोक्षनो तफावत दर्शावतां निर्जराने देशकर्मक्षयरूप अने मोक्षने सर्वकर्मक्षयरूप बतावेल छे

॥ तथाहि ॥

महाननुभावः प्रभावो यस्यासौ महानुभाव तत्र गछे वसतां वासंकुर्वता निर्जरा देशकर्मक्षयरूपा उपलक्षणत्वात् सर्वकर्मक्षयरूपो मोक्षो भवतीति शेष ॥

प्रश्न १७६ एकी वखते बावीश परीषह वेदवामा आवे के नहीं ?

उत्तर नवमा गुणस्थान सुधी सर्व परीषहनो संभव छे, पण वेदवामा तो वीशज परीषह आवे छे, कारणके जे समयमा शीतनो अनुभव करे ते समयमा उष्णत्व वेदे नहीं, अने जे समयमा उष्णत्वनो अनुभव होय ते समये शीतत्व

वेदे नहीं; तेमज जे समये चर्या अनुभ-
वतो होय ते समये नैषेधिकीनो अनुभव
होय नहीं, अने जे समये नैषेधिकी
होय ते समये चर्या होय नहीं.

॥ ह्येतदपि गच्छाचारटीकायां प्रोक्तमास्ति ॥

॥ तद्यथा ॥

नवमगुणस्थानकं यावत्सर्वे परी-
षहाः संभवंति पुनर्वेदयंति विंशति-
मेव यतो यस्मिन् समये शीतं वेद-
यति न तस्मिन् उष्णत्वं वेदयति य-
स्मिन्नुष्णं तस्मिन् शीतं न तथा य-
स्मिन् चर्यां वेदयति तस्मिन्नैषेधिकीं
नयस्मिन्नैषेधिकीं तस्मिन् चर्यां न
वेदयतीति ॥

प्रश्न १७७. सचित माटी के पाणीमां

थइ गमन करवानुं आवी पके त्यारे साधु साध्वीए वेमांथी कयो रस्तो लेवो ?

उत्तर जलमां माटी अने त्रसादि अनेक जीवोनो संजव होवाथी जलमार्ग गेमी स्थलमार्ग उपर चालवु

प्रश्न १७७ सचित माटी के वनस्पति सिवायनो मार्ग न होय तो केम करवु ?

उत्तर वनस्पतिमा पण तेज पूर्वोक्त दोपनो संजव होवाथी त्यां न चालता पृथ्वी उपर चालवु

प्रश्न १७९ सचित माटी के त्रस जीववालो रस्तो होय तो क्यां जवु ?

उत्तर त्रस जीव रहित अथवा विरल त्रस जीववाला मार्गे यत्नाथी जवु, पण जो निरतर त्रस जीव पथराइ गया होय तो मृत्तिकावाला मार्गे जवु

प्रश्न १ए०. एक तरफ जल अने बीजी तरफ वनस्पति होय तो कयो रस्तो लेवो ?

उत्तर. उदकमां नियमथी वनस्पतिनो सद्भाव छे माटे अप्कायनी विराधना उपरांत बीजी पण हिंसा थाय छे तेथी वनस्पतिवालो मार्ग लेवो. उपर बतावेला चार प्रश्नोनो खुलासो गछाचार टीकामां नीचे मुजब आपेलो छे.

॥ तथाहि ॥

पृथिव्युदकयोर्गमने प्राप्ते पृथिव्यां गम्यं उदके पृथ्वीत्रसादिसद्भावात् ॥ १ ॥ पृथिवीवनस्पत्योः पृथिव्यां च गम्यं वनस्पतौ तद्दोषसंभवात् ॥ २ ॥ पृथिवीत्रसयोस्त्रसरहिते विरलत्रसे वा गम्यं निरंतरे तु पृथिव्याम् ॥ ३ ॥ जलवनस्पतिकाययोर्व-

नस्पतिना गम्यम् उदके नियमाद्वन-
स्पतिसद्भावात् ॥ ४ ॥

प्रश्न १ए१. गीतार्थ मुनि कोने
कहेवा ?

उत्तर वर्तमान कालमां जे श्रुतज्ञान
वर्त्ते ठे तेनो गुरु परंपराथी अर्थ ग्रहण
करनार एटले अर्थ निश्चय करनार गी-
तार्थ कहेवाय ठे

॥ उक्तं च गच्छाचारटी-
कायाम् ॥

वर्तमानकाले यत्सूत्रं वर्त्तते तस्य
गुरुपरपरया गृहीतार्थाः विनिश्चिता-
र्थाः गीतार्था नवंति ॥

प्रश्न १ए२ साधुउने विचरता कदापि
रस्तामा नाव प्रमुखथी उतरया
तेवुं नदी आदिकनु जल आवे त्यारे केम
करवु ?

उत्तर. होमी प्रमुखथी उतराय तेवुं नाना प्रमाणवालुं जल आवे त्यारे नीचे बताव्या मुजब यत्न करवो. जेमके बे योजन अर्थात् आठ गाउ फरीने पण रस्ते जवातुं होय तो नावमां न बेसवुं. कदापि स्थल मार्गें शरीर तथा उपगरणना नाश करनारा चोर, सिंह के हाथी होय अथवा ते मार्गें जोजन के उतरवानी जगा न मले तेवुं होय तो दोढ योजन संघट्ट जवुं, एटले घुंटण नीचे अडधी ज़ंघा सुधीना पाणीमां जवुं, पण नावमां न बेसवुं. जो उक्त संघट्ट प्रमाण जलवालो मार्ग न होय अने होय तो सदोष होय तो एक योजन सुधीना फेरवाला नाभिप्रमाण जलमां जवुं, पण नावमां नहीं बेसवुं. जो नाभिप्रमाण जलवालो लेप मार्ग पण नथी अने छे तो पूर्वोक्त दोषयुक्त छे, त्यारे तो अर्ध योजनना फेरवाला लेपोपरी

मार्गे जवु अर्थात् नाभिथी वधारे जल-
वाला मार्गे जवु, पण नावमां न वेसवु.
हवे तेवो मार्ग पण न होय अने
होय तो सदोष होय त्यारे छेवटे नावमां
वेसीने पण उतरवु एवीज रीते दोढ
योजनना चक्रवाला स्थलमार्गे जवुं, पण
नाभि उपरना जलमां न उतरवु स्थल
मार्ग न होय अथवा सदोष होय तो एक
योजनना संघट्टे अर्थात् अर्ध जंघाप्रमाण
जलमार्गे जवुं, परंतु नाभि उपरना ज-
लमा न उतरवु. हवे संघट्ट प्रमाण जल-
मार्ग पण न होय अथवा सदोष होय
तो अर्ध योजनवाला लेपमार्गे एटले ना-
भिप्रमाण जलमार्गे जवुं, पण नाभि उ-
परना जलमां न उतरवु एज प्रमाणे
एक योजनना चक्रमार्गे स्थलमां जवु,
पण नाभिप्रमाण जलवाला लेपमार्गे न
जवु कदापि स्थलमार्ग न होय अने

होय तो पूर्वोक्त दूषणयुक्त होय त्यारे अर्ध योजनना संघट्टमार्गे एटले अर्ध जंघाप्रमाण जलमार्गे जवुं, पण नाभिप्रमाण जलमां न उतरवुं. एज रीते अर्ध योजननो एटले बे गाउनो फेर लइ स्थलरस्ते जवुं, परंतु संघट्टमार्गे न जवुं. अर्थात् अर्ध जंघाप्रमाण जलमां न उतरवुं. आ प्रकारे मार्गना अभावे कारणसर नावमां बेसीने पण नदी उतरतां मुनिओने कोइ तरेहनो दोष जिनेश्वरे कह्यो नथी. वास्ते तरतम योगथी लाभालाभ जोइ साधु साध्वीओए नदी उतरवी. एवुं गच्छाचार लघुटीकामां फरमान छे—

॥ तद्यथा ॥

दोजोयणावंकेणं, थलेण परिहरइ बेडियामग्गं ॥ सढजोयणाघट्टेणं १ जोयणलेवेण २ उपरिंदोगाऊ ३

॥ १ ॥ सढजोयणवकेण, थलेण ले-
वोवरिं च वजेइ ॥ अ-ध्जोयणलेवेण
१ संघट्टेणेगजोयणेणं च ॥ २ ॥ २ ॥
एगजोयणथलेणं, संघट्टेण-ध्जोयणे-
ण मुणी ॥ लेवं वजाइय तहा, घट्ट
अ-ध्जोयण थलेण ॥ ३ ॥ एवं म-
ग्गाभावे, नावाइहिंपि कारणे मुणि-
णो ॥ गछतस्सवि दोसो, न कोवि
ज्ञणिर्ड जिणंदेहिं ॥ ४ ॥

प्रश्न १ए२ गुरुने वंदन करवाथी शो लाज ?

उत्तर. गुरुने वंदना करवाथी अन्यतर तपनो लाज ठे, कारण के ते विनयरूप ठे एवु श्रीमलयगिरिनिर्मित आवश्यकवृत्तिना प्रथम खंमां दर्शाव्युं ठे

॥ तद्यथा ॥

वंदनस्य विनयरूपत्वात् तस्य चाभ्यंतरतपोभेदत्वात् ॥

तथा श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमां २ए मा अध्ययनमां पण कह्युं छे के श्रीगुरुवंदन करवावडे नीच गोत्रकर्म खपावे, अर्थात् नीच गोत्रमां अवतरे नहीं; उच्च गोत्र-कर्म बांधे, एटले उच्च गोत्रमां अवतरे. सौ-भाग्यपणुं याने सर्वलोकवल्लभत्व हांसल करवापूर्वक अप्रतिहत एवुं आज्ञाफल उत्पन्न करे, अर्थात् कोइथी पण निवा-रण न करी शकाय तेवुं आज्ञाप्रधान प्रभुत्व निपजावे; तेमज वली दाक्षि-ण्यभाव एटले सर्व लोकना अनुकूलत्वने जन्म आपे.

॥ तत्सूत्रं यथा ॥

वंदणएणं नीयगोयं कम्मं खवेइ उच्चगोयं कम्मं निबंधइ सोहग्गं च

अप्पडिह्य आणाफलं निवत्तेइ दाहिणभाव च जणयइ ॥

प्रश्न १९४ आगमनो अक्षरार्थ शो छे ?

उत्तर जेनावडे सर्व प्रकारे वस्तुतत्त्व जाणीए तेने आगम कहीए आ प्रकारे श्रीमलयगिरिविरचित आवश्यक वृत्तिमा अक्षरार्थ करेलो छे, अने ते श्रुत ज्ञाननु नामांतर छे

॥ तद्यथा ॥

आसमंतात् गम्यते वस्तुतत्त्वमनेनेत्यागमः श्रुतज्ञानम् ॥

प्रश्न १९५ धारणा कोने कहेवी, अने ते केटला प्रकारनी छे ?

उत्तर निर्णय करेला अर्थने याद राखवो तेनु नाम धारणा छे, अने ते अविच्युति, वासना अने स्मृति एवा

त्रण प्रकारनी छे. तेनो अर्थ आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिमां श्रीमलयगिरि महाराजे आ प्रकारे करेलो छे. निर्णीत अर्थना उपयोगथी अंतर्मुहूर्त्त सुधी नहीं पतित थवुं तेनुं नाम अविच्युति धारणा छे. तेणे करेला संस्कारने वासना नामनी धारणा कहे छे. ते वासना संख्याता अथवा असंख्याता काल सुधी रहे छे. तेनो तात्पर्यार्थ एवो छे के संख्यात वर्षनी उमरवालाने संख्यात काल यावत् अने असंख्य वर्षनी जींदगीवालाने असंख्येय काल सुधी होय छे. त्यारबाद कालांतरे कोइक तेवा पदार्थने देखवा प्रमुखना कारणने लइ संस्कार स्फुट थये छते एवुं ज्ञान थाय छे के तेज आ पदार्थ छे के जे प्रथम मारा जाणवामां आव्यो हतो. आवा प्रकारनी स्मृति धारणा होय छे.

॥ पूर्वोक्त वृत्तिलेशो यथा ॥

तस्यैवार्थस्य निर्णीतस्य धरण धारणा सा च त्रिधा । अविच्युति-- र्वासना-स्मृतिश्च । तत्र तडुपयोगाद्-विच्यवनमविच्युति· । सा चांतर्मुहूर्त्त-प्रमाणा ततस्तया आहितो यः सस्कारः सा वासना सा च संख्येय-मसख्येय वा काल यावद्भवति संख्ये-यवर्षायुषां संख्येय कालमसंख्येयव-र्षायुषामसंख्येय कालमिति भावार्थः । ततः कालांतरे कुतश्चित्ताद्दशार्थदर्श-नादिकात् कारणात् संस्कारस्य प्र-बोधे यत् ज्ञानमुदयते तदेवेद य-न्मया प्रागुपलब्धमित्यादिरूप सा स्मृतिः ॥

प्रश्न १ए६ नाम, स्थापना अने द्रव्य

ए त्रण तात्त्विक छे के केवल नावज तात्त्विक छे. ?

उत्तर. श्रीआवश्यक सूत्र वृत्तिमां मंगलना अधिकारे श्रीमलयगिरिजी महाराज फरमावे छे के नाम, स्थापना, द्रव्य ए त्रणे नाव मंगलनां अंगरूप होवाथी तात्त्विक छे. तेज वातनी साबीती आपे छे के मंगलिक एवुं सिद्ध महाराजादिकनुं नाम सांनलीने अथवा अरिहंत नगवान्नी प्रतिमानां दर्शन करीने किंवा नूतकालमां साधुत्व पालनार साधुना मृतक शरीरने के नावीकालमां साधुपणुं पालनार बालकना शरीरने जोइने प्राये कोइक निकट मोक्षगामीने सम्यग् दर्शनादिरूप नाव मंगलना परिणाम थाय छे. वास्ते खरुं जोतां ए चारे निक्षेपा यथार्थ छे. तेमां कांइ पण शक नथी.

॥ तथाहि ॥

नामस्थापनाद्रव्याणि तात्त्विकानि भावमंगलांगत्वात् तदंगता च तत् परिणामकारणत्वात् ॥ तथाहि ॥ मंगलाभिधानं सिद्धाद्यभिधानं चोपश्रुत्य भगवदर्हत्प्रतिमां वा दृष्ट्वा भूतयतिभावं भव्ययतिभाव वा शरीरं चोपलभ्योपजायते प्राय· कस्याप्यासन्नमुक्तिगामिनः सम्यग्दर्शनादिरूपभावमंगलपरिणामः ॥ उक्त च ॥ अहवा नामं ठवणा, दवाइं भावमंगलंगाइं ॥ पाएण भावमंगल, परिणामनिमित्तभावातो ॥ १ ॥

प्रश्न १९७ चक्षुओने फायदो अने नुकशान शाथी पहोंचे छे ?

उत्तर चक्षुओने फायदा नुकशाननां

अनेक कारणो छे. ते पैकी आ पण एक छे के कठोर किरणोथी पसार पामता सूर्य सन्मुख चिरकाल पर्यंत जोइ रहे-नारना चक्षुमां हानि पहोंचे छे, अने चंद्रकिरणकलाप तथा कल्लोलमालाथी शोभितुं जल तथा लीलां झाडनी घटाने निहालनारनां नेत्रमां फायदो थाय छे; कारणके सूर्यनां तीक्ष्ण किरणो, चंद्रनां शीतल किरणो, कल्लोलमालाने स्पर्शेला पवन अने वृक्षघटानी छायामां पसार थइ आवेलो ठंडो पवन तेमां निमित्त-भूत थाय छे.

॥ उक्तं च तदेवावश्यकवृत्तौ ॥

जरठकरप्रसरमऽभिसर्प्पयंतमं-शुमालिनं चिरविलोकमानस्य भवति चक्षुषो विघातः । शशांककरनिकरं तरंगमालोपशोभितजलं शाडलतरु-मंडलं वाऽलोकमानस्यानुग्रहः ॥

प्रश्न १९७. केटलाएक परवादीउं शब्दने आकाशनो गुण माने छे ते समीचीन छे के नहीं ?

उत्तर शब्दने आकाशनो गुण मानवो दुरस्त नथी, कारणके तेम मानवाथी शब्दनी अंदर अमूर्त्ततानो प्रसंग आवे छे ए वात सिद्ध छे के जे वस्तुनो जे गुण होय ते वस्तुना समान धर्मवालो होय छे जेमके आत्मा अरूपी छे तो तेनो ज्ञानगुण पण अरुपी छे एवी रीते शब्द पण जो आकाशनो गुण होय तो आकाश अमूर्त होवाथी तेनो गुण जे शब्द ते पण अमूर्त होवो जोइए, परतु तेनु लक्षण इहां लागु न पडवाथी आ वावत सयौक्तिक नथी (मूर्तिविरहोह्यमूर्त्तता) ए अमूर्त्तनुं लक्षण छे; अने शब्दमां तो मूर्तिविरह छे नहीं, कारणके तेनो स्पर्श थाय छे तेज वातनी सावीती आपे छे के स्पर्श-

वाला शब्दो होय छे, केमके पाषाणनी माफक शब्दसंघट्टथी पण उपघात जोवामां आवे छे. आ आपेलो हेतु काइ असिद्ध नथी; कारणके तत्काल जन्मेला बालकोना कान पासे गाढ जोरे वजावेला झल्लरीना झाल्कार अवाजथी तेमना काननुं फुटवुं आपणे जोइ शकीए छीए. आ प्रकारना उपघातनुं करवापणुं स्पर्श विना संभवतुं नथी. जेमके आकाशमां स्पर्श नथी तो ते कोइनो उपघात पण करी शके तेम नथी. ते कारणथी विपक्षमां जवाना असंभवे आ हेतु अनैकान्तिक पण नथी. अतएव शब्दो स्पर्शवाला छे. केमके पथ्थरनी माफक तेमनो आघात थवाथी गिरिगुफादिकमां शब्दो उत्पन्न थाय छे. आ हेतु बन्ने पक्षवाला कबुल राखे छे. ते एवी रीते के तीव्र प्रयत्नथी उच्चारण करेला शब्दना

आघातथी गिरिगुफादिकमां दरेक दि-
शाए फेलाता शब्दोने आपणे सांभलीए
छीए, तेथी ते स्पर्शवाला सिद्ध थाय छे;
अने स्पर्शवाला होवाथी ते मूर्त्तिमान्
पण छे (रूपस्पर्शादिसन्निवेशो मूर्त्ति.)
एवु वचन छे तेथी केवी रीते तेओ श-
ब्दोनु आकाशगुणत्व सिद्ध करे छे ए
अमे समजी शकता नथी अपरंच आ-
काश एक छे के अनेक? जो एक छे तो लाख
योजनथी पण शब्द सम्भलावो जोइए, का-
रणके आकाशमा एकत्व अने शब्दमां त-
द्गुणता होवाथी निकट दूरादि भेदनो अ-
भाव छे जो अनेक आकाश छे एम
मानवामां आवे तो वदनदेशमां रहेलो
ते शब्द बीजी जगाए रहेला श्रोता-
जनो शी रीते सांभली शके ? केमके
मुखस्थानस्थ आकाशना गुणत्ववाला ते
शब्दोनो सांभलनारना कर्णगत आका-

शनी साथे संवंध नथी. वली आक्षेप करवामां आवे ठे के शब्दने आकाशनो गुण मान्या विना तेनी स्थिति थइ शकती नथी अने पदार्थ मात्रने स्थित थवुं ए तो आवश्यक ठे; तेमां रूप रस गंध स्पर्शना आश्रय तो पृथ्वी आदि चार महाभूत ठे, त्यारे शब्दनो आश्रय आकाश ए स्वतः सिद्ध समजाय ठे. आ पण तेउनुं मानवुं अयुक्त ठे. एम मानवाथी तो अलबत पृथ्वी प्रमुखमां पण आकाशना गुणत्वनो प्रसंग आवशे. केमके ते पण आकाशमांज रहे ठे. जो एम कहेवामां आवे के आश्रयण मात्र तेना गुणनुं निवंधन नथी किंतु समवाय ठे, अने ते संबंध तो शब्दनो आकाश साथे ठे पण पृथ्व्यादिकनो समवाय गगन साथे नथी. त्यारे अमे पूठीए ठीए के तमे समवाय

कोने कहो छो ? शुं पृथ्वी प्रमुखनो रू-
पादि साथे जेम संबंध छे तेम आप-
समां एकमेक साथे लोली जावथी र-
हेलुं तेने कहो छो ? जो एम कहो तो
ते बनी शके तेम नथी केमके शब्दनो
आकाशगुण गगन साथे एकमेक लोली
जावथी कोइने पण स्वीकृत नथी वली
एम कहेवामां आवे के शब्द आका-
शमां मालुम पडे छे, तेथी आकाशनो
गुण कहीए छीए वस त्यारे तो आका-
शमांना तूलने पण गगननो गुण कहो,
केमके ते अर्क तूल पण आकाशमां उ-
पलभ्यमान थाय छे तेमां वली एम क-
हेवा मागशो के अर्क तूलादिकनु तो
परमार्थथी भूम्यादि स्थान छे अने आ-
काशमां तो वायुसंचारथी उपलभ्य था-
य छे. जो एम छे त्यारे तो अमे पण
अलबत कही शकीए छीए के शब्दनुं

पण परमार्थथी कर्णादि स्थान छे, बल्के आकाशमां अवस्थिति तो पवननी प्रेरणाना वशथी थाय छे. तेज वातनो पुरावो आपीए छीए के जे जे तरफ़ वायुसंचार थाय छे ते ते तरफ शब्द पण जाय छे; तेथीज आपणे पवनप्रतिकूल दिशामां शब्द सांभली शकता नथी. आ बाबतमां प्रज्ञाकर गुप्ते पण कह्युं छे के आसमानमां आकडानुं तूल पवनथी जेम प्रेरित थाय छे तेम शब्दने माटे पण समजवुं. शुं वायुथी प्रतिकूल चालवानुं शब्दनी बाबतमां कोइ पण शास्त्रज्ञ कहे छे ? नहि नहि. सर्वे पंडितो सानुकूलज कहे छे. तेथी ए सिद्ध थयुं के शब्द आकाशनो गुण नथी; एटलुंज नहीं बल्के ते पुद्‌गलमय छे. इति तात्पर्य्यार्थः ॥ आनी साक्षी तारना संदेशा अने हालना जमानामां नवी शोध प्रमाणे

शब्दोने फोनोग्राफमां उतारवामां आव्या छे ते पण आपे छे.

॥ तदुक्तं आवश्यकवृत्तौ श्रीमन्मलयगिरिपूज्यैः ॥

केचित्पुनः श्रोत्रेंद्रियस्य प्राप्यकारितामप्यभ्युपगच्छंतः शब्दस्यांबरगुणत्वप्रतिपन्नास्तदश्लीलमाकाशगुणतायां शब्दस्याऽमूर्त्तत्वप्रसक्तेः । यो हि यद्गुणः स तत्समानधर्म्मा यथा ज्ञानमात्मनस्तथा ह्यमूर्त्त आत्मा ततस्तद्गुणो ज्ञानमप्यमूर्त्तमेव । एव शब्दोऽपि यद्याकाशगुणस्तर्ह्याकाशस्याऽमूर्त्तत्वात् शब्दस्याऽपि तद्गुणत्वेनाऽमूर्त्तता भवेत् । न चाऽसौ युक्तिसंगता तल्लक्षणायोगात् । मूर्त्तिविरहोह्यमूर्त्तता । न च शब्दाना मू-

त्तिविरहः स्पर्शवत्त्वात् । तथाहि स्पर्श-
वंतः शब्दाः तत्संपर्के उपघातदर्श-
नाल्लोष्ठवत् न चायमसिद्धो हेतुर्यतो
दृश्यते सद्यो जातबालकानां कर्णदे-
शान्त्यर्णगाढास्फालितझल्लरीझात्का-
रश्रवणात् श्रवणास्फोटो न चेत्थमु-
पघातकृतत्वमस्पर्शवत्त्वे संभवति य-
था विहायसस्ततो विपक्षे गमनासं-
भवान्नानैकान्तिकोऽपि अतश्चस्पर्शवं-
तः शब्दास्तैरभिघाते गिरिगह्वरभि-
त्यादिषु शब्दोत्थानात् लोष्टुवत् अ-
यमपि हेतुरुभयोरपि सिद्धस्तथाहि
श्रूयंते तीव्रप्रयत्नोच्चारितशब्दाऽभि-
घाते गिरिगह्वरादिषु प्रतिशब्दाः प्र-
तिदिक् ततः स्पर्शवत्त्वान्मूर्त्ता एव ।
रूपस्पर्शादिसन्निवेशो मूर्त्तिरितिवच-

नात् ततः कथमिवाकाशगुणत्वं शब्दानामुपपत्तिमत्। अपि च। तदाकाशमेकमनेकं वा यद्येकं तर्हि योजनलक्षादपि श्रूयेत आकाशस्यैकत्वेन शब्दस्य तद्गुणतया दूरासन्नादिभेदाभावात् अथानेकमेव सति वदनदेश एव विद्यत इति कथ भिन्नदेशवर्त्तिभिः श्रोतृभिः श्रूयते। वदनदेशाकाशगुणतया तस्य श्रोतृगतश्रोत्रेंद्रियाकाशसंबधाभावात्। अथ श्रोत्रेंद्रियाकाशसंबद्धतया तच्छ्रवणमभ्युपगम्यते तन्न श्रेयानाकाशगुणत्वाभ्युपगमः। नन्वाकाशगुणत्वमतरेण शब्दस्यावस्थानमेव नोपपद्यते। अवश्यं हि पदार्थेन स्थितिमता भवितव्य। तत्र [illegible]रसगंधानां पृथिव्यादिमहा-

भूतचतुष्टयमाश्रयः शब्दस्य त्वाकाशमिति । तदयुक्तमेवं सति पृथिव्यादीनामप्याकाशाश्रितत्वेनाकाशगुणत्वप्रसक्तेः । अथ नाश्रयणमात्रं तद्गुणत्वनिबंधनं किंतु समवायः स चास्ति शब्दस्याकाशे न तु पृथिव्यादीनामिति । ननु कोऽयं समवायो नाम एकलोलीभावेनावस्थानं यथा पृथिव्यादिरूपाद्योरिति चेत् न तर्हि शब्दस्याकाशगुणत्वमाकाशेन सह तस्यैकलोलीभावेनाप्रतिपत्तेः अथाकाशे उपलभ्यमानत्वात् तद्गुणता शब्दस्य तर्हि तूलकादेरप्याकाशे उपलभ्यमानत्वात् तद्गुणतां प्राप्नोति । अथ तूलकादेः परमार्थतः पृथिव्यादिस्थानमाकाशे तूपलंभो वायुना

संचार्यमाणत्वात् । यद्येव तर्हि शब्दस्याऽपि परमार्थत. स्थानं श्रोत्रादि यत्पुनराकाशेऽवस्थान तद्वायुना संचार्यमाणत्वात् । तथाहि यतो यतो वायुः संचरति ततस्ततः शब्दोऽपि गच्छति । वातप्रतिकूल शब्दस्याऽश्रवणात् ॥ उक्त च प्रज्ञाकरगुप्तेन ॥ यथा च प्रेर्यते तूलमाकाशे मातरिश्वना ॥ तथा शब्दोऽपि किं वायोः प्रतीप कोऽपि शब्दवित् ॥ १ ॥ तन्नाकाशगुणः शब्दः किंतु पुद्गलमय इति ॥

प्रश्न १७७ गुरुलघु अने अगुरुलघु ते शु ?

उत्तर जैन शासनमां मुख्यत्वे बे नय छे एक व्यवहार अने बीजो नि-

१ वायुना

श्रय. तेमां व्यवहारनय वस्तुने चार प्रकारे वदे छे. ते एवी रीते के गुरु, लघु, गुरुलघु अने अगुरुलघु. ए चार प्रकार पैकी जे द्रव्य उंचुं के आडुंअवळुं फेंक्युं होय तोपण पाछुं स्वाभाविक रीते नीचे पडे ते गुरु द्रव्य कहेवाय छे. जेमके पथ्थर आदि. १.

जे द्रव्य कुदरती रीते ऊर्ध्वगमन स्वभाववाळुं होय ते लघु गणाय छे. जेमके दीपशिखादि. २.

जे ऊर्ध्व अधोगति स्वभाववाळुं न होइ तिर्य्यग्गमन धर्मने धारण करनार होय ते गुरुलघु द्रव्य जाणवुं. जेम पवन. ३.

तेमज जे उंची नीची के तिर्छी गति मांहेला एक पण स्वभाववाळुं न होय अथवा सर्वत्र गमन करे ते अगुरुलघु द्रव्य छे. जेमके आकाश तथा परमाणु प्रमुख. ४.

निश्चय नय एवुं कहे ठे के कोइ पण वस्तु एकांते सर्वथा जारे नथी, कारणके पाषाणादिक जारे वस्तुनुं पण प्रयोगथी ऊर्ध्वादि गमन देखाय ठे एकांते सर्वथा हलकी चीज पण कोइ नथी केमके अत्यत लघु एवा वायु आदिकनु पण करताफ्नादिकथी अधोगमनादि देखाय ठे तेथी गुरुलघु अने अगुरुलघु एवा बेज प्रकारे वस्तु ठे तेमां जे पृथ्वी पर्वतादि बादर पदार्थ ठे ते सर्व गुरुलघु ठे, ते सिवाय जाषा, श्वासोच्छ्वास अने मनोवर्गणादिक तथा परमाणु द्व्यणुक अने आकाशादिक ए सर्व अगुरुलघु ठे

॥ प्रोक्तं च पूर्वोक्तावश्यकवृत्तौ ॥

इह द्वौ नयौ व्यवहारनयो निश्चयनयश्च । तत्र व्यवहारनयः प्राह चतुर्धा द्रव्यं । तद्यथा ॥ किंचिद्गुरु

किंचिल्लघु । किंचिद्गुरुलघु किंचिदगुरुलघु तत्र यदूर्ध्वं तिर्यग्वा प्रक्षिप्तमपि पुनर्निसर्गादधो निपतति द्रव्यं तद्गुरु यथा लोष्ठादि । यत्तु द्रव्यं निसर्गत एवोर्ध्वगतिस्वभावं तल्लघु यथा दीपकलिकादि । यत्पुनर्नोर्ध्वगतिस्वभावं नाप्यधोगतिस्वभावं किंतु स्वभावेनैव तिर्यग्गतिधर्मकं तद्गुरुलघु यथा वायुः । यत्तूर्ध्वाऽधस्तिर्यग्गतिस्वभावानामेकतरस्वभावमपि न भवति सर्वत्र वा गच्छति तदऽगुरुलघु यथा व्योमपरमाण्वादि । निश्चयनयः पुनरेवमाह । न सर्वगुर्वेकांतेन किमपि वस्त्वस्ति गुरोरपि लोष्ठादेः प्रयोगादूर्ध्वादिगमनदर्शनात् । नाप्येकांतेन सर्वलघ्वप्यस्ति । अतिलघो-

रपि वाय्वादेः करताडनादिना अधोगमनादिदर्शनात् तस्माद्द्विविधमेव वस्तु तद्यथा ॥ गुरुलघु अगुरुलघु च। तत्र यद्बादरं भूभूधरादिकं तत्सर्वं गुरुलघु शेषं तु भाषाप्राणापानमनोवर्गणादिकं परमाणुद्व्यणुकव्योमादिकं च सर्वमगुरुलघु ॥ उक्तं च निच्चयतो सव्वगुरु सव्वलहुं वा न विज्जए दव्वं ॥

वायरमिह गुरुलघुयं, अगुरुलहुं सेसयं दव्वं ॥ १ ॥ तत्रेयं गाथा निश्चयनयमतेन ॥

प्रश्न २०० मनःपर्य्यवज्ञानी घटपटादि पदार्थने देखे के नहीं ?

उत्तर मनःपर्यवज्ञानवान् यद्यपि मनोद्रव्य सूक्ष्म छे तोपण देखी शके

शिष्योऽपि यो गुरोरनुपयोगसंभवान्
दोषानऽवधूय गुणानेव केवलानाऽऽद-
त्ते स हंससमानः स च एकांतेन योग्यः

प्रश्न २०३. हंस जलमां मळी गएला दुधने पण शी रीते जुदुं करी शके छे के जेथी फक्त दुधनेज पीए छे ने पाणीने पीतो नथी.

उत्तर. हंसनी जीभमां खटाशनी ह-याती होवाथी दुधना कूचा थइ जुदा पडे छे. तेथी ते केवल क्षीरपान पण करी शके छे.

॥ तदुक्तं नंदीसूत्रपर्यायवृत्तौ ॥

ननु हंसः क्षीरमुदकमिश्रितमऽपि कथं विभक्ती करोति येन क्षीरमेव केवलमापिबति न तूदकमित्युच्यते। तज्जिव्हायामऽम्लत्वेन क्षीरस्य कूर्चिकीभूय पृथग् भवनात् ॥

॥ उक्तंच ॥

अंवतणेण जीहाए
कूचिया होइ खीरमुदयंमि ॥
हंसो मोतूणजलं
आपिवयइ पयं तह सुसीसो ॥ १ ॥

प्रश्न २०४ साधुओ अतिचार दोषनी विशुद्धि माटे हमेश दिवस अने रात्रिना अवसानमां प्रतिक्रमण करे छे छतां पख्खि चोमासी अने संवछरी प्रतिक्रमण शामाटे करता हशे ?

उत्तर जेम कोइ माणस तेल आमला अने जलादिकथी शरीरनो संस्कार करी नाह्यो होय तोपण धूप विलेपन अने भूषण वस्त्रादिवडे उत्तरकरण करे छे एवी रीते साधुओ पण दिवसना प्रतिक्रमणथी विशुद्ध चारित्रवंत होय छे, तथापि पख्खि प्रमुख विशेष प्रतिक्रमणथी उत्तरकरण करे छे. वली जेम घरने प्रतिदिन

साफ करवामां आवे छे, तोपण पक्ष संधीमां विशेष प्रकारे साफसुफ कराय छे. तेवी रीते इहां पण पक्खि चोमासी अने संवछरी प्रतिक्रमणनी बाबतमां समजवुं. आ प्रमाणे पाक्षिसूत्रनी बृहद्वृत्तिमां श्रीयशोदेवसूरि महाराज लखे छे.

॥ तद्यथा ॥

यथा कश्चित्पुरुषस्तैलामलकजलादिभिः कृतशरीरसंस्कारोपि धूपनविलेपनभूषणवस्त्रादिभिरुत्तरकरणं विधत्ते एवं साधवोऽपि दिनप्रतिक्रमणेन विशुद्धचरणा अपि पाक्षिकादिषु विशेषप्रतिक्रमणेनोत्तरकरणं कुर्वंति शुद्धिविशेषं कुर्वंत इत्यर्थः। किंच। जह गेहं पइदिवसं सोहियं तहवि पक्खसंधीसु सोहिज्जइ सविसेसं एवं इह इंपि नायव्वं ॥

प्रश्न २०५ तिथि अने वारना सं-
योगे सिद्धियोग केवी रीते थाय छे ?

उत्तर शुक्रवारे पडवो, छठ अने अ-
गीयारस होय तो सिद्धियोग थाय छे
बुधवारे बीज, बारस अने सातम होय
तो सिद्धियोग थाय छे मंगलवारे
त्रीज, तेरस अने आठम होय तो सिद्धि-
योग थाय छे शनिवारे चोथ, चौदश
अने नोम होय तो सिद्धियोग थाय छे
गुरुवारे पांचम, दशम अने पूनम होय तो
सिद्धियोग थाय छे

॥ तथाहि ॥

शुक्रे नदा बुधे भद्रा, जया च
क्षितिनंदने। शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा।
सिद्धियोगाः प्रकीर्त्तिताः ॥ १ ॥

॥ इति तपगच्छगगनांगणदिनमणि-
श्रीविजयानंदसूरीश्वरशिष्यपंक्ति-
तश्रीलक्ष्मीविजयजिच्छिष्यहंस-
विजयविरचिता प्रश्नोत्तरपु-
ष्पमाला संपूर्णा लिखिता
च प्रथमपन्न्यासश्रीसंप-
त्विजयगणिना संवत्०
१९६३ माघशुक्ल-
दशम्याम् ॥

प्रमादाद्वा मतेर्मांद्यात्,
प्रोक्तमुत्सूत्रमत्र यत् ॥
तन्मिथ्यादुष्कृतं मेऽस्तु,
शोधनीयं च धीधनैः ॥ १ ॥



शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६९	१	विलोक्य	विलोकय
७४	१२	वरसचि	वररुचि
१६८	१७	धा–	धान्याना वि–
२०६	४	प्रमाणे –	प्रमाणे–
२३७	१३	जिणशुद्धि	जिणङ्क्षि
२३९	१९	चित्राद्यलकारा लकारा	चित्राद्यलकारा
२४३	१	व्यवस्थापिका	व्यवस्थापिका
२४३	१६	पाची	ऽपाची
२६४	१७	दालत थी	दोलतथी
२७०	५	सूरीश्वर	सूरीश्वर
२७४	५	परण	परेण
२७६	५	यथा	यथा ॥ २ ॥
२८१	२	जा–	जो–
२८६	३	सविजा	सविजो
२८६	१०	डडीरवत्	डिंडिरवत्
२८७	१७	ज्ष्णत्वना	ज्ष्णत्वनो
२९१	१५	ञतरया	ञतराय
२९७	१७	स्मृति	स्मृति
३०२	१८	वाऽलोक	वाआलोक
३१९	४	जग्र–	जग्र–
३२२	१७	ऽपि	यपि
३२४	६	प्रथम	प्रथम
